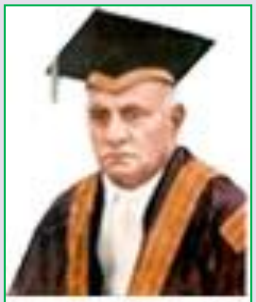
Dr. Harisingh Gour

न्यूजलेटर

सितम्बर 2024

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

संरक्षक

प्रो. नीलिमा गुप्ता

कुलपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर

विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सहयोग एवं परामर्श

डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय

कुलसचिव (प्र.)

संपादक

डॉ. विवेक जायसवाल

जनसंपर्क अधिकारी (प्र.)

संपादक सदस्य

डॉ. हेमंत पाटीदार

डॉ. आशुतोष

डॉ. शालिनी चोइथरानी

डॉ. संजय शर्मा

माधव चंद्रा

सामाजिक विज्ञान में अर्थशास्त्र विषय का विशिष्ट स्थान- कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉ हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर के अर्थशास्त्र विभाग के स्थापना दिवस के अवसर पर अभिमंच सभागार में व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन

किया गया. "विद्यार्थी अर्थशास्त्र विषय को कैसे जानें" विषय पर आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि सामाजिक विज्ञान संकायों में अर्थशास्त्र विषय अपने आप में अनूठा है और अपनी विशिष्ट पहचान रखता है. इसकी प्रकृति विज्ञान के काफी समीप है. इसलिए डॉ. गौर साहेब ने हमारे विश्वविद्यालय में भी अर्थशास्त्र विभाग की स्थापना की. अर्थशास्त्र विभाग के विद्यार्थी देश विदेश मैं बड़े बड़े पदों को सुशोभित कर विश्वविद्यालय का नाम रौशन कर रहे है. मैं चाहती हूं कि वर्तमान एवं भविष्य के विद्यार्थी भी अधिक से अधिक मेहनत कर अर्थशास्त्र विषय को लेकर सफलताओं को प्राप्त करे. इस विषय के विधार्थी और शिक्षक दोनों ही मेहनती और अनुशासन प्रिय होते है. हम देश भर में अर्थशास्त्र विभाग को नई पहचान दिलाने का प्रयास करेंगे. मुख्य अतिथि के रूप में रानी अवंतीबाई लोधी विश्वविद्यालय सागर, की कुलसचिव प्रो. शक्ति जैन ने कहा कि बच्चों को अर्थशास्त्र की शब्दावली शुरू मैं कठिन लग सकती हैं लेकिन उसे मन लगा कर ठीक से समझने की आवश्यकता है. जब विषय की शब्दावली को ठीक से समझ जाएंगे तो आपको यह विषय पढ़ने में बहुत ही सरल और वैज्ञानिक प्रतीत होगा. इसलिए विद्यार्थियों को विषय की तकनीकी को समझाने पर विशेष जोर देना चाहिए. विशेष अथिति प्रो. अंजना चतुर्वेदी द्वारा छात्र जीवन से संबंधित अनेक प्रोत्साहन देने वाले रोचक प्रसंग सुनाते हुए डॉ. गौर साहब के योगदान को याद किया. विद्यार्थियों को संदेश दिया कि आप अपनी पढ़ाई के साथ-साथ अपने जीवन को भी जीने का प्रयास करें. क्योंकि समय सीमित है और यह वापस नहीं लौटता है. विद्यार्थी जीवन में अपना लक्ष्य बनाएं और उसके प्रति हमेशा सजक रहे और तब तक चलते रहें जब तक वह आपको हासिल नहीं हो जाता. कार्यक्रम का स्वागत भाषण अर्थशास्त्र विभाग के विभाग अध्यक्ष प्रो. प्रकाश

शंकर कामले द्वारा दिया गया. कार्यक्रम की विषय वस्तु पर डॉ.केशव टेकाम ने प्रकाश डाला. कार्यक्रम का संचालन डॉ. वीणा थावरे एवं कार्यक्रम का आभार प्रदर्शन डॉ वीरेंद्र मटसेनिया ने किया. कार्यक्रम में अर्थशास्त्र विभाग के शोधार्थियों एवं स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों सहित विश्वविद्यालय के अन्य विषयों के विद्यार्थियों ने बढ़-चलकर हिस्सा लिया.

विद्यार्थियों में निहित क्षमता और ऊर्जा को उचित दिशा एवं गति देने के लिये सार्थक मंच भी जरूरी- प्रो. दिवाकर राजपूत

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग में प्रेरणा सत्र आयोजन किया गया. जिसमें एम.ए प्रथम वर्ष, एम.एस.डब्ल्यू प्रथम वर्ष एवं पीएचडी कोर्स वर्क वाले विद्यार्थियों का स्वागत किया गया तथा एम.ए,

एम.एस.डब्ल्यू चतुर्थ सेमेस्टर का विदाई समारोह का भी आयोजन हुआ. कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना एवं डॉक्टर हरीसिंह गौर के चित्र पर माल्यार्पण करके शुभारंभ किया गया. सरस्वती वंदना अंजना पटेल, स्वाति सिंह, रोहिणी साहू ने प्रस्तुत की. कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर दिवाकर सिंह राजपूत ने कार्यक्रम 'प्रेरणा सत्र' में कहा कि "विद्यार्थियों में निहित क्षमता और ऊर्जा को उचित दिशा एवं गति देने के लिये सार्थक मंच भी जरूरी होते हैं. इसलिए उनकी प्रतिभा को पर्याप्त सम्मान और समय देना शैक्षणिक संस्थानों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी हो जाती है." उन्होंने कहा कि प्रेरणा सत्र जैसे कार्यक्रम विद्यार्थियों के समुचित विकास के लिये महत्वपूर्ण एवं जरुरी होते हैं. उनकी प्रतिभा को निखारने के लिए उचित समय पर सार्थक मंच देना चाहिए. इससे उनको सही दिशा एवं उचित गति के साथ सफलता मिलती है. डॉ. राजपूत ने विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के इतिहास एवं उपलब्धियां के बारे में छात्र-छात्राओं को अवगत कराया. इस अवसर पर एम.ए प्रथम सेमेस्टर के छात्रों द्वारा बुंदेली गीत की प्रस्तुति दी गई. एमएसडब्ल्यू प्रथम सेमेस्टर और

एमएसडब्ल्यू तृतीय सेमेस्टर के छात्रों ने केरल के परंपरागत संस्कृति गीत के साथ प्रस्तुति दी. कुछ छात्रों ने प्रस्तुतियां दी जिसमें अनामिका चौधरी ने नारी सशक्तिकरण पर वर्तमान परिपेक्ष में विचार रखें. शुभम गिरी द्वारा शिव स्तुति एवं रेखा काकोडिया द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया. इस कार्यक्रम का संचालन मानसी और रोहित के द्वारा किया गया. कार्यक्रम का समापन कर धन्यवाद ज्ञापन दिया गया साथ ही सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

इस अवसर पर कार्यक्रम में समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग के विभाग अध्यक्ष एवं मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, प्रो. काली नाथ झा, असिस्टेंट प्रोफेसर नंदी पाटोदिया के साथ शोधार्थी अमरमणि, अनुराधा, प्रिया, नेहा, पूनम, दीक्षा, अजय, सौरभ, शाहरुख, अर्पित और शोधार्थी पूजा फेमिना वसुंधरा, सोनाली, यामिनी, राकेश, लकी और एम ए, एमएसडब्ल्यू से रोहित, मानसी, मनीष, शुभम, चंद्रकांत, अतुल, शिवेश, मालविका, युसूफ, रुद्र प्रताप, गरिमा, संस्कार, मेगा, साक्षी, रोहित, आर्य आदि ने कार्यक्रम में सहभागिता की. इस अवसर पर विभाग में पौधारोपण भी किया गया.

पत्रकारिता विभाग में डॉ. अंबेडकर मेमोरियल लेक्चर का हुआ आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में पत्रकारिता विभाग एवं डॉ.अम्बेडकर चेयर द्वारा डॉ.अंबेडकर मेमोरियल लेक्चर का आयोजन पत्रकारिता विभाग के संगोष्ठी कक्ष में डॉ. बी.आर. अंबेडकर सामाजिक न्याय और पत्रकारिता विषय में आयोजित की गई. उक्त अवसर पर डॉ. भीमराव अंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण डॉ. संजय शर्मा एवं डॉ. देवेंद्र कुमार विश्वकर्मा द्वारा किया गया. डॉ. बी. आर. अंबेडकर मेमोरियल लेक्चर को संबोधित करते हुए प्रोढ़ शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. संजय शर्मा ने कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर ने समाज में बढ़ती दूरियों को कम करने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया. उन्होंने शिक्षा के माध्यम से समाज के अंतिम व्यक्ति को उठाने एवं गरीब कल्याण के लिए विशेष कार्य किया जिससे कि एक आम व्यक्ति भी शिक्षा के महत्व को समझ सकें. उन्होंने शिक्षा के माध्यम से हर व्यक्ति को सामाजिक न्याय मिल सकें इसके लिए कार्य किया. मेमोरियल लेक्चर को संबोधित करते हुए डॉ. देवेंद्र कुमार विश्वकर्मा ने कहा कि पत्रकारिता के माध्यम से समाज सुधार और सामाजिक न्याय दिलाने के लिए डॉ. भीमराव अंबेडकर की महत्वपूर्ण भूमिका रही है. उन्होंने 29 वर्ष की आयु में लेखन के माध्यम से समाज में शिक्षा और सामाजिक न्याय दिलाने हेतु कार्य किया. डॉ. अंबेडकर को अपने विचार जनता तक पहुंचाने के लिए कई पत्रिका निकालनी पड़ी जिसमें मूकनायक 1920, बहिष्कृत भारत 1924, संमता 1928 आदि प्रमुख है. डॉ. अंबेडकर ने संपादन लेखन और सलाहकार के तौर पर भी कार्य करने के साथ इन प्रकाशनों का मार्गदर्शन भी किया. डॉ. अम्बेडकर लेखन एवं संपादन के माध्यम से शिक्षा एवं सामाजिक न्याय सामाजिक समरसता आदि के महत्व को आम जनता तक पहुंचाना चाहते थे. आज भी हम देखते हैं कि सामाजिक न्याय के लिए पत्रकारिता महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है. डॉ अंबेडकर मेमोरियल लेक्चर को संबोधित करते हुए पत्रकारिता विभाग के डॉ. अलीम अहमद खान ने कहा कि अगर आदमी की सोच सामाजिक हो जाए तो वह गांधी, अंबेडकर और डॉक्टर गौर बन सकता है जो अपने लिए जीते है उसे बहुत कम लोग याद करते हैं परंतु जो समाज के लिए जीते है उनको पूरा समाज याद करता है. भारत में ज्ञान और योग्यता से व्यक्ति महान बनता है इसलिए हम सबको महापुरुषों के बारे में पढ़ना

चाहिए. कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी छात्रा अनुष्का शर्मा ने एवं आभार प्रदर्शन सलोनी शर्मा द्वारा किया गया. कार्यक्रम में पत्रकारिता विभाग के शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहें.

महिला क्लब में ईको फ्रेंडली मूर्ति निर्माण कार्यशाला आयोजित

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के महिला समाज द्वारा एक महत्वपूर्ण पहल की गई. महिला समाज ने मिलकर एक कार्यशाला का आयोजन किया. जिसमे ईको फ्रेंडली गणेश जी की मूर्ति निर्माण करना सिखाया गया. यह कार्यशाला रविवार

को महिला समाज भवन में आयोजित किया गया. मूर्ति निर्माण का प्रशिक्षण श्री अजय जॉन ने द्वारा दिया गया. कार्यशाला में 20 से अधिक महिलाओं एवं विद्यार्थियों ने मूर्ति निर्माण में भाग लिया. महिला समाज की अध्यक्षा ओमीका सिंह ने कहा कि अक्सर ऐसा देखा जाता है कि गणेशोत्सव में बनी मूर्तियां ईको फ्रेंडली नही होती हैं. यदि आप ईको फ्रेंडली गणेश प्रतिमा बाजार से लेना चाहें तो आसानी से उपलब्ध नहीं होती. पूजन के पश्चात इन मूर्तियों का विसर्जन अपने घर के गमलों में किया जा सकता है. इस कार्यशाला में अधिक से अधिक विद्यार्थियों को जोड़ने का प्रयास किया ताकि अगली पीढ़ी में भी जागरूकता बढ़े. कार्यशाला में श्रीमती अनुराधा उपाध्याय, श्रीमती कल्पना शर्मा और श्रीमती अंजली भागवत ने विशेष भूमिका निभाई.

चुनौतीपूर्ण समय में शिक्षकों को अपनी भूमिका का विस्तार करना होगा- कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता

अध्यापक के धर्म, कर्म और मर्म को भारत ने ही विश्व में स्थापित किया है- प्रो. जानी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में शिक्षक दिवस पर्व 5 सितंबर के अवसर पर विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में

'अध्यापक: धर्म, कर्म एवं मर्म' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी थे. कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. इस अवसर पर निदेशक फैकल्टी अफेयर्स प्रो. अजीत जायसवाल भी मंचासीन थे. कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन, देवी सरस्वती, डॉ. हरीसिंह गौर एवं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी मूर्ति पर

माल्यार्पण कर किया गया. संस्कृत विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. किरण आर्या ने स्वस्तिवाचन किया. स्वागत भाषण प्रो. अजीत जायसवाल ने दिया. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन पर केंद्रित वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया.

पूर्व कुलाधिपति प्रो. जानी ने कहा कि भारतीय ज्ञान व्यवस्था में शिक्षकों की भूमिका और स्थान वैदिक काल से ही रही है. शिक्षक दिवस के अवसर पर आज यह देखने की आवश्यकता है कि भारतीय ज्ञान के प्रसार में शिक्षक की क्या भूमिका है. पूरे विश्व में शिक्षक की संकल्पना केवल भारत में ही रही है. एक तरफ जहाँ पूरा विश्व औपनिवेशीकरण की ओर अग्रसर वहीं भारत वि-औपनिवेशीकरण के रास्ते पर है और वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना को साकार कर रहा है. वैदिक काल से ही ज्ञान का आदान-प्रदान होता आ रहा है. हर एक क्षेत्र में गुरु ही मार्गदर्शन देता रहा है. सबसे प्राचीन दान विद्यादान ही माना गया है, इससे यह प्रमाणित होता है कि अध्यापक के धर्म, कर्म और मर्म को भारत ने ही विश्व में स्थापित किया है. उन्होंने धर्मपाल द्वारा लिखित पुस्तक 'द ब्यूटीफुल ट्री' का उल्लेख करते हुए भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि अध्यापक का मतलब केवल पाठ्यक्रम का अध्यापन करना ही नहीं है बल्कि विद्यार्थी के बारे में संवेदनशील होकर विचार करना भी है. उसे भारतीयता के बोध के साथ राष्ट्र की सेवा के लिए तैयार करना भी है. यही शिक्षक का धर्म है. आज विश्व के प्रत्येक कोने में भारतीय मूल के अध्यापक हैं.

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पहले चाक और डस्टर से ही शिक्षक पहचाना जाता था लेकिन आज समय बदल गया है. आज का शिक्षक लैपटॉप, कम्प्यूटर एवं शिक्षा के लिए जरूरी अन्य तकनीकी उपकरणों से लैस है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के बाद शिक्षा को नए तरीके से परिभाषित किया गया है जिसमें स्किल इन्हैन्स्मेंट, वैल्यू एजुकेशन, एबिलिटी इन्हैन्स्मेंट जैसे पाठ्यक्रमों को शामिल किया गया है. एक समय था जब कोरोना काल में शिक्षकों ने अपनी भूमिका का निर्वहन करते हुए अध्यापन कार्य को जारी रखा. आज मल्टीस्किल्ड और मल्टी डायमेंशनल शिक्षकों की आवश्यकता है. आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के जमाने में शिक्षकों की भूमिका कम नहीं आंकना

चाहिए क्योंकि तकनीक मनुष्य की संवेदना को नहीं समझ सकती. इसलिए एक विद्यार्थी और शिक्षक के बीच के संबंध किसी कृत्रिम तरीके से नहीं समझा जा सकता और न ही कोई संवेदना पैदा की जा सकती है. इस चुनौतीपूर्ण समय में शिक्षकों को अपनी भूमिका का विस्तार करना होगा. लक्ष्य 2047 तक नए भारत के निर्माण में अपनी भूमिका निभानी होगी. तभी हम विश्वगुरु की संकल्पना को सिद्ध कर सकते हैं. शिक्षकों की गुणवत्ता और संख्या दोनों ही मायने रखती है अतःइसमें बढ़ोत्तरी की आवश्यकता है.

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की सेवा से निवृत्त प्राध्यापकों प्रो. गिरीश मोहन दुबे (अर्थशास्त्र विभाग), डॉ. ललित मोहन (ललित कला एव प्रदर्शनकारी कला विभाग), प्रो. संजय कुमार जैन (फार्मास्युटिकल साइंस विभाग), तथा प्रो. एस. एच. आदिल (व्यावहारिक भू-गर्भ शास्त्र विभाग) को शाल, श्रीफल एवं अभिनंदन-पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया. शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. रजनीश ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया. प्रो. अनिल कुमार जैन ने शिक्षा एवं शिक्षक पर केन्द्रित स्वरचित कविता का पाठ किया.

कार्यक्रम के अंत में भारतीय सांकेतिक भाषा में राष्ट्रगान हुआ. कार्यक्रम का संचालन डॉ. वंदना राजोरिया एवं आभार डॉ. राकेश सोनी ने किया. कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे.

ढांचागत विकास, उत्कृष्ट शोध एवं नवाचार से बनेगी उच्च शिक्षा संस्थानों की पहचान - प्रो. नीलिमा गुप्ता

यूजीसी द्वारा संस्थागत विकास योजना पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में कुलपति ने दिया उद्बोधन

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा आयोजित उच्च शिक्षा के लिए संस्थागत विकास योजना पर आधारित कार्यशाला का आयोजन इनसा ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में किया गया. कार्यशाला में शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान, भारत

सरकार, शिक्षा मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग के सचिव श्री के. संजय मूर्ति और यूजीसी के अध्यक्ष प्रो. एम. जगदीश कुमार ने उद्घाटन सत्र को संबोधित किया. कार्यशाला में में देश भर के 250 से अधिक विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों के प्रमुख उपस्थित रहे. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने एक सत्र को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय विकास योजना के बारे में पावर पॉइंट की प्रस्तुति दी जिसमें उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा संस्था विकास हेतु बेस्ट प्रेक्टिसेस का उल्लेख किया. उन्होंने कहा कि सांस्थानिक कार्यपद्धति और अकादमिक नवाचार से उच्च शिक्षण संस्थान विकास कर सकेंगे. ढांचागत विकास, उत्कृष्ट शोध एवं नवाचार से ही उच्च शिक्षा संस्थानों की पहचान बनेगी.

विश्वविद्यालय विकास योजना प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि हमारा विश्वविद्यालय हरियाली से समृद्ध है और डॉ. गौर जैसे दानवीर एवं शिक्षाविद द्वारा स्थापित है जो मध्यप्रदेश का सबसे पुराना एवं बड़ा विश्वविद्यालय है. यह देश का पांचवां सबसे

बड़ा परिसर है. उन्होंने अनुसंधान, वित्तीय, डिजिटल, अकादमिक, भौतिक, मानव संसाधन, प्रबंधन, नेटवर्किंग और सहयोग जैसे आयामों के क्षेत्र में विश्वविद्यालय द्वारा अपनाई जा नीतियों एवं क्रियान्वयन पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि विश्व का सबसे पहला योग विभाग हमारे विश्वविद्यालय में है और फार्मेसी, एप्लाइड जियोलॉजी, क्रिमनोलॉजी, लॉ, प्रदर्शनकारी कला जैसे ख्यातिलब्ध विभाग, जिसके छात्र अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं, के साथ पांच उत्कृष्ट संग्रहालय, बॉटनिकल गार्डन अवस्थित हैं. विवि ने 5 दिवसीय चरित्र निर्माण कार्यशाला, प्रथम महिला संसद जैसे बड़े आयोजन किये. विवि में दो शिक्षक राष्ट्रपति पुरस्कार से समानित हो चुके हैं और कुलपति सहित विवि के कई शिक्षकों के नाम विश्व के श्रेष्ठ दो प्रतिशत वैज्ञानिकों में शामिल हैं. विश्वविद्यालय के एक छात्र को कौन बनेगा करोडपति में भी उपलब्धि हासिल हुई है.

उन्होंने विवि की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नियामक संस्थाओं की मान्यता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि विवि में भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत अनेकों परियोजनाएं स्वीकृत और संचालित हैं. विश्वविद्यालय में भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के तहत एक भारत श्रेष्ठ भारत, आज़ादी का अमृत महोत्सव, स्वच्छ भारत मिशन, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, उन्नत भारत अभिवन, हर घर तिरंगा, विश्व पुस्तक दिवस, राष्ट्रीय दिवसों पर आधारित कार्यक्रमों का लगातार आयोजन किया जा रहा है. नशा मुक्त भारत अभियान, राष्ट्रीय कोविड टीकाकरण मिशन, एनीमिया मुक्त भारत अभियान, मिलेट्स के प्रति जागरूकता और उपयोग जैसे पहल को क्रियान्वित करते हुए सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम भी किये जा रहे हैं. फिट इंडिया मूवमेंट, खेलो इंडिया, स्टार्टअप इंडिया जैसे नवाचार को लागू करते हुए गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं.

विवि अनुदान आयोग के निर्देशानुसार एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट, उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान, मिश्रित शिक्षण, प्रोफ़ेसर ऑफ़ प्रैक्टिस एवं अन्य नवाचारी पद्धतियों को अपनाया गया है. विवि में कई केंद्र जैसे सामाजिक विज्ञान के लिए शिक्षण शिक्षण केंद्र (टीएलसीएसएस), मानव संसाधन विकास केंद्र (एचआरडीसी), उन्नत अनुसंधान केंद्र, शैक्षिक मल्टीमीडिया अनुसंधान केंद्र (ईएमआरसी), जनसंख्या अनुसंधान केंद्र, स्वदेशी ज्ञान पर अध्ययन केंद्र, कॉलेज ऑफ़ पैरामेडिकल साइंसेज, वैदिक अध्ययन केंद्र, इंडो-कैनेडियन सेंटर, पांडुलिपि संसाधन केंद्र, डॉ. अम्बेडकर उत्कृष्टता केंद्र (डीएसीई), डे केयर सेंटर, राजभाषा प्रकोष्ठ, आरटीआई सेल, आईटी सेल, एससी/एसटी/ओबीसी सेल, प्लेसमेंट सेल, स्टार्टअप सेल संचालित हैं.

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने भुगतान और उससे सम्बंधित तकनीकी प्रणालियों को प्रभावी ढंग से कार्यान्वित किया जा रहा है. वित्त सृजन के लिए अतिरिक्त आउटरीच मॉडल, बजट आवंटन, हितधारक सहभागिता, पारदर्शिता, सहयोग, वित्तीय स्थिरता, निवेश रणनीति जैसे नवाचारी पद्धतियों को लागू किया गया है. विश्वविद्यालय में उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर), विभागीय अनुसंधान प्रयोगशालाएँ, पशु गृह, ग्रीन हाउस, संग्रहालय, मीडिया प्रयोगशाला, स्टूडियो, बिजनेस लैब, अनुसंधान/सांख्यिकीय डेटाबेस, मूट कोर्ट, रंगमंच, आर्ट गैलरी, वानस्पतिक/औषधीय उद्यान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा यूजीसी-एसएपी, सीएएस, डीएसटी-एफआईएसटी, डीबीटी, आईसीएसएसआर और अन्य मान्यताओं वाले विभाग समृद्ध और क्रियाशील हैं.

एनईपी पर आधारित पाठ्यक्रम, योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम, कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम लागू किये गये हैं जो सफलतापूर्वक संचालिते किये जा रहे हैं. वर्तमान में अधोसंरचना के स्तर पर तेजी से कार्य चल रहा है. नवीन भवनों, कन्वेंशन सेंटर, नए छात्रावास जैसी सुविधाओं के साथ जर्मनी, स्पेन, ताइवान, नेपाल जैसे देशों के साथ एकेडमिक समझौते और साझा अध्ययन-अध्यापन विकसित किये जाने की योजना पर कार्य चल रहा है. शोध एवं अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय सहयोगात्मक प्लेटफ़ॉर्म विकसित कर शोध को नई दिशा प्रदान की जायेगी. गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिए नवीन लैब स्थापित किया जा रहा है. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर से विवि में प्रवेश हो सके इसके लिए भी प्रयास किये जा रहे हैं. आगामी दिनों में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग के मानकों के अनुरूप विश्वविद्यालय कार्य करते हुए उच्च रैंकिंग हासिल करेगा.

कार्यशाला में देश के कई विश्वविद्यालयों के कुलपति, अधिकारी, शिक्षक प्रतिनिधि और उच्च शिक्षा से जुड़े शिक्षाविद् मौजूद रहे.

शारीरिक शिक्षा विभाग में मनाया गया शिक्षक दिवस

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के शारीरिक शिक्षा विभाग में बीपीईएस के छात्र/छात्राओं द्वारा शिक्षक दिवस मनाया गया. इस अवसर विभाग के सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों द्वारा डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के चित्र पर पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किए. इसके पश्चात विद्यार्थियों ने शारीरिक शिक्षा विभाग के सभी शिक्षकों को तिलक लगाकर, पुष्पगुच्छ एवं श्रीफल प्रदान कर उनका सम्मान आभार जताया. कु. मुस्कान जड़िया, विशाखा तनवर, उन्नती सेन, मेघा, आदेश साहू, मृदुल यादव, उदय शंकर, नरेंद्र गौड़ एवं अमन मिश्रा ने डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला और अपने गुरुजन एवं विभाग का धन्यवाद ज्ञापित किया. तत्पश्चात डॉ सुमन पटेल, महेंद्र कुमार, विनय शुक्ला, अनवर ख़ान, मनोज जैन ने सभी छात्र/छात्राओं को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित कर विद्यार्थियों को सदमार्ग पर चलने की प्रेरणा दी. कार्यक्रम का संचालन समीर तिवारी एवं आभार प्रदर्शन मुस्कान जड़िया ने किया.

जनमानस के आत्मविश्वास का परिचायक है साक्षरता - प्रो. नीलिमा गुप्ता

पारस्परिक समझ और शांति के लिए कार्य करे साक्षरता – प्रो. राजेश

भारत शिक्षा से नहीं बल्कि विद्या से बनेगा विश्वगुरु : राजेन्द्र सिंह

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के जीवनपर्यंत शिक्षा विभाग द्वारा अपने 40वें स्थापना दिवस एवं 58वें अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के सुअवसर पर ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं विश्वविद्यालय की माननीया कुलगुरु एवं कर्नल प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में भारत ने साक्षरता की ओर अपना ध्यान केंद्रित किया है. जिसके परिणाम स्वरूप देश की साक्षरता दर में सुधार भी हुआ है. किंतु इसके बावजूद भी ग्रामीण शहरी, महिला पुरुष आदि

आधारों पर एक बहुत बड़ा अन्तराल मौजूद है। जिसे हमें समझने की जरूरत है. हमें यह देखना होगा कि एक ओर जहां हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ आगे बढ़ रहे हैं, हम तकनीकी विकास एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे कई बड़े मुद्दों पर बात कर रहे हैं, लेकिन वहीं दूसरी तरफ हमारे देश में वह वर्ग भी मौजूद है जो अशिक्षित है. प्रो. गुप्ता ने बताया कि साक्षरता हमारी भाषा के साथ प्रत्यक्ष एवं गहन रूप से जुड़ी हुई है. पारस्परिक समझ तभी विकसित हो सकती है, जब परस्पर संवाद एवं संचार होता है. इसलिए हमें साक्षरता के विमर्श को भाषा के विमर्श के साथ जोड़कर ही देखना और समझना होगा. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के सीनियर प्रोफेसर और सतत शिक्षा विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. राजेश कुमार ने पारस्परिक समझ और शांति के लिए कार्य करे साक्षरता विषय पर व्याख्यान देते हुए बताया कि जब हम इक्कीसवी सदी में गैर-साक्षर की बात करते हैं तो इससे हमारा आशय किसी व्यक्ति में पढ़ने, लिखने और संख्यात्मक संक्रियाएं करने की क्षमता के अभाव से नहीं है. आज गैर-साक्षर होने का तात्पर्य अधिगम, वि-अधिगम एवं पुनःअधिगम न करने वाले व्यक्ति से है. साक्षरता की यह संकल्पना भाषा के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है. प्राचीन भारतीय परंपरा में साक्षरता, भाषा और परस्पर समझ एवं शांति के अंतर्संबंधों को स्पष्ट तौर पर वर्णित किया गया है। इस संदर्भ में उन्होंने बताया कि 1948 से संयुक्त राष्ट्र के महाधिकार पत्र द्वारा शांति एवं वर्ष 2015 से सतत विकास लक्ष्य 16 में शांतिपूर्ण एवं समावेशी समाज के प्रोत्साहन एवं लक्ष्य 4 के तहत गुणवत्तापूर्ण एवं आजीवन शिक्षा की बात दुनिया ने करना शुरू किया है. इस सभी बिंदुओं पर हमारी भारतीय ज्ञान एवं दर्शन परंपरा में प्रारंभ से ही विमर्श विद्यमान थे. शांति कोई एकाकी अवधारणा नहीं है बल्कि यह व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनैतिक, संस्थागत और पारिस्थितिक तंत्रीय इन सभी आयामों से सरोकार रखती हैं. इसकी स्थापना शिक्षा के लिए शिक्षा के चार स्तंभ यानी कि जानने के लिए सीखना, करने के लिए सीखना, साथ रहने के लिए सीखना और मनुष्य बनने के लिए सीखना बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. पाओलो फ्रेरे भी इस बात पर बल देते हैं कि शिक्षा का मकसद व्यक्ति को चुप्पी की संस्कृति से बाहर निकाल कर एक आलोचनात्मक, संवादात्मक एवं सहभागितामूलक दृष्टिकोण की ओर ले जाना है.

कार्यक्रम में सहभागिता कर रहे प्रसिद्ध पर्यावरणविद एवं रमन मैग्सेस अवार्ड से सम्मानित जलपुरुष श्री राजेन्द्र सिंह जी अपने व्याख्यान में बताया कि काल दर काल साक्षरता की परिभाषा और संकल्पना बदलती रही है. उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने इक्कीसबी शताब्दी में साक्षरता की एक नवीन परिभाषा गढ़ी है, जिसमें वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, जीवन कौशल और विवेचनातमक चिंतन शामिल है. इसमें शिक्षक की बहुत बड़ी भूमिका हैं क्योंकि कोई भी व्यक्ति निरक्षर नहीं होता बल्कि यह हमारी सीमा है कि एक शिक्षक, एक निर्देशक के नाते हम उन्हें अपना यह साक्षरता का फ्रेम / प्रतिमान नहीं समझा पाए. उन्होंने कहा कि वर्तमान में आधुनुक विकास के बरक्श भारतीय विकास का मॉडल लागू करने की आवश्यकता

है. भारत विद्या का देश है, विद्या के आधार पर ही हम विश्वगुरु बन सकेंगे. उन्होंने अपने व्याख्यान में जल, जल और जमीन को बचाने वाली साक्षरता की बात कही. कार्यक्रम में विषय प्रवर्तन विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर अनिल कुमार जैन द्वारा किया गया. उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षानीति का मुख्य उद्देश्य शिक्षा और साक्षरता के माध्यम से ज्ञान-आर्थिकी तंत्र का निर्माण करना है. सामाजिक न्याय, समानता और शांति के लिए यह साक्षर भारत का निर्माण आवश्यक है. कार्यक्रम का संचालन डॉ संजय शर्मा ने किया तथा औपचारिक आभार ज्ञापन डॉ चिट्टीबाबू द्वारा किया गया। कार्यक्रम में देश भर से कई शिक्षक, शोधार्थी और अभ्यासकर्ता सहभागिता कर रहे थे.

दर्शनशास्त्र विभाग में शिक्षक दिवस मनाया गया

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वशविद्यालय सागर में शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर दर्शनशास्त्र विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा के द्वारा भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं दर्शनशास्त्र के ख्यातिविद् शिक्षक रहे डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के

चित्र पर उनके जन्म दिन के अवसर पर तिलक लगाकर एवं माल्यार्पण कर, पुष्पांलजलि देकर उनके प्रति प्रेम आदर एवं सम्मान भाव प्रकट किया. इस अवसर पर विभाग में उपस्थित शिक्षकों, शोधार्थियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष एवं कर्मचारियों के द्वारा भी दर्शनशास्त्र विभाग में डॉ. राधाकृष्णन के चित्र पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की गई. उसके बाद दर्शनशास्त्र विभाग के वरिष्ट आचार्य प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा का विभाग के अतिथि शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने तिलक, माल्यार्पण एवं श्रीफल भेंट कर उनके प्रति आदर एवं सम्मान व्यक्त किया.

बेहतर कल के लिए ऊर्जा के प्राकृतिक स्रोतों का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग आवश्यक, इसके लिए नवाचारी एवं उन्नत शोध की दिशा में काम करना होगा- प्रो. अशोक पाण्डेय

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के अपराध शास्त्र और फोरेंसिक विज्ञान विभाग एवं वाणिज्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान

में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस का शुभारंभ विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में हुआ. ‘एनवायरमेंटल सस्टेनिबिलिटी, ग्रीन टेक्नोलॉजी, इनोवेशन एंड स्टार्ट-अप वेंचर्स ऑन एंड बियांड अर्थ’ विषय पर आयोजित इस कांफ्रेंस में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. बेनोइट शॉफ़्स, यूनिवर्सिटी ऑफ़ ले मैंस, फ्रांस, सारस्वत अतिथि वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. पी. आर. अग्रवाल तथा

सेंटर फॉर एनर्जी एंड एनवायरमेंटल सस्टेनेबिलिटी के कार्यकारी निदेशक प्रो. अशोक पांडे उपस्थित रहे. उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति प्रो. वाय. एस. ठाकुर ने की. इस अवसर पर वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. जे. के. जैन, प्रो. ममता पटेल, डॉ. हरीश एवं कांफ्रेस संयोजक मंचासीन थे.

मुख्य वक्ता प्रो. अशोक पांडेय ने कहा कि आज पर्यावरण की चुनौती से पूरा विश्व जूझ रहा है. एक बेहतर भविष्य के लिए जरूरी है कि हम जलवायु, पर्यावरण, एनर्जी जैसे विषयों पर शोध आधारित समाधान खोजें. भारत जलवायु विभिन्नता और

जैव विविधता वाला देश है. विविधता में एकता भारत की पहचान है. हमें 'थिंक ग्लोबली एंड वर्क लोकली' प्रविधि पर काम करने की आवश्यकता है. वाटर, सोलर और विंड एनर्जी का बुद्धिमत्तापूर्ण दोहन और इसका इस्तेमाल वैज्ञानिक और उन्नत शोध के बिना संभव नहीं है. इस दिशा में बहुत से रिसर्च हो रहे हैं लेकिन हमें एक मूल्यवान निष्कर्ष के साथ अपने कल को सुरक्षित रखने की दिशा में काम करना है. अपशिष्ट प्रबंधन, जल और वायु से संबंधित जितने भी नवाचारी रास्ते हम शोध के माध्यम से खोजेंगे हमारा अस्तित्व उतना ही मजबूत होगा. उन्होंने पर्यावरणीय सततता के महत्व पर जोर दिया और बायोफ्यूल और एथेनॉल मिश्रण ईंधन के विकास पर गहन चर्चा की आपने बताया कि कैसे इन वैकल्पिक इंधनों के उपयोग से प्रदूषण को कम किया जा सकता है और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार को बढ़ाया जा सकता है जिससे नए स्टार्टअप्स को बढ़ावा मिलेगा.

फ्रांस से पधारे प्रो बेनेट शॉफ्स ने कहा कि इस कान्फ्रेंस के उद्देश्य बहुत व्यापक हैं और यहां होने वाले विचार-विमर्श पूरी दुनिया के अस्तित्व को बचाये और बनाये रखने की चुनौतियों का सामना करने का मार्ग प्रशस्त करेंगे. उन्होंने कांफ्रेंस के सभी प्रायोजकों का धन्यवाद देते हुए कहा कि यह सुखद है कि एक समकालीन और प्रासंगिक विषय पर चर्चा हेतु देश-विदेश के उत्कृष्ट शोध संस्थान एक साथ एक मंच पर इकट्ठा हुए हैं. उन्होंने पर्यावरणीय स्थिरता में नवाचार के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि जलवायु परिवर्तन के गंभीर परिणाम को ध्यान में रखते हुए हमें हरित प्रद्योगिकी एवं नवाचार को

बढ़ावा देना चाहिए और बताया कि यह सिर्फ पृथ्वी तक सीमित न होकर अंतरिक्ष में भी हमारे भविष्य के लिए हरित समाधान आवश्यक होंगे. प्रोफेसर पी. आर. अग्रवाल, पूर्व कुलपति, पूर्वांचल विश्वविद्यालय ने अपने ज्ञान व अनुभवों के आधार पर प्रतिभागियों को बायो फ्यूल से जुड़े नवीनतम वैश्विक रुझानों, चुनौतियां एवं संभावनाओं से अवगत कराया.

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रभारी कुलपति प्रो. वाय. एस. ठाकुर ने कहा कि इस कांफ्रेंस में होने वाली चर्चाओं में निश्चित तौर पर स्टार्टअप्स को वास्तविकता में बदलने में आने वाली चुनौतियों का समाधान करने में मदद मिलेगी. कई बार नीतियों के

बावजूद, व्यावहारिक कार्यान्वयन नहीं हो पाता. लेकिन मुझे विश्वास है कि यह कांफ्रेंस इस मायने में महत्त्वपूर्ण है कि यह एक नया मार्ग दिखाएगा. आज स्टार्टअप्स के लिए अधिक सरकारी समर्थन और सहायता की आवश्यकता है। स्थायी व्यावसायिक पहलों की सफलता सुनिश्चित करने के लिए, नीति और व्यवहार के बीच के अंतर को दूर करना आवश्यक है.

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में प्रोफेसर जे. के. जैन द्वारा संपादित पुस्तक "सस्टेनेबल अकाउंटिंग एंड फाइनेंस" का विमोचन किया गया. इस पुस्तक का विषय आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण संतुलन बनाए रखने पर केंद्रित हैं.

कांफ्रेंस की संयोजक डॉ. वंदना विनायक और डॉ. रुपाली सैनी ने बताया कि दो दिवसीय इस आयोजन में प्रदूषण बायोकेमिकल ड्राइव, जैव विविधता संरक्षण दूषित जल प्रबंधन, ग्रीन एनर्जी बायो रिसोर्स तकनीक एवं इसके स्टार्ट-अप एवं नवाचार पर चर्चा होगी. यह कांफ्रेंस हाइब्रिड मोड में संचालित हो रही है जिसमें अमेरिका, फ्रांस, कनाडा, बेल्जियम, आई आई टी मद्रास, आई. आई. टी. खड़गपुर, आई. आई. टी. बॉम्बे सहित देश भर के विश्वविद्यालयों एवं उत्कृष्ट शोध संस्थानों के विद्वान विभिन्न तकनीकी सत्रों में व्याख्यान देंगे.

कार्यक्रम में देश-विदेश से कई प्रतिभागी ऑनलाइन और ऑफलाइन पद्धति से जुड़े रहे। इस दौरान विश्वविद्यालय के डॉ. सी पी उपाध्याय, डॉ. दीपक गुप्ता, डॉ. विवेक मेहता, डॉ. पुष्पल घोष, विभिन्न विज्ञान विषयों के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे.

नव प्रवेशित विद्यार्थियों ने समागम उत्सव में दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा नवप्रवेशित विद्यार्थियों हेतु 'विद्यार्थी समागम उत्सव' का आयोजन विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती सभागार में हुआ. विभाग द्वारा संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों में नव-प्रवेशित एवं

अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य परस्पर संवाद को बढ़ावा देने, विभाग की अकादमिक एवं भौतिक अधो-संरचना से परिचित कराने हेतु आयोजित कार्यक्रम में अतिथि के रूप में निदेशक, संकाय मामले प्रो. अजीत जायसवाल ने कहा कि विद्यार्थियों की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में उन्मुख करने और उन्हें नवाचारी बनाने हेतु इस प्रकार के कार्यक्रम पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए. कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रभारी कुलपति प्रो. वाई.एस. ठाकुर ने विद्यार्थियों की बहुमुखी प्रतिभा एवं सांस्कृतिक धर्मिता की प्रशंसा की और कहा कि समन्वित समाज के निर्माण में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है.

इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा प्रेमचंद द्वारा लिखित "बोध" नाटक, डॉ आनंदी जोशी की आत्मकथा पर नाटक, शास्त्रीय एवं समूह नृत्य, एकल नृत्य, भजन, स्वरचित कविता पाठ एवं राष्ट्रभक्ति आधरित प्रस्तुतियां की गयी. कार्यक्रम के अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल जैन ने विद्यार्थियों द्वारा निर्देशित, संचालित एवं आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा की इस प्रकार के कार्यक्रम विद्यार्थियों में सकरात्मक नेतृत्त्व क्षमता एवं उनके चहुमुखी विकास हेतु आवश्यक है. कार्यक्रम का आयोजन शिक्षा विभाग के छात्रों अनुराग चौरसिया, समीक्षा नेमा, सिखा साहू, राहुल दुबे, कार्तिक शर्मा, मानसी तिवारी,

अंजलि सिंह और आदर्श शुक्ला शामिल एवं समस्त विद्यार्थियों द्वारा किया गया. इस अवसर पर सांस्कृतिक परिषद् के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी, जनसंपर्क अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल एवं शिक्षा विभाग के समस्त संकाय सदस्य एवं कर्मचारी उपस्थित रहे.

रोजगार के लिए स्टार्टअप्स के माध्यम से नए युग में प्रवेश - प्रो पी आर अग्रवाल

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के अपराध शास्त्र और फोरेंसिक विज्ञान विभाग एवं वाणिज्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'पर्यावरणीय स्थिरता, हरित प्रौद्योगिकी, नवाचार एवं स्टार्ट-अप वेंचर्स: पृथ्वी पर और उससे परे' विषय पर चल

रहे दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया. सम्मेलन के सत्र विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार और कौटिल्य भवन में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनो माध्यम में एकसाथ आयोजित किया गया। तकनीकी सत्र में प्रमुख वक्ताओं के रूप में ए.एस.बी.एन. विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.के. बाल और प्रो. पी.आर. अग्रवाल (पूर्व कुलपति, पूर्वांचल विश्वविद्यालय) उपस्थित रहे.

मुख्य वक्ता प्रो. आर. के. बल ने अपने विचार 'स्टार्ट-अप वेंचर्स: नवाचार और स्थिरता' पर रखते हुए कहा कि स्टार्ट-अप्स को नवाचार और स्थिरता के सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए ताकि दीर्घकालिक विकास हो सके. भारतीय स्टार्ट-अप्स के

सामने आने वाली चुनौतियों और अवसरों का उल्लेख करते हुए बताया कि स्टार्टअप्स के फेल होने का एक प्रमुख कारण यह है की ये अल्पकालिक समाधानों पर विचार करते है जिससे उन्हें अनेक चुनौतियो जैसे फंडिंग की कमी, स्केलेबिलिटी, और बाजार में प्रतिस्पर्धा आदि का सामना करना पड़ता है. आपने टेस्ला, पेटीएम, और बायजुस का जिक्र करते हुए बताया कि कैसे टेस्ला ने इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग में स्थिरता को बढ़ावा दिया और कार्बन उत्सर्जन कम करने के अवसरों का लाभ उठाया. भारत में, पेटीएम ने डिजिटल पेमेंट्स के क्षेत्र में नवाचार करते हुए वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया, जबकि BYJU'S ने शिक्षा को डिजिटल माध्यम से सुलभ बना कर अवसर पैदा किए.

प्रो. बल ने जोर दिया कि आज के स्टार्ट-अप्स को पर्यावरणीय स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करना होगा. नवाचार न केवल आर्थिक लाभ के लिए, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के लिए भी जरूरी है. उन्होंने कहा कि 2047 तक भारत को 15 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए स्टार्ट-अप्स को अपनी भूमिका निभानी होगी.

प्रो. पी.आर. अग्रवाल ने 'स्टार्ट-अप वेंचर्स: स्थिरता प्रबंधन' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए. आपने भारतीय अर्थव्यवस्था को दो युगों में विभाजित किया—1947 से 1991 और 1992 से वर्तमान तक—और बताया कि इन दोनों कालखंडों में आर्थिक नीतियों, बाजार उदारीकरण और स्थिरता के प्रयासों में किस प्रकार बदलाव आया है. उन्होंने यह भी कहा कि भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए स्टार्ट-अप्स को स्थायी और पर्यावरणीय रूप से अनुकूल रास्तों पर चलना होगा.

प्रो. अग्रवाल ने बायोफ्यूल, एथेनॉल मिश्रण ईंधन और अपशिष्ट प्रबंधन जैसे नवीनतम शोध क्षेत्रों पर जोर दिया, जो न केवल प्रदूषण कम करने में सहायक होंगे, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी प्रदान करेंगे. उन्होंने इस बात पर भी जोर

दिया कि स्टार्ट-अप्स को बढ़ावा देने के लिए जलवायु से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक शोध अत्यंत महत्वपूर्ण हैं. इसके बाद सम्मेलन के समापन सत्र का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. वेनवा स्कुफ (फ्रांस) विशेष अतिथि प्रो. चंदा बेन (प्रॉक्टर, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर), प्रो. पी. आर. अग्रवाल उपस्थित रहे. प्रो. बेन ने सम्मेलन की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए कहा कि इस प्रकार के इंटर डिसिप्लिनरी कार्यक्रम छात्रों एवं शोधार्थियों में शिक्षा की नई चेतना विकसित करेगे और सामूहिक शोध को प्रोत्साहित करेगे जिससे समाज एवं पर्यावरण को लाभ होगा. कार्यक्रम संचालक वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रो. जे. के. जैन ने सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया एवं कार्यक्रम की अभूतपूर्व सफलता के लिए सभी को बधाई दिया.

यह कार्यक्रम हाइब्रिड मोड में संचालित हो रहा है जिसमें देश-विदेश से आए प्रमुख शिक्षाविदो ने अपना व्याख्यान एवं शोध पत्र प्रस्तुत किया जिसमें अमेरिका, फ्रांस, कनाडा, बेल्जियम, आईआईटी मद्रास, आईआईटी बॉम्बे, आदि प्रमुख रहे. यह संपूर्ण कार्यक्रम माननीय कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता के संरक्षण में तथा प्रोफेसर जे. के. जैन व प्रो ममता पटेल के निर्देशन, डॉ वंदना विनायक के संयोजन व डॉ रूपाली सैनी के सहसंयोजक में संपन्न हुआ.

हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत काव्य गोष्ठी सम्पन्न

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा माननीया प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलगुरू की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से हिन्दी पखवाड़ा- 2024 के अंतर्गत भारतीय भाषा प्रकोष्ठ एवं हिंदी क्लब के सौजन्य से आयोजित 'स्व-रचित रचनापाठ' कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ. स्व-रचित रचना पाठ कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. महेन्द्र आर्या, सहायक प्राध्यापक की कविता 'चालीस पार' से हुआ. डॉ. अनूपी समैया, सहायक प्राध्यापक ने कविता के माध्यम से विद्यार्थियों की मनोदशा का बखूबी चित्रण किया. डॉ. रामहेत गौतम, सहायक प्राध्यापक ने अपनी कविता 'सत्यम नाम है मेरा' में एक बच्चे की पढ़ने की इच्छा को शब्द दिए. विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. सर हरीसिंह गौर के प्रति अपनी कृतज्ञता

व्यक्त करते हुए ‘गॉड फादर ऑफ सागर’ एवं ‘भए डॉक्टर गौर दानी’ कविताओं की मनमोहक प्रस्तुति दी. शोधार्थी हिंमाशु तिवारी ने ‘ज़िंदगी आस करें भी तो क्या करें’ ग़ज़ल को तरन्नुम में गाकर कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए. कार्यक्रम में डॉ.

विवेक जायसवाल, सहायक प्राध्यापक और डॉ. राकेश सोनी, सहायक प्राध्यापक ने क्रमशः ‘संशय’ और ‘भौंरा’ कविता का पाठ किया. डॉ. उदय श्रीवास्तव, अनुभाग अधिकारी की कविता ’समाधान’ को श्रोताओं ने खूब सराहा. डॉ. हिमांशु यादव, सहायक प्राध्यापक की कविता ‘बेटी और साइकिल’ भी खूब सराही गयी. कार्यक्रम में श्री प्रबल पाण्डेय, श्री शशांक सौरभ, श्री अम्बुज श्रीवास्तव, श्री अनुराग यादव, श्री दीपेन्द्र लोधी, श्री सिद्धांत शर्मा, श्री हरीश द्विवेदी, श्री राघवेन्द्र् सिंह लोधी, श्री बालमुकुंद अहिरवार आदि विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं कर्मचारियों ने अपनी मौलिक रचनाएं प्रस्तुत कीं. प्रभारी हिन्दी अधिकारी एवं हिन्दी पखवाड़ा के संयोजक श्री संतोष सोहगौरा की ‘इंतजार है’ कविता ने श्रोताओं की खूब वाहवाही

बटोरी. विशेष आकर्षण प्रो. नवीन कानगो द्वारा प्रस्तुत ग़ज़ल ‘कहकशां हूं मैं’ रही. आभार ज्ञापन कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. संजीव सर्राफ, उपपुस्तकालयाध्यंक्ष ने किया. संचालन राजभाषा प्रकोष्ठ के अभिषेक सक्सेना ने किया. विशेष सहयोग श्री विनोद रजक एवं पुस्तकालय के सूचना विज्ञानी श्री दयानप्पा कोरी का रहा. इस अवसर पर श्रोता के रूप में डॉ. संजय नाईनवाड, डॉ. हेमंत रावत, सलोनी शर्मा सहित भारी संख्या में विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे.

हिन्दी पखवाड़ा के संयोजक श्री संतोष सोहगौरा ने बताया कि इसी क्रम में कल विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए ‘भारत की भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधता’ विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन ललित एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग में किया जा रहा है, जिसमें विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए जायेंगे.

विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग में मनाया "नो एब्यूज डे" विद्यार्थियों ने भरे वैचारिक स्वच्छता सर्वे फॉर्म

डॉ हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर के फार्मेसी विभाग में विश्वविद्यालय आंतरिक परिवाद समिति, एसोसिएशन ऑफ़ फार्मास्यूटिकल टीचर्स ऑफ़ इंडिया महिला विंग तथा वी क्लब सागर गोल्ड के संयुक्त तत्वाधान में कार्यस्थल पर महिला

यौन उत्पीड़न तथा “वैचारिक स्वच्छता अभियान" मां बहन बेटी की गलियां बंद होना चाहिए, पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। आंतरिक परिवाद समिति की प्रिसाइडिंग ऑफीसर एवं डीन "स्कूल ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी" प्रो.अस्मिता गजभिए ने विद्यार्थियों के बीच "कार्य स्थल पर महिला यौन उत्पीड़न अधिनियम 2013" पर विस्तार से चर्चा की। विश्वविद्यालय आंतरिक परिवाद समिति की सदस्य एवं वैचारिक स्वच्छता अभियान की संस्थापक डॉ वंदना गुप्ता ने 17 सितंबर "नो एब्यूज डे" जनजागृति संकल्प दिवस पर विद्यार्थियों को जीवन में कभी भी “माँ बहन बेटी की गालियाँ” न देने की शपथ दिलाई साथ ही इस जन जागृति को सोशल मीडिया द्वारा चेन रिएक्शन की भांति आगे बढ़ाने का विद्यार्थियों से आग्रह किया। इस अवसर पर फार्मेसी विभाग से प्रोफेसर डॉ वंदना सोनी तथा डॉ धर्मेन्द्र जैन उपस्थित थे। वी क्लब सागर गोल्ड से अध्यक्ष पूजा केसरवानी, रीजनल कोआर्डिनेटर रुक्मणी सहित सदस्य प्रीति व जागृति उपस्थित थीं। संचालन रिसर्च स्कॉलर अर्पना पुरोहित एवं अनामिका जैन ने किया।

हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत लघुकथा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में साहित्य परिषद, हिन्दी विभाग के द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाड़ा महोत्सव 2024 के तहत द्वितीय प्रतियोगिता लघुकथा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. जिसमें विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने प्रतिभागियों के रूप में हिस्सा लिया. इस प्रतियोगिता के निर्णायक हिन्दी विभाग के प्रो. राजेन्द्र यादव, डॉ. संजय नैनवाड एवं संस्कृत विभाग के डॉ. रामहेत गौतम थे. इस दौरान प्रतियोगिता का संचालन हिन्दी की शोधार्थी शुभांगी ओखदे एवं समन्वय

शोधार्थी नेहा दुबे ने किया. हिंदी के शोधार्थियों- दुर्गेश कुमार सराठे, संजय कुमार श्यामले, संतोष कुमार, धर्मेंद्र शुक्ला, सूर्यकांत प्रजापति, सुरेन्द्र तिवारी, अंकित भारद्वाज और प्रतिभा इत्यादि ने उल्लेखनीय सहयोग कर प्रतियोगिता को सफल

बनाया. हिंदी के शिक्षकों में डॉ. अफरोज बेगम और डॉ. अरविंद कुमार ने अपने मार्गदर्शन और सहयोग से कार्यक्रम को गरिमापूर्ण दिशा दी. सम्पूर्ण कार्यक्रम के संयोजक हिन्दी विभाग के डॉ. हिमांशु कुमार ने प्रतियोगिता सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए.

विश्वविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत चित्रकला प्रतियोगिता सम्पन्न

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा माननीया प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलगुरू की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से हिन्दी पखवाड़ा-2024 के अंतर्गत 'भारत की भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधता' विषय पर विश्वविद्यालय के

विद्यार्थियों हेतु आयोजित 'चित्रकला प्रतियोगिता' सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा उकेरे गए चित्रों का अवलोकन करते हुए कार्यक्रम के संयोजक संतोष सोहगौरा, संयुक्त कुलसचिव एवं हिन्दी अधिकारी (प्र.) ने कहा कि चित्रकला मनोभावों को उकेरने का सशक्त माध्यम है। किसी भी चित्रकार द्वारा बनाए गए चित्र सिर्फ कला के प्रति उसके हुनर का प्रदर्शन ही नहीं करते हैं बल्कि उसके चित्र रंगों के माध्यम से समाज के यथार्थ को भी अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं.

आयोजित प्रतियोगिता की समन्वयक डॉ. सुप्रभा दास, सहायक प्राध्यापक, ललित एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग ने बताया कि चित्रकला को करियर के रूप में अपनाकर न केवल अपने मनोभावों को व्यक्त किया जा सकता है बल्कि यश-कीर्ति एवं धन भी अर्जित किया जा सकता है। इस प्रतियोगिता में आरोही देसाई, संजना, अर्चिता सिंह, पुष्पराज सिंह, वैभव, मोनालिसा, भावना, सुगंधि, नीलम, अनीसा, आयुष सिंह, शिवानी, अमित कुमार ब्यौहार, गार्गी, अतुल एवं शैलेन्द्र सिंह सहित विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के लगभग चालीस विद्यार्थियों ने उल्लास पूर्वक कैनवास में चित्र उकेरकर अपनी

रचनात्मक उपस्थिति दर्ज करायी. प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को 25 सितम्बर को माननीया कुलगुरू महोदया द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए जायेंगे। इस अवसर पर राजभाषा प्रकोष्ठ से अभिषेक सक्सेना एवं विनोद रजक तथा ललित कला विभाग के शोधार्थी शालू सोनी, किरन ठाकुर, नेहा गुप्ता एवं सहयोगी के रूप में अमित भदोरिया, प्रदीप सिंह एवं मनोज विश्वकर्मा भी उपस्थित रहे.

राजभाषा पखवाड़ा के संयोजक संतोष सोहगौरा, संयुक्त कुलसचिव एवं हिन्दी अधिकारी (प्र.) ने बताया कि विश्वविद्यालय में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन 14 से 25 सितम्बर, 2024 तक किया जा रहा है जिसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं. उन्होंने बताया कि आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में कल विश्वविद्यालय परिसर स्थित केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 04 के विद्यार्थियों हेतु 'स्वाभिमान एवं गर्व की भाषा है हिन्दी' विषय पर हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है.

मानव जाति का विकास शोध के विकास पर निर्भर करता है- प्रो. जी. सोरल

डॉक्टर हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के वाणिज्य विभाग एवं आई. सी. एस. एस. आर. नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 12 दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आज शुभारंभ हुआ. कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. जी सोरल, पूर्व अध्यक्ष भारतीय लेखांकन परिषद रहे. सम्मानित अतिथियों के रूप में प्रो. जे. के. जैन, कार्यक्रम निदेशक, प्रो. वाई. एस. ठाकुर, डीन, वाणिज्य एवं प्रबंधन स्कूल, प्रो. आर. टी. बैदरे, निर्देशक मालवीय मिशन शिक्षक शिक्षण संस्थान, प्रो. एम. एस. पाहवा तथा डॉ रुपाली सैनी, कार्यक्रम सह निर्देशिका उपस्थित रहे.

प्रो. सोरल ने कहा कि शोध समाज के विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम है. यह न केवल ज्ञान के नए दरवाजे खोलता है, बल्कि हमें समस्याओं के नये समाधान खोजने के लिए भी प्रेरित करता है. शोध का सही चयन और निष्पादन भविष्य की चुनौतियों से निपटने में सहायक हो सकता

है. उन्होंने प्रतिभागियों को गुणवत्तापूर्ण और प्रासंगिक शोध विषयों के चयन पर भी जोर दिया क्योंकि यह किसी भी शोध कार्य की नींव होता है तथा मानव जाति का विकास शोध के विकास पर निर्भर करता है. प्रो. जैन ने शोध की नवीनतम प्रवृतियों और उनके व्यवहारिक अनुप्रयोग पर चर्चा की. आपने प्रतिभागियों को उच्च गुणवत्ता वाले शोध की ओर प्रेरित किया और शोध के विभिन्न आयामों के बारे में विस्तार से चर्चा की. प्रो. पाहवा ने शोधकर्ताओं के समक्ष आने वाली चुनौतियों और उन पर काबू पाने के उपायों पर ध्यान केंद्रित किया और कहा कि शोध के क्षेत्र में नवाचार और रचनात्मकता का होना आवश्यक है ताकि नई सोच और दृष्टिकोण समाज के कल्याण में अपना योगदान दे सकें. गुरुवार के दिन विषय पर चार सत्रों का आयोजन किया गया जिनमें शोध के विभिन्न प्रकार, इसके महत्व, सैंपलिंग व इसके प्रकार पर विस्तार से चर्चा की गई जिसके मुख्य वक्ता प्रो. जी सोरल रहे.

इस 12 दिवसीय कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को शोध के क्षेत्र में प्रशिक्षित करना और उन्हें नई शोध पद्धतियों से अवगत कराना है. कार्यक्रम के दौरान शोध से जुड़े विभिन्न विषयों जैसे शोध प्रश्नों का निर्माण, डाटा संग्रहण तकनीकी और शोध परिणामों के विश्लेषण पर विभिन्न सत्र आयोजित किए जाएंगे.

कार्यक्रम की सह-संयोजिका डॉ रूपाली सैनी ने सभी मुख्य अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए बताया कि इस आयोजन में देश के सात राज्यों से कुल 30 प्रतिभागी शामिल हुए हैं जिनके लिए देश के कई शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं को आमंत्रित किया गया है जो अपनी विशेषज्ञता एवं अनुभव से प्रतिभागियों का मार्गदर्शन करेंगे.

हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत विश्वविद्यालय के केन्द्रीय विद्यालय क्र.04 में हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता सम्पन्न

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा माननीया प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलगुरू की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से हिन्दी पखवाड़ा- 2024 के अंतर्गत 'स्वाभिमान एवं गर्व की भाषा है हिन्दी' विषय पर विश्वविद्यालय स्थित केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-04 के विद्यार्थियों हेतु आयोजित 'हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता' सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई. इस अवसर पर विद्यार्थियों की सुंदर लिखावट एवं विषयवस्तु का अवलोकन करते हुए कार्यक्रम के संयोजक संतोष सोहगौरा, संयुक्त कुलसचिव

एवं हिन्दी अधिकारी (प्र.) ने कहा कि लिखावट व्यक्तित्व को परिलक्षित करती है. मोबाइल एवं तकनीकी के इस समय में भी कागज-कलम का ऐसा सुंदर प्रयोग हमें आश्वस्त करता है कि हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं का भविष्य उज्ज्वल है.

प्रतियोगिता के समन्वयक एवं केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक- 04 के प्राचार्य श्री आर.एस. वर्मा ने बताया कि हमारे नौनिहाल भविष्य के भारत की नींव हैं उनमें अपनी भाषा एवं संस्कृति के प्रति गौरव का भाव विकसित करने का उत्तरदायित्व हमारा है जिसके लिए हम निरंतर प्रयासरत हैं। प्रतियोगिता आयोजन में सहयोग प्रदान कर रहे विद्यालय के हिन्दी शिक्षक श्री योगेन्द्र कुमार ने बताया कि प्रतियोगिता में दसवी कक्षा तक के विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की है. यह संख्या मातृभाषा के प्रति उनके प्रेम को प्रकट करती है। प्रतियोगिता में प्रतिभागी के रूप में कार्तिक चौरसिया, तन्वी सूर्यवंशी, आदित्य गौतम, वेदिका दुबे, रिशांक रजक, आदित्य पटेल, तनिश नंदनवार, आर्यन विश्वकर्मा, ध्रुव यादव, रचित श्रीवास्तव एवं निहारिका सहित 50 विद्यार्थियों ने भाग किया। प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को 25 सितम्बर को माननीय कुलगुरू महोदया द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए जायेंगे. इस अवसर पर डॉक्टर हिमांशु कुमार, सहायक प्राध्यापक, राजभाषा प्रकोष्ठ से अभिषेक सक्सेना एवं विनोद रजक तथा केन्द्रीय विद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री मनोज कुमार नेमा एवम अन्य शिक्षकगण भी उपस्थित रहे.

ध्यातव्य है कि विश्वविद्यालय में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन 14 से 25 सितम्बर, 2024 तक किया जा रहा है जिसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं. कार्यक्रमों की श्रृंखला में कल विश्वविद्यालय के नियमित एवं दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों हेतु ‘हिन्दी टंकण प्रतियोगिता’ आयोजित की जा रही है.

हिंदी पखवाड़ा महोत्सव 2024 के अंतर्गत हिंदी विभाग में निबंध लेखन प्रतियोगिता और भारतीय ज्ञान परंपरा’ पर व्याख्यान तथा ‘कहानी पाठ’ का आयोजन हुआ

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में हिंदी पखवाड़ा महोत्सव 2024 के अंतर्गत आचार्य नंददुलारे वाजपाई सभागार, हिंदी विभाग में ‘हिंदी में हम’ विषय पर प्रतिभागियों ने अपने विचारो को निबंध के माध्यम से लिखने का प्रयास किया और बड़े उत्साह से इस प्रतियोगिता का हिस्सा बने. गौरतलब है कि इस प्रतियोगिता में निर्णयकर्ता सहायक प्राध्यापक, डॉ संजय कुमार (संस्कृत विभाग), डॉ शशि सिंह (संस्कृत विभाग) और डॉ संजय नैनवाड (हिंदी विभाग) थे.

प्रतियोगिता के तुरंत बाद व्यख्यानमाला का आयोजन हुआ, जिसमे मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता के रूप में, उच्चशिक्षा उत्कृष्टता संस्थान भोपाल के पूर्व प्रोफेसर डॉ. आनंद सिंह जी एवं सत्यदेव ग्रुप ऑफ कॉलेजेज की निदेशक श्रीमती सुमन सिंह जी उपस्थित रहीं. श्रीमती सुमन सिंह द्वारा "कौन सी सड़क जाएगी बांदा" शीर्षक कहानी पाठ किया गया. डॉ आनंद सिंह जी

के व्याख्यान का विषय "भारतीय ज्ञान परंपरा" विषय पर केंद्रित था. जिसमें उन्होंने सर्वप्रथम डॉ. गौर को नमन करते हुए अपनी बात रखी. व्याख्यान ने पूरे समय तक श्रोताओं को बांधे रखा. डॉ. सिंह की ज्ञान से सराबोर ओजस्वी और धारदार

वक्तव्य शैली, जिसके लिए वे जाने जाते हैं, से व्याख्यान परिपूर्ण था. श्रोता उनके वक्तव्य में ऐसे मुग्ध हुए कि दो घंटे तक कक्ष से कोई हिला तक नहीं. उन्होंने अपने वक्तव्य में भारतीय ज्ञान परंपरा को बड़ी प्रभावी शैली में श्रोताओं के समक्ष रखा. डॉ. सिंह ने कहा कि "परम्परा का गुण धर्म है-चयन धर्मा होना. भारतीय ज्ञान की परंपरा संवाद की परंपरा रही है. उन्होंने आगे कहा कि जिसे लोक ने सुधार लिया है, उसे शास्त्र को भी सुधार लेना चाहिए. जहां प्रेम का स्वर है, वहां भारतीयता मौजूद है." उनका पूरा व्याख्यान युवा मन को उत्साही बनाने वाला सिद्ध हुआ. इसके साथ ही उन्होंने स्वरचित महाकाव्य 'अथर्वा मैं वही वन हूं' पर भी अपनी बात रखी. उन्होंने बताया कि इसकी रचना में उन्हें 26 साल का समय लगा. उन्होंने बताया कि प्राचीनता का समावेश करने के लिए अथर्वा गढ़ा है. कहानियों को कविता के

रूप में अथर्वा में गूंथ दिया है. अन्योक्ति- समासोक्ति परक विचलन गढ़ा गया है. इस दौरान हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी की गरिमामयी उपस्थिति रही. हिंदी पखवाड़ा महोत्सव 2024 के कार्यक्रम संयोजक डॉ. हिमांशु कुमार ने व्याख्यान सत्र का संचालन किया. आभार ज्ञापन हिंदी की शोध छात्र ज्योति गिरी ने दिया. साथ ही हिन्दी विभाग सहित वि.वि. विभागों के अध्यापकगण जिनमें प्रो. राजेन्द यादव, डॉ. संजय नाईनवाड़, डॉ. आशुतोष मिश्र, डॉ. अफरोज बेगम, डॉ. अरबिंद कुमार, डॉ. रामहेत गौतम, डॉ. नौनिहाल गौतम, डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, डॉ. अवधेश कुमार, श्री प्रदीप कुमार सौर एवं भारी संख्या में शोधार्थी विद्यार्थी उपस्थित थे.

विश्वविद्यालय के कर्मचारियों ने ‘हिन्दी टंकण प्रतियोगिता’ में दिखाया अपना तकनीकी कौशल

सरकारी कामकाज हेतु कर्मचारियों को टंकण ज्ञान अनिवार्य

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा माननीया कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता, की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से हिन्दी पखवाड़ा-2024 के अंतर्गत विश्वविद्यालय के नियमित एवं दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों हेतु कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग में स्थित कंप्यूटर लैब में ‘हिन्दी टंकण प्रतियोगिता’ आयोजित की गयी. इस अवसर पर हिन्दी पखवाड़ा के संयोजक संयुक्त कुलसचिव एवं प्रभारी राजभाषा अधिकारी संतोष सोहगौरा ने बताया कि शासकीय नियमानुसार प्रत्येक कर्मचारी को सचिवालयीन एवं प्रशासनिक कामकाज में डाटा इंट्री तथा नोटशीट व पत्र लेखन के लिए कंप्यूटर टंकण का ज्ञान अनिवार्य है. इस प्रकार की प्रतियोगिता कर्मचारियों के तकनीकी ज्ञान एवं कौशल के प्रदर्शन का सुवसर प्रदान करती है. प्रतियोगिता के समन्वयक एवं निर्णायक कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. अभिषेक बंसल ने बताया कि टंकण के लिए न केवल भाषा का ज्ञान बल्कि कंप्यूटर उपकरणों, सही फॉण्ट तथा सॉफ्टवेयर की समुचित जानकारी होना भी नितांत आवश्यक है.

प्रतियोगिता में प्रतिभागी के रूप में बृजेश साहू, नीलेश लोधी, सचिन पटवा, अमित कनौजिया, शुभम साहू, कंचन पाल, श्रेयाश्री चौरसिया, रितु ठाकुर, संतोष कुमार मिश्रा, दीपक मिश्रा, उमेश चढ़ार, पवन कोरी, सतीश सरल, मनोज कुमार कावड़े, राजकुमार रजक, रेवाराम पटेल एवं अभिनव सहित विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं अनुभागों में कार्यरत 30 से भी अधिक कर्मचारियों ने प्रतिभागिता सुनिश्चित की.

प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को 25 सितम्बर को आयोजित समापन कार्यक्रम में माननीया कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए जायेंगे. इस महत्वपूर्ण आयोजन में कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के प्रयोगशाला प्रेष्य श्री नितिन चढ़ार की भूमिका सराहनीय रही. कार्यक्रम में राजभाषा प्रकोष्ठ से अभिषेक सक्सेना और विनोद रजक भी उपस्थित रहे.

हिंदी पखवाड़ा के संयोजक संतोष सोहगौरा ने बताया कि विश्वविद्यालय में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन 14 से 25 सितम्बर, 2024 तक किया जा रहा है जिसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु विभिन्न कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं. कार्यक्रमों की श्रृंखला में सोमवार दिनांक 23 सितम्बर को विश्वविद्यालय के अधिकारियों हेतु ‘आशुभाषण प्रतियोगिता’ आयोजित की जा रही है. प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार, प्रमाण-पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किए जाएंगे.

विश्व के सर्वश्रेष्ठ 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों की सूची में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के 5 शिक्षक शामिल

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के 05 शिक्षकों को विश्व के सर्वश्रेष्ठ 02 प्रतिशत वैज्ञानिकों की 2024 की सूची में स्थान मिला है. स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय, अमेरिका और एल्सिवियर पब्लिशर्स द्वारा 16 सितम्बर, 2024 को 02 प्रतिशत श्रेष्ठ वैज्ञानिकों की सूची जारी की गई है जिसमें डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के 05 शिक्षक शामिल हैं. इस सूची में फार्मेसी विभाग के प्रो. एस.पी. व्यास, प्रो. संजय कुमार जैन, माइक्रोबायोलोजी विभाग के अध्यक्ष एवं निदेशक, अकादमिक गतिविधियाँ प्रो. नवीन कानगो, रसायन विभाग के अध्यक्ष प्रो. ए.पी. मिश्रा और क्रिमिनोलॉजी एवं फोरेंसिक साइंस विभाग की डॉ. वंदना विनायक शामिल हैं.

प्रो. सुरेश प्रसाद व्यास | प्रो. संजय के जैन | प्रो. नवीन कानगो | प्रो. ए. पी. मिश्रा | डॉ. वंदना विनायक

इस सूची को विज्ञान के 22 क्षेत्रों और 174 उपक्षेत्रों से संबंधित वैज्ञानिकोंकेडाटाबेस एवं एल्सिवियर प्रकाशन और स्कोपस के विश्व स्तर के साइटेशन डेटाबेस के कम्पोजिट स्कोर के आधार पर तैयार किया जाता है. इस सूची में विश्वविद्यालय के कई पूर्व शिक्षक एवं पुरा छात्र, जो देश-विदेश विभिन्न संस्थाओ में कार्यरत हैं, भी शामिल हैं. विश्वविद्यालय के शिक्षकों की इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बधाई दी है और हर्ष व्यक्त किया है.

फार्मेसी विभाग के पूर्व आचार्य, प्रो सुरेश प्रसाद व्यास को निरंतर पांचवे साल उच्चस्तरीय शोध के लिए इस सूची में स्थान मिला है. उन्होंने लाइपोसोम बायोटेक्नोलॉजी, ओरल वक्सीनशन, लक्ष्यभेदी टीबी उपचार, नावेल ड्रग डिलीवरी पर उत्कृष्ट शोध किया है जो 400 शोध पत्रों के रूप में प्रकाशित है और 20000 से अधिक बार उल्लेखित है.

प्रो. संजय के जैन, फार्मेसी विभाग में वरिष्ठ आचार्य एवं निदेशक, प्लानिंग व रिसोर्स जनरेशन हैं और उन्हें चौथे बार उच्चस्तरीय शोध के लिए इस सूची में स्थान मिला है. उन्होंने बड़ी आंत और मस्तिष्क की बीमारियों के लिए लक्ष्य भेदी दवाओं का विकास किया है जिसके लिए उन्हें 2018 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा विजिटर अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है. इनके 200 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हैं जिनका 15000 बार उल्लेख हुआ है व इन्हे 03 अंतराष्ट्रीय व 01 राष्ट्रीय पेटेंट प्राप्त हैं.

प्रो. नवीन कानगो लगातार तीसरी बार इस सूची में शामिल किये गए हैं. वे माइक्रोबायोलोजी के विभागाध्यक्ष एवं अकादमिक अफेयर्स के निदेशक हैं और इनका शोध कार्य सूक्ष्मजैवीय एन्जाइम्स का स्वास्थ्यवर्धक प्री-बायोटिक, बायो-एथेनोल, मुर्गी के पंखों के अपघटन एवं बहुउपयोगी नैनोपार्टिकल्स बनाने पर आधारित है.इनका शोध कार्य 80 शोध पत्रों के रूप में प्रकाशित है जिनका 2310 से अधिक बार उद्धरण किया गया है.

प्रो. ए.पी. मिश्रा विश्वविश्वविद्यालय के वरिष्ठ आचार्य केमिस्ट्री विभाग के अध्यक्ष हैं. इनका कार्यक्षेत्र सिंथेटिक और संरचनात्मक अकार्बनिक रसायन विज्ञान, समन्वय रसायन विज्ञान, जैव अकार्बनिक, नैनो सामग्री, अल्ट्रासोनिक्स है. इनका शोध कार्य 60 शोध पत्रों के रूप में प्रकाशित है.

डॉ. वंदना विनायक क्रिमिनोलॉजी एवं फोरेंसिंक साइंस विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं एवं उनका शोधकार्य डायटम्स और माइक्रोअलगी से जैव ईधन एवं पिगमेंट्स उत्पादन की नैनोटेक्नोलाजी पर केंद्रित हैं.इनका शोध कार्य 76 शोध पत्रों के रूप में प्रकाशित है जिनका 1900 से अधिक बार उल्लेख हुआ है तथा 6 पेटेंट है.

विश्वविद्यालय में एनसीसी में प्रवेश नामांकन प्रक्रिया हुई आयोजित

मध्य प्रदेश: आज डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय में 3MP सिग्नल कंपनी NCC द्वारा नए नामांकन की प्रक्रिया सफलतापूर्वक संपन्न हुई. इस कार्यक्रम का संचालन कर्नल अरुण कुमार बेन्सला, कमांडिंग ऑफिसर, 3MP सिग्नल कंपनी NCC द्वारा किया गया.

इस अवसर पर कुल 147 कैडेट्स ने चयन प्रक्रिया में भाग लिया, जिनमें से 117 कैडेट्स का सफल चयन किया गया. कार्यक्रम में 1 ANO, 3 JCO और 5 NCO सहित अन्य सहायक नागरिक कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया. इस सफल नामांकन से NCC में नए कैडेट्स को विभिन्न गतिविधियों और प्रशिक्षणों का हिस्सा बनने का अवसर मिलेगा, जिससे उनकी नेतृत्व क्षमता और अनुशासन में वृद्धि होगी.

कार्यक्रम के अंत में कर्नल बेन्सला ने चयनित कैडेट्स को शुभकामनाएं दीं और उन्हें NCC के उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्धता बनाए रखने के लिए प्रेरित किया.

हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत ‘आशुभाषण प्रतियोगिता’ सम्पन्न

विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने समसामयिक मुद्दों पर बड़ी बेबाकी से व्यक्त किए अपने विचार

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा माननीया प्रो. नीलिमा गुप्ता , कुलगुरू की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम- 2024 के अंतर्गत विश्वविद्यालय के अधिकारियों के लिए आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के वित्ताधिकारी सीएमए कुलदीपक शर्मा ने आशुभाषण के विषय ‘मन के हारे हार, मन के जीते जीत’, शैक्षिक बहुमाध्यम अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. पंकज तिवारी ने ‘राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 का क्रियान्वयन’, प्रभारी परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुरेन्द्र पी. गादेवार ने ‘खेलो इण्डिया’, उपपुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. संजीव सर्राफ ने ‘राजभाषा और राष्ट्रभाषा’, उपकुलसचिव सतीश कुमार ने ‘आभासी पटल का पठन-पाठन में योगदान’, सीनियर सिस्टम एनालिस्ट डॉ. रूपेन्द्र जुगल चौरसिया ने ‘कौशल विकास मेला’, नेटवर्किंग एडमिनिस्ट्रेटर सचिन सिंह गौतम ने ‘लोकतंत्र और मतदान’,

सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. मुकेश साहू ने ‘कृत्रिम बुद्धिमत्ता और देश का भविष्य’, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. अभिषेक कुमार जैन ने ‘नशा मुक्ति अभियान’, सहायक कुलसचिव राजकुमार पाल ने ‘मातृभाषा और देश का विकास’,

सहायक कुलसचिव दीपक कुमार शाक्य ने ‘स्वच्छता अभियान’, ईएमएमआरसी के प्रोड्यूसर माधव चंद्र ने ‘विविधता में एकता’ तथा विधि अधिकारी बृजभूषण सिंह ने ‘मेरी अविस्मरणीय यात्रा’ विषय पर बड़ी बेबाकी से अपने-अपने विचार रखे जिसे वहाँ उपस्थितजनों ने काफी सराहा.

इस अवसर पर हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम-2024 के संयोजक तथा राजभाषा अधिकारी एवं संयुक्त कुलसचिव श्री संतोष सोहगौरा ने अपनी बात रखते हुए कहा कि किसी भी मुद्दे को लेकर तथा उससे जुड़ी कार्यान्वयन नीतियों के सफल क्रियान्वयन हेतु अधिकारियों का अभिमत एक अलग स्थान रखता है. उन्होंने बताया कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं वास्तव में अपने अंतर्मन की भावनाओं को व्यक्त करने का एक मंच उपलब्ध कराती हैं.

धन्यवाद ज्ञापन प्रतियोगिता के समन्वयक एवं सहायक कुलसचिव आशीष कुमार तिवारी तथा संचालन हिन्दी अनुवादक अभिषेक सक्सेना ने किया. विशेष सहयोग विनोद रजक का रहा. प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा 25 सितम्बर, 2024

को रंगनाथन भवन, जवाहर लाल नेहरू पुस्तकालय में आयोजित 'पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह' में की जायेगी जिसमें विजयी प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति महोदया प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा नकद पुरस्कार, स्मृति चिन्ह् एवं प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया जायेगा.

ध्यातव्य है कि विश्वविद्यालय में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन 14 से 25 सितम्बर, 2024 तक किया जा रहा है जिसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु विभिन्न कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं. कार्यक्रमों की श्रृंखला में कल दिनांक 24 सितम्बर को विश्वविद्यालय के समस्त निम्न श्रेणी लिपिकों हेतु ‘टिप्पण, प्रारूपण एवं कार्यालयीन पत्राचार’ विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है.

विश्वविद्यालय क्षमता, कौशल एवं ज्ञान के विकास का महत्त्वपूर्ण केंद्र है- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

विश्वविद्यालय में केमिकल साइंस की तकनीक पर छह दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र विभाग द्वारा 'एडवांस्ड रिसर्च टेक्निक फॉर केमिकल एनालिसिस एंड कैरक्टराइजेशन' विषय पर छह दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन विश्वविद्यालय के अबिमंच सभागार में संपन्न हुआ.

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर एनसी गौतम थे एवं अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. डॉक्टर हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय में कई अत्यधिक परिष्कृत उपकरण है जिनकी ट्रेनिंग नई पीढ़ी के लिए अत्यावश्यक है. इसी आवश्यकता को देखते हुए कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता की पहल पर विश्वविद्यालय अलग-अलग इंस्ट्रूमेंट पर कार्यशाला आयोजित कर रहा है जिसके क्रम में यह दूसरी कार्यशाला है जिसमें देश भर के 60 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं. कार्यशाला के समन्वयक प्रो. रत्नेश दास एवं डॉ. कल्पतरु दास हैं.

उदघाटन सत्र में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि वैज्ञानिक शोध में एडवांस रिसर्च टेक्निक सीखना आवश्यक है तभी हम नए-नए रिसर्च कर सकेंगे. विश्वविद्यालय में इसके लिए आठ सेंटर हैं जिनमें विशेषीकृत उपकरण हैं और सभी क्रियाशील हैं. इसके अलावा भी विभिन्न प्रोजेक्ट्स एवं विभागों के पास भी उन्नत उपकरण हैं जिनको एकीकृत तरीके से नए सेंटर के रूप में विकसित किया जा सकता है ताकि इसका ज्यादा से ज्यादा उपयोग विद्यार्थी एवं शोधार्थी कर सकें. योजना बनाकर श्रमसाध्य तरीके से जब शोध किये जाते हैं तो उसके सकारात्मक परिणाम ही आते हैं. इसलिए शोधकर्ता को सदैव सकारात्मक होना चाहिए. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में नया एकीकृत लैब जल्द ही बनकर तैयार हो रहा है. इसमें शोध सुविधाएं बधाई जायेंगी जिसका फायदा शोधार्थियों को मिलेगा. विश्वविद्यालय क्षमता, कौशल एवं ज्ञान के विकास का महत्त्वपूर्ण केंद्र है. यह कार्यशाला निश्चित तौर पर नए शोधार्थियों के लिए लाभकारी होगी.

शोध में सकारात्मकता प्रमुख पहलू- प्रो. एन सी गौतम

मुख्य अतिथि प्रो. एन सी गौतम ने कहा कि समय के साथ तकनीक बदल रही है. हमें नए तकनीक के साथ स्वयं को अपडेट रखना होगा. नए समय को देखते हुए प्रयोगशालाओं में क्यूआर कोड का उपयोग करना चाहिए. विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षक सभी पाठ्यक्रम निर्माण, शोध की रूपरेखा निर्माण एवं सामग्री निर्माण की प्राविधि में संलग्न हों तभी शोध का एक वातावरण बनेगा और नयी पीढी में शोध के प्रति जागरूकता पैदा होगी. इंडस्ट्री को भी अपने कार्यक्रमों में शामिल करें ताकि भविष्य में वह विद्यार्थियों के लियी लाभकारी हो. उन्होंने सुझाव दिया कि किसी भी विषय पर रिसर्च करने के साथ ही सार्वजनिक स्तर पर उसका प्रचार-प्रसार कर देना चाहिए जिससे वैज्ञानिकों के साथ-साथ आम नागरिक भी नए शोधों से परिचित हो सके. किसी भी शोध में कई-कई वर्ष लग जाते हैं. यह जरूरी नहीं की मनचाहे निष्कर्ष न मिल पाए तो वह रिसर्च व्यर्थ है. प्रत्येक शोध का एक चरण होता है. कई चरण के बाद ही हम अंतिम परिणाम तक पहुँचते हैं. हमें अपने अनुरूप आशाजनक परिणाम न भी मिले तो पुनः सकारात्मकता के साथ आगे बढना चाहिए. अपने आस-पास के महाविद्यालयों को भी शोध के प्रति रुझान पैदा करना चाहिए. एक विश्वविद्यालय होने के नाते हमारी यह जिम्मेदारी भी बनती है कि हम नए वैज्ञानिक शोधों के प्रति लोगों को जागरूक करें. सृजनात्मकता का वातावरण बनायें यही हमारी उपादेयता.

कार्यशाला में आईआईटी इंदौर के प्रो रजनीश मिश्रा; जीओल से श्रीनिवास पुजारी एवं श्री राहुल ग्रोवर; लैब इंडिया से श्री गांधी जी गिरिया; महाराजा छत्रसाल विश्वविद्यालय से डॉ. मौली थॉमस; इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च भोपाल से प्रोफेसर दीपक चोपड़ा; आईआईटी गुवाहाटी से प्रोफेसर सुभाष पान; सहित विवि के प्रो रत्नेश दास, डॉ. अभिलाषा दुर्गावंशी, डॉ. के के डे, डॉ. के बी जोशी, डॉ. कल्पतरु दास, डॉ. पुष्पल घोष और डॉ. नीरज उपाध्याय कार्यशाला में सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक गतिविधियों का प्रशिक्षण देंगे. उदघाटन सत्र में प्रो. हेरेल थॉमस, प्रो. रत्नेस दास, प्रो. ए पी मिश्रा, प्रो. नवीन कानगो, डॉ. एस पी उपाध्याय, डॉ. आशुतोष, डॉ. पुष्पल घोष, डॉ. के बी जोशी सहित विवि के कई शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे.

सांख्यिकी विश्लेषण में कुशलता से शोध की गुणवत्ता सुधारी जा सकती है: प्रो. अंशुजा तिवारी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के वाणिज्य विभाग द्वारा आयोजित दो साप्ताहिक क्षमता निर्माण कार्यक्रम के पांचवें दिन का आयोजन बड़े ही उत्साह और ज्ञानवर्धक सत्रों के साथ संपन्न हुआ. कार्यक्रम के पहले दो सत्रों का नेतृत्व

प्रो.गोयल ने किया. जिनका विषय 'रिपोर्ट लेखन और शोध एवं प्रकाशन नैतिकता' था. जहां आपने रिपोर्ट लेखन की बारीकियों और संरचना पर ध्यान केंद्रित किया और बताया कि एक शोध रिपोर्ट कैसे स्पष्ट, संक्षिप्त और प्रभावी होनी चाहिए, ताकि वह शोध के उद्देश्यों और निष्कर्षों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सके. उन्होंने शोध और प्रकाशन की नैतिकताओं पर जोर देते हुए कहा कि शोध कार्य में ईमानदारी, पारदर्शिता और डेटा की प्रमाणिकता बेहद जरूरी है. साथ ही आपने शोध प्रकाशन के मानकों, संदर्भ देने की पद्धतियों, और प्लेजरिज्म से बचने के उपायों पर भी विस्तार से चर्चा की गई.

तीसरे और चौथे सत्र का संचालन प्रो. अंशुजा तिवारी द्वारा किया गया जहा आपने आँकड़ों के विश्लेषण और केंद्रीय प्रवृत्तियों जैसे माध्य, माध्यिका और मोड के मापन पर ध्यान केंद्रित किया. आपने शोध में इन आँकड़ा-संबंधित मापदंडों के महत्व को समझाया और बताया कि ये कैसे किसी भी डेटा सेट का विश्लेषण करने में सहायक होते हैं. आगे आपने आँकड़ा-संख्या विज्ञान के विभिन्न तकनीकों की चर्चा करते हुए कहा कि केंद्रीय प्रवृत्तियों का सही मापन ही प्रभावी शोध की कुंजी है.

कार्यक्रम के अगले दिनों में भी सांख्यिकी, शोध के तरीकों और डेटा विश्लेषण के विविध पहलुओं पर गहन चर्चा की जाएगी. विशेषज्ञ वक्ता विभिन्न आधुनिक सांख्यिकी तकनीकों और उनके व्यावहारिक उपयोग पर विचार-विमर्श करेंगे, जिससे प्रतिभागियों को अपने ज्ञान का विस्तार करने का अवसर मिलेगा.

हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत 'कार्यालयीन टीप एवं पत्र लेखन' विषय पर हिन्दी कार्यशाला सम्पन्न

विश्वविद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति में लिपिक संवर्गीय कर्मचारियों का योगदान भी अहम

विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाड़ा-2024 के अंतर्गत विश्वविद्यालय के समस्त सहायकों एवं लिपिकों हेतु 'टिप्पण, प्रारूपण एवं कार्यालयीन पत्राचार' विषय पर हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई. कार्यशाला के विषय-विशेषज्ञ एवं पखवाड़ा कार्यक्रम के संयोजक विश्वविद्यालय के संयुक्त कुलसचिव एवं प्रभारी राजभाषा अधिकारी श्री संतोष सोहगौरा ने प्रतिभागियों को राजभाषा के नियमों, कार्यालयीन कामकाज में प्रयोग की जाने वाली शब्दावली, पत्रों के विभिन्न प्रकार, नोटशीट तैयार करने जैसे कार्यालयीन कामकाज में उपयोगी प्रशासनिक प्रक्रियाओं पर विस्तार से चर्चा की। अपने वक्तव्य में उन्होंने बताया कि किसी भी प्रस्ताव पर निर्णय इस बात पर भी निर्भर करता है कि उसे संबंधित सहायक एवं

लिपिक द्वारा विश्वविद्यालय हित को ध्यान में रखते हुए संबंधित प्रकरण को नियमानुसार नोटशीट पर किस रूप में प्रस्तुत किया गया है. अपने वक्तव्य को रोचक एवं संवादात्मक बनाते हुए उन्होंने प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का दैनन्दिन

कार्यालयीन कामकाज से जुड़े उदाहरणों के माध्यम से निराकरण किया. कार्यशाला में प्रतिभागियों के लिए शब्दावली पर आधारित प्रश्नोत्तरी भी आयोजित की गई.

कार्यशाला में शुभम साहू, अनस खान, अमन जैन, निशांत सोनी, आदित्य बरमैया, अमित कनौजिया, ब्रजेश साहू, श्रीमती मंजु जैन, श्रेयाश्री चौरसिया, रितु ठाकुर, अभिनव अग्निहोत्री, सचिन पटवा, अंकित जैन, प्रभांशु तिवारी, आकाश दुबे, प्रवीण साहू, ओम सैनी, आदित्य तिवारी, आयुष सोनी एवं साकेत दुबे सहित विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं अनुभागों में कार्यरत 20 से अधिक सहायक एवं लिपिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का संचालन राजभाषा प्रकोष्ठ के अनुवादक अभिषेक सक्सेना ने किया विशेष सहयोग विनोद रजक एवं सूचना वैज्ञानिक दयानंदप्पा कोरी का रहा.

कार्यशाला के प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र का वितरण तथा हिन्दी पखवाड़ा- 2024 के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा 25 सितम्बर, 2024 को अपराह्न 01:45 बजे से रंगनाथन भवन, केन्द्रीय पुस्तकालय में आयोजित 'पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह' में की जायेगी जिसमें विजयी प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति महोदया एवं मुख्य अतिथि द्वारा नकद पुरस्कार, स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया जायेगा. राजभाषा अधिकारी ने बताया कि समापन समारोह की अध्यक्षता माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता करेंगी तथा मुख्य अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं समाजसेवी सुश्री शोभा पैठणकर उपस्थित रहेंगीं। समापन समारोह में विश्वविद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों को आमंत्रित किया गया है.

स्वच्छता कैंपेन 4.0 के तहत कुलपति ने दिलाई स्वच्छता शपथ, आउटरीच गतिविधि के तहत कैंट स्थित परेड मंदिर में हुई साफ-सफाई

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में दिनांक 23 सितंबर 2024 को शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के दिशा निर्देशों के क्रम में विश्वविद्यालय के कामर्स ब्लॉक, फार्मेसी विभाग, शिक्षा विभाग, और इंजीनयरिंग शिक्षा विभाग (नैनो परिसर) में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने स्वच्छता शपथ दिलाई जिसमें सभी ने कम से कम प्रतिवर्ष 100 घंटे स्वच्छता गतिविधि में भाग लेने का संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रो चंदा बेन, प्रो जे के जैन, प्रो अम्बिकादत्त शर्मा, प्रो डीके नेमा, प्रो राजेन्द्र यादव, प्रो आशीष वर्मा, प्रो संजय जैन, प्रो वंदना सोनी, डॉ अभिषेक बंसल सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे.

इसी क्रम में आउटरीच एवं एक्सटेंशन गतिविधि के तहत कैंट स्थित परेड मंदिर में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के निर्देशन में स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया गया. मंदिर परिसर को स्वच्छ रखने हेतु डिस्प्ले बोर्ड, डस्टबिन एवं स्वच्छता सामग्री भी विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया गया. इस अवसर पर कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि समाज के नागरिक होने के नाते हमारी जिम्मेदारी अपने आस-पास के परिसर को भी स्वच्छ रखना है. विवि भी अपनी सामाजिक भागीदारी सुनिश्चित करते हुए इस तरह के अभियान का हिस्सा बनेगा और स्वच्छता जागरूकता अभियान और गतिविधि में संलग्न रहेगा. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलसचिव डॉ एसपी उपाध्याय, डॉ एस पी गादेवर, इंजी राहुल गोस्वामी, डॉ पंकज तिवारी, डॉ राकेश सोनी, डॉ संजय शर्मा, डॉ गौतम प्रसाद सहित शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे.

जनसमर्थन से बनेगी हिंदी अंतर्राष्ट्रीय भाषा- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के राजभाषा प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम विश्वविद्यालय के रंगनाथन भवन में आयोजित किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि

शिक्षा विद एवं प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री शोभा पैठणकर थीं. कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. इस अवसर पर हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस. पी. उपाध्याय एवं संयुक्त कुलसचिव एवं प्रभारी हिंदी अधिकारी संतोष सोहगौरा मंचासीन थे.

कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य देते हुए संयुक्त कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने कहा कि हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए हम सभी कटिबद्ध हैं और वह दिन दूर नहीं जब हिंदी न केवल राष्ट्रभाषा बल्कि संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनेगी. उन्होंने हिंदी पखवाड़ा में हुए विभिन्न गतिविधियों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया. इस दौरान राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा निर्मित वृत्त चित्र का प्रदर्शन भी किया गया. अतिथियों द्वारा राजभाषा प्रकोष्ठ की पत्रिका 'भाषा-भारती' का विमोचन किया गया.

अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार और बढ़ावा देने के लिए त्वरित गति से प्रयास किये जा रहे हैं. विश्वविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा में आयोजित विविध गतिविधियों

की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के उद्देश्यों से प्रेरणा लेते हुए हम सभी कार्य कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि हमें आज हिंदी की स्थिति पर चर्चा करते हुए इसके व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए जिससे यह संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बन सके. आज दुनिया के कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन हो रहा है. इसमें रोजगार के भी भरपूर अवसर हैं. आज आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का

युग है. आज कम्प्यूटर बेस्ड हिन्दी टाइपिंग हो रही है. विश्वविद्यालय में हिन्दी क्लब की स्थापना की गई है जिसका उद्देश्य हिन्दी भाषी विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा से जोड़ना है और साथ ही उनकी मातृभाषाओं को अन्य भाषा-भाषियों से जोड़ना है. उन्होंने कहा कि हिन्दी को आगे ले जाने की भावना ही हिन्दी को आगे बढ़ाएगी. हिन्दी जन-जन की भाषा बने यही हमारा उद्देश्य होना चाहिए.

हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए लक्ष्य के साथ कार्य करने की आवश्यकता- सुश्री शोभा पैठणकर

मुख्य अतिथि सुश्री शोभा पैठणकर ने हिन्दी पखवाड़ा के आयोजन के बारे कहा कि यह एक सर्वव्यापी और सर्वस्पर्शी आयोजन है. उन्होंने कहा कि आज हमें यह चिंतन करना चाहिए कि हिंदी राजभाषा से राष्ट्रभाषा क्यों नहीं बन पाई. यह तभी संभव है जब निर्धारित लक्ष्य के साथ कार्य किया जाए. सरकार इस दिशा में अपने प्रयास तो कर रही है लेकिन इसमें नागरिक समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण है. समाज में मानस परिवर्तन से ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित किया जा सकता है. हिन्दी अति समृद्ध भाषा है और इसमें रोजगार की असीम संभावनाएं हैं. राजभाषा नीति के उद्देश्यों के क्रियान्वयन और लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक विभाग को एक लक्ष्य के साथ कार्य करने की आवश्यकता है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से मातृभाषा और भारतीय ज्ञान परंपरा पर काफी महत्त्व दिया जा रहा है. इस प्रयास से निश्चित ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनने का मार्ग प्रशस्त होगा.

प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने विवि में हिंदी क्लब की गतिविधियों एवं आगामी रणनीतियों की चर्चा करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग ने भी हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया जिसमें विद्यार्थियों ने अभूतपूर्व ढंग से सहभागिता की. उन्होंने कहा कि हिन्दी को व्यापकता प्रदान करने में गैर हिन्दी भाषियों की भी काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका है. हिन्दी क्लब द्वारा ऐसे पाठ्यक्रमों का सृजन किया जा रहा है जिससे सभी भाषा-भाषी एक मंच पर आ सकें और भाषाई एकात्मता विकसित हो सके.

कार्यक्रम का संचालन अनुवादक अभिषेक सक्सेना ने किया. कार्यक्रम में हिन्दी पखवाड़ा के दौरान प्रतिभागिता कर रहे केन्द्रीय विद्यालय के विजयी विद्यार्थियों, विवि के अधिकारियों, कर्मचारियों, प्रयोगशाला सहायकों, प्रयोगशाला प्रेष्यों को नकद पुरस्कार, प्रमाण-पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किये गये. इस अवसर पर वित्ताधिकारी कुलदीपक शर्मा, प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. चंदा बेन, डॉ. एस पी गादेवार, डॉ. पंकज तिवारी, उपकुलसचिव सतीश कुमार, विधि अधिकारी बृजभूषण सिंह, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. आशुतोष, डॉ. राकेश सोनी, डॉ. महेंद्र, डॉ. आयुष गुप्ता, डॉ. विवेक जायसवाल सहित विवि के कई शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे.

गणित विभाग के शोधार्थी पी. एल. प्रजापति को मिली पी.एच.डी. की उपाधि

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के गणित विभाग के शोधार्थी पी. एल. प्रजापति को पी.एच.डी. की उपाधि मिली है. पी. एल. प्रजापति ने 'वोल्टेरा इन्टीग्रो-डिफरेंशियल समीकरणों के लिए संख्यात्मक विधियों के विषय पर अपना शोध कार्य

डॉ. आर. के. पांडेय सहायक प्राध्यापक के मार्गदर्शन में पूर्ण किया. अपने शोध में उन्होंने बताया कि यह समीकरण विज्ञान और प्रौद्योगिकी की विभिन्न वास्तविक दुनिया की समस्याओं को मॉडलिंग करते समय उत्पन्न होते हैं. इस सफलता का श्रेय श्री प्रजापति ने अपने मार्गदर्शक गणित विभाग के डॉ. आर. के. पांडेय को दिया. श्री प्रजापति वर्तमान में सहोद्रा राय शास पालीटेक्निक महाविद्यालय सागर में कार्यरत हैं. इस उपलब्धि पर विभागाध्यक्ष प्रो. दिवाकर शुक्ला, शिक्षको, सहपाठियों एवं मित्रों ने बधाई प्रेषित की.

डॉ. आंबेडकर चेयर द्वारा स्वच्छता ही सेवा विषय पर संगोष्ठी का आयोजन

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में डॉ.आंबेडकर चेयर के द्वारा अर्थशास्त्र विभाग में स्वच्छता ही सेवा विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया एवं शपथ दिलाई गई. उक्त कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अर्थशास्त्र विभाग के विभाग अध्यक्ष

प्रो. प्रकाश कांबले ने कहा कि देश को स्वच्छ बनाने में विद्यार्थियों की बड़ी भूमिका है. विद्यार्थियों को इस अभियान में आगे आकर स्वच्छता के लिए कार्य करना चाहिए. संगोष्ठी को संबोधित करते हुए डॉ. देवेन्द्र कुमार ने कहा कि डॉक्टर आंबेडकर फाउंडेशन के द्वारा स्वच्छता ही सेवा विषय अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है. डॉक्टर आंबेडकर चेयर के द्वारा विश्वविद्यालय में संगोष्ठी, जनजागरण, भाषण प्रतियोगिता के माध्यम से स्वच्छता पखवाड़ा मनाया जा रहा है. इसमें युवाओ की बड़ी भूमिका है क्योंकि स्वच्छ भारत ही विकसित भारत होगा. डॉ. केशव टेकाम उक्त अवसर पर कहा कि स्वच्छता के बिना विकास संभव नहीं है इसलिए इस अभियान को हमको घर-घर तक ले जाना होगा. डॉ. वीरेंद्र मटसानिया ने कहा कि भारत में स्वच्छता अभियान की शुरुआत महाराष्ट्र से संत गाडगिल महाराज द्वारा की गई. वह गांव-गांव जाकर लोगों को सफाई के बारे में बताते थे. डॉ. वीणा थावरे ने कहा कि गंदी बस्तियों में गंदगी के कारण बीमारी ज्यादा होती है इसलिए हम सबको इस अभियान को बस्ती बस्ती तक ले जाना होगा. डॉ. उत्सव आनंद डॉ. अंबेडकर चेयर के प्रो. एवं संगोष्ठी के संयोजक डॉ. देवेंद्र कुमार थे. संगोष्ठी में अंकित चतुर्वेदी एवं तेजस्विनी के द्वारा भी संबोधित किया गया. कार्यक्रम के अंत में सभी को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई.

विश्वविद्यालय में भारतीय ज्ञान परम्परा में पीजी पाठ्यक्रम में प्रवेश प्रारम्भ

20 सीट पर होगा प्रवेश, 06 अक्टूबर तक कर सकेंगे रजिस्ट्रेशन

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में वैदिक अध्ययन विभाग के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रवेश

पोर्टल प्रारम्भ कर दिया गया है. इस पाठ्यक्रम में स्नातक उत्तीर्ण छात्र बिना सी. यू. ई. टी. परीक्षा के भी प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं. विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा, अंतरवैषयिक अध्ययन एवं वैदिक ज्ञान के वैज्ञानिक आयाम को बढ़ावा देने एवं राष्ट्रव्यापी

प्रचार की दृष्टि से इस पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया. भारतीय ज्ञान परम्परा से स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम करने के पश्चात छात्र भारतीय ज्ञान परम्परा, वैदिक अध्ययन एवं हिंदू अध्ययन विषयों में पी. एच. डी. कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा शिक्षक पात्रता परीक्षा (यूजीसी नेट परीक्षा) में भी भारतीय ज्ञान परम्परा को एक विषय के रूप में शामिल किया गया था, अतः स्नातकोत्तर के बाद छात्र शिक्षक पात्रता परीक्षा की तैयारी भी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी एवं निजी कंपनियों में जहां स्नातकोत्तर न्यूनतम अर्हता है वहां भी अन्य विषयों में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त अभ्यर्थियों की तरह आवेदन कर सकते हैं.

कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि पूरे देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदू अध्ययन, वैदिक अध्ययन, भारतीय ज्ञान परम्परा के नवीन विभागों की स्थापना की जा रही है. इस दृष्टि से आगामी समय में इन विषयों के अध्यापन हेतु अनेक प्राध्यापकों की आवश्यकता होगी, ऐसे में विश्वविद्यालय इस विषय के विशेषज्ञ तैयार करके ऐसे प्राध्यापकों की आपूर्ति हेतु दृढसंकल्पित है. प्रारम्भिक वर्ष में इस पाठ्यक्रम के लिए 20 सीटों का निर्धारण किया गया है. प्रवेश प्रक्रिया में नियमानुसार आरक्षण प्रावधानों को लागू करते हुए प्रवेश दिया जाएगा. इस पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु विश्वविद्यालय के प्रवेश पोर्टल में पंजीकरण आवश्यक है. पंजीकरण का लिंक दिनांक 25 सितम्बर से 6 अक्टूबर तक खुला रहेगा. जिन छात्रों ने स्नातक स्तर पर 55% या अधिक अंक प्राप्त किए हैं, वे चाहें किसी भी विषय से स्नातक उत्तीर्ण हों. योग्यता से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी पोर्टल पर उपलब्ध है. विश्वविद्यालय की एडमिशन समिति के अध्यक्ष एवं वैदिक अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दिवाकर शुक्ल ने जानकारी दी कि कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता जी के मार्गदर्शन में वैदिक अध्ययन विभाग का पिछले वर्ष ही प्रारम्भ हुआ इस विभाग में बी.ए. (ऑनर्स) वैदिक अध्ययन, पी. एच. डी. वैदिक अध्ययन पाठ्यक्रम पहले से ही संचालित हो रहे हैं. भारतीय ज्ञान परम्परा में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ होने से नवीन विभाग पूर्णता को प्राप्त होगा.

मेडीकल इंटर्नशिप छात्रों ने शिक्षाशास्त्र विभाग में नुक्कड़ नाटक का किया आयोजन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में स्वच्छता पखवाड़ा अभियान के अंतर्गत विश्वविद्यालय के मेडीकल विभाग, शिक्षाशास्त्र विभाग एवं बुंदेलखंड मेडीकल कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में मेडीकल कॉलेज के इंटर्नशिप विद्यार्थियों द्वारा शिक्षाशास्त्र विभाग में नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की मुख्य अतिथि बी.एम.सी. ईएनटी विभाग की विभागाध्यक्ष ने कार्यक्रम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला. कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. अनिल कुमार जैन ने की. उन्होंने कहा कि ईएनटी संबंधी जानकारी हमारे बी.एड. के विद्यार्थियों में निश्चित जागरूकता उत्पन्न करेगी एवं भविष्य में समाज के लोगों में जागरूकता लाने का कार्य करेगी. इस कार्यक्रम में विभाग के समस्त शिक्षक, कर्मचारी, रिसर्च स्कालर,

बी.ए.बी.एड/बी.एस.सी.बी.एड./बी.कॉम.बी.एड. एवं एम.एड. के विद्यार्थियों की उपस्थिति रही. कार्यक्रम का संचालन डॉ. रश्मि जैन ने किया. कार्यक्रम का आभार डॉ. नवीन सिंह ने किया एवं कार्यक्रम में डॉ. अर्पणा श्रीवास्तव एवं अन्य साथियों का विशेष सहयोग रहा.

विश्वविद्यालय में बनेगा शौर्य, संस्कृति और कला का अद्भुत संग्रहालय

पथरिया स्थित वैली कैम्पस में बनेगा संग्रहालय

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में शौर्य, संस्कृति एवं कला संग्रहालय का निर्माण किया जा रहा है. इस सम्बन्ध में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में एक महत्त्वपूर्ण बैठक कुलपति सभाकक्ष में आयोजित की गई. बैठक में भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय से संबद्ध महार रेजीमेंट के बिग्रेडियर आई. एस. भल्ला, बिग्रेडियर विकास बहुगुणा, कर्नल ए. जे. पॉल उपस्थित थे.

बैठक में कुलपति ने विश्वविद्यालय में स्थापित होने वाले संग्रहालय की वृहद् कार्ययोजना पर प्रकाश डालते हुये कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य एक संग्रहालय को स्थापित करना है जो शौर्य, संस्कृति और कला का अद्भुत केंद्र बने. संग्रहालय में डॉ. गौर उनका जीवन दर्शन, उनका साहित्य और उनके योगदान पर केंद्रित कक्ष एवं डिस्प्ले गैलरी बनाई जायेगी. इसी के साथ ही भारतीय थल सेना, जल सेना एवं नभ सेना के शौर्य को प्रदर्शित करती हुई सामग्री भी प्रदर्शनी के लिए रखी जायेंगी. भारतीय वीर जवानों के शौर्य एवं बलिदान को प्रदर्शित करते हुए कॉरिडोर का निर्माण किया जाएगा जिसमें सागर, बुंदेलखंड एवं मध्य प्रदेश के बलिदानी वीर जवानों की स्मृति को भी सहेजा जाएगा. बैठक में यह भी निर्णय हुआ कि जनजातीय संस्कृति पर आधारित प्रदर्शनी एवं सामग्री भी संग्रहालय में स्थित होंगी. मानव विकास के सोपानों एवं आदिवासी एवं जनजातीय इतिहास एवं संस्कृति को जानने-समझने के लिए यह महत्वकांक्षी योजना है. जनजातीय नायकों, उनके संघर्ष, योगदान एवं बलिदान को भी संग्रहालय में स्थान दिया जाएगा. इसके साथ ही बुंदेलखंड की लोक कला, संस्कृति, पारंपरिक वाद्य यंत्र, देशज परंपरा से सम्बंधित जानकारी एवं सामग्री भी प्रदर्शित की जायेगी.

महार रेजीमेंट एवं भारतीय सेना के विभिन्न शाखाओं के सहयोग से संग्रहालय में प्रदर्शनी हेतु टैंक, एयरक्राफ्ट एवं सेना के जहाज एवं अन्य सैन्य सामग्री भी प्रदर्शनी के लिए रखी जायेगी. संग्रहालय में देश की रक्षा में तत्पर तीनों विंग की संरचना एवं रैंक की जानकारी प्रदर्शित की जायेगी. देश की रक्षा के लिए मिलने वाले विभिन्न अवार्ड एवं पदकों की जानकारी के प्रदर्शन के साथ भारतीय सेना की विभिन्न इकाईयों में रोजगार के अवसरों के बारे में भी जानकारी प्रदर्शित की जायेगी. परमवीर चक्र, अशोक चक्र एवं अन्य वीरता पदकों की रिप्लिका भी लगाई जायेंगी जिससे युवाओं को अपनी सेना के बारे में पूरी जानकारी

मिल सकें और देश सेवा के लिए प्रेरणा एवं ऊर्जा मिल सके. आजाद भारत के बाद के विभिन्न युद्धों एवं वीरता की गाथाओं जैसे 1965 का भारत-चीन युद्ध, 1972 का पाकिस्तान के साथ युद्ध, कारगिल युद्ध आदि को प्रदर्शित किया जाएगा.

सागर एवं बुंदेलखंड का इतिहास, भारत की आजादी में उनके योगदान को रेखांकित करते हुए हमारे जननायकों की गाथाओं को भी इस संग्रहालय में स्थान दिया जाएगा. बैठक में डॉ. संजय शर्मा द्वारा पावर पॉइंट प्रजेंटेशन दिया गया जिसमें विभिन्न स्थलों के निर्माण योजना एवं रूपरेखा पर चर्चा हुई. बैठक के उपरांत कुलपति एवं सभी अतिथियों एवं सदस्यों ने संग्रहालय हेतु आरक्षित भवन का निरीक्षण भी किया. बैठक में प्रो. ए.डी. शर्मा, प्रो. विनोद भारद्वाज, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. नागेश दुबे, प्रो. बी. के. श्रीवास्तव, प्रो. हेरेल थामस, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, डॉ. राकेश सोनी, डॉ. विवेक जायसवाल डॉ. गौतम प्रसाद, डॉ. सुमन पटेल एवं विश्वविद्यालय के यंत्री विभाग के सहायक यंत्री दिनेश सिंघई, निधि जैन उपस्थित थे. प्रो. ए.डी. शर्मा ने माननीया कुलपति महोदया के साथ-साथ बैठक में पधारे बिग्रेडियर भल्ला, बिग्रेडियर बहुगुणा, कर्नल पॉल एवं विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुये आभार व्यक्त किया.

सामाजिक परिवेश को स्वच्छ रखना प्रत्येक नागरिक का उत्तरदायित्व: कुलपति

विश्वविद्यालय के एनसीसी-एनएसएस वालंटियर्स, शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारियों ने परेड मंदिर में किया श्रमदान

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के 3 एमपी सिग्नल कंपनी एनसीसी के कैडेट्स, एनएसएस स्वयंसेवकों, शिक्षकों एवं

कर्मचारियों ने सामाजिक सेवा और सामुदायिक विकास (SSCD) कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें 250 लोगों ने भाग लिया. ओस दौरान परेड मंदिर के भीतरी परिसर एवं बाहरी परिसर की साफ-सफाई की गई. विश्वविद्यालय के सहयोग से स्वच्छता सामग्री भी उपलब्ध कराई गई. परिसर में वाहन पार्किंग, कचरा न फेंकने और उचित जगह पर कचरा फेंकने हेतु डिस्प्ले बोर्ड एवं अन्य

आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध कराई गई. यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की कुलपति कर्नल प्रो. नीलिमा गुप्ता के निर्देशन में संपन्न हुआ.

कैडेट्स और स्वयंसेवकों ने उत्कृष्ट अनुशासन और समाज सेवा की भावना का प्रदर्शन किया, जिससे सामुदायिक कल्याण में उनका योगदान स्पष्ट रूप से दिखाई दिया. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस अवसर पर सभी कैडेट्स, स्वयंसेवकों और अधिकारियों की सराहना करते हुए समाज सेवा को प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा बताया. उन्होंने कहा कि अपने आस-पास के परिसर को स्वच्छ रखना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है. विश्वविद्यालय अपनी सामाजिक जिम्मेदारी और भूमिका का निर्वहन करते हुए इस तरह का अभियान लगातार चलाएगा. भारत सरकार के भी इस संबंध में दिशा निर्देश हैं कि हम शैक्षणिक संस्थान होने के नाते अपने समाज को स्वच्छता के प्रति जागरूक करें और स्वच्छता हेतु श्रमदान करें. वर्ष में 100 घंटे स्वच्छता हेतु श्रमदान करने का संकल्प अभियान भी पूरे देश में चल रहा है जो लोगों को प्रेरित कर रहा है. स्वच्छता कार्यक्रम के बाद कुलपति ने सभी वालंटियर्स को फल एवं मिष्ठान का वितरित किया.

इस दौरान एएनओ लेफ्टिनेंट गौतम प्रसाद, जेसीओ सूबेदार टापा, नायब सूबेदार जरनैल और एनसीओ सीएचएम आई.एम. शर्मा ने कार्यक्रम के संचालन में अहम भूमिका निभाई. इस अवसर पर प्रो डी के नेमा, प्रो सुशील काशव, डॉ एस पी उपाध्याय, डॉ राकेश सोनी, डॉ संजय शर्मा, डॉ गौतम प्रसाद, राहुल गोस्वामी, इंजी सिंघई सहित विवि के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे.

विश्वविद्यालय की 'राजभाषा यात्रा' पर तैयार होगा वृत्तचित्र : प्रो. नीलिमा गुप्ता

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक सम्पन्न

हिन्दी पखवाड़ा- 2024 के सफल आयोजन हेतु कुलगुरू ने की राजभाषा प्रकोष्ठ की सराहना

विश्वविद्यालय की 'राजभाषा यात्रा' पर तैयार होगा वृत्तचित्र यह बात माननीया कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कही. उन्होंने यह कथन विश्वविद्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 46वीं तिमाही बैठक की अध्यक्षता करते हुए दिया. उन्होंने आगे

बताया कि यह वृत्तचित्र राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में हमारे विश्वविद्यालय में किए जा रहे प्रयासों का एक समेकित दस्तावेज होगा. उन्होंने बताया कि राजभाषा हिन्दी का विकास तभी संभव है जब हम अन्य भारतीय भाषाओं के विकास पर भी समुचित ध्यान दें. बहुभाषिकता वर्तमान समय की आवश्यकता है. उन्होंने समस्त सदस्यों को अवगत कराया कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न रोचक एवं अभिनव गतिविधियों को देश भर के अन्य शैक्षणिक संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों में भी दोहराए जाने की अनुशंसा की है जो कि इस विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है. इस उपलब्धि के लिए तथा राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा सितम्बर माह में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा के सफल आयोजन के लिए प्रभारी राजभाषा अधिकारी संतोष सोहगौरा एवं राजभाषा प्रकोष्ठ के समस्त सदस्यों की सराहना कर उत्साहवर्धन किया.

समिति के सदस्य-सचिव एवं राजभाषा अधिकारी संतोष सोहगौरा ने हिन्दी पखवाड़ा-2024 के सफल आयोजन हेतु माननीया कुलगुरू महोदया की प्रेरणा एवं सतत मार्गदर्शन हेतु राजभाषा प्रकोष्ठ की ओर से आभार व्यक्त किया. उन्होंने बैठक के दौरान समस्त सदस्यों को अवगत कराया कि विश्वविद्यालय में बहुभाषिक कार्य-संस्कृति के विकास हेतु राजभाषा प्रकोष्ठ निरंतर प्रयासरत है. उन्होंने बताया कि माननीया कुलगुरू महोदया की प्रेरणा से विश्वविद्यालय में एक स्वतंत्र इकाई के रूप में भारतीय भाषा प्रकोष्ठ का गठन भी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। बैठक में कार्मिकों के प्रशिक्षण एवं राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु अन्य महत्वपूर्ण निर्णय भी लिए गए.

बैठक में प्रभारी कुलसचिव डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय, प्रो. वाय.एस. ठाकुर, प्रो. आनंद प्रकाश मिश्र, प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी, दीपक कुमार शाक्य, ब्रजभूषण सिंह, राजकुमार पाल, सचिन सिंह गौतम, रूपेन्द्र चौरसिया, राहुल गिरी गोस्वामी, डॉ. मोहन टी.ए., श्रीमती ए. लक्ष्मी, आशीष कुमार तिवारी, डॉ. संजय शर्मा, मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल, राजभाषा

प्रकोष्ठ से विनोद रजक एवं अन्य शिक्षक एवं अधिकारीगण उपस्थित रहे। आभार ज्ञापन राजभाषा प्रकोष्ठ के अभिषेक सक्सेना ने किया.

स्वच्छ परिसर एवं स्वस्थ परिसर की मुहिम के साथ कार्य करेगा विश्वविद्यालय- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर स्वच्छता अभियान स्पेशल कैंपेन 4.0 के अंतर्गत विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य केंद्र में आज विश्वविद्यालय स्वच्छता मित्रों के लिए स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया. मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन किया गया. शिविर में कुलपति एवं कुलसचिव का स्वागत विश्वविद्यालय के स्वच्छता कर्मियों द्वारा किया गया.

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस अवसर पर स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सकों और स्वास्थ्य कर्मियों की सराहना करते हुए इस शिविर को स्वस्थ विश्वविद्यालय बनाने का महत्वपूर्ण हिस्सा बताया. उन्होंने कहा कि अपने आस-पास के परिसर को स्वच्छ रखना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है. विश्वविद्यालय अपनी जिम्मेदारी और भूमिका का निर्वहन करते हुए इस तरह का प्रीवेंटिव स्क्रीनिंग शिविर लगातार चलाएगा. भारत सरकार के भी इस संबंध में दिशा निर्देश हैं कि हम शैक्षणिक संस्थान होने के नाते अपने सफाई मित्रों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करें. कुलसचिव डॉ. एसपी उपाध्यायने कहा कि सफाई मित्र हमारी व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग हैं.

मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं प्रभारी स्वास्थ्य केंद्र डॉ अभिषेक कुमार जैन ने सभी सफाई मित्रों को शिविर की जानकारी दी एवं कई स्वास्थ्य योजनाएं जैसे प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, आयुष्मान भारत योजना मिशन इंद्रधनुष आदि के बारे में बताया. शिविर में 64 मरीजों का परीक्षण किया गया जिसमें hba1c, रक्त शर्करा, लिपिड प्रोफाइल, बीएमआई आदि की जांच की गई. स्वास्थ्य शिविर के दौरान कुलपति एवं सदस्यों ने भी स्वास्थ्य परीक्षण कराया.

सफाई मित्रों में 14 लोगों को डायबिटीज, 18 का बीएमआई सामान्य से अधिक एवं 17 से अधिक लोगों को उच्च रक्तचाप पाया गया. शिविर में डॉक्टर जैन के द्वारा डायबिटीज़ एवं हृदय रोग संबंधी जानकारी दी गई. डॉ किरण माहेश्वरी द्वारा महिला

सफाई मित्रों एवं डॉ भूपेंद्र पटेल द्वारा उच्च रक्तचाप संक्रामक रोग आदि का परीक्षण और परामर्श दिया गया. शिविर में सफाई मित्रों को जागरूक करने हेतु टैली मानस, कंप्यूटर विजन सिंड्रोम, डेंगू की रोकथाम के प्रति जागरूकता, हाथों की सफाई की जागरूकता, मोटे अनाजों के उपयोग के बारे में जागरूक किया गया. शिविर में स्वास्थ्य कर्मी के रूप में अरुण सारोठिया भगत सिंह जयप्रकाश अर्जुन सिंह प्रमोद पटेल दुर्गेश चौबे वंदना कुर्मी और विभाग के सभी स्वास्थ्य कर्मी एवं विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य स्वच्छता कर्मी एवं विवि के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे.

-----//-----

खबरों में विश्वविद्यालय

सामाजिक विज्ञान में अर्थशास्त्र विषय का विशिष्ट स्थान – कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता

दबंग बुन्देलखंड

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर के अर्थशास्त्र विभाग के स्थापना दिवस के अवसर पर अभिमंच सभागार में व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्यार्थी अर्थशास्त्र विषय को कैसे जानें विषय पर आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि सामाजिक विज्ञान संकायों में अर्थशास्त्र विषय अपने आप में अनूठा है और अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। इसकी प्रकृति विज्ञान के काफी समीप है। इसलिए डॉ. गौर साहेब ने हमारे विश्वविद्यालय में भी अर्थशास्त्र विभाग की स्थापना की। अर्थशास्त्र विभाग के विद्यार्थी देश विदेश में बड़े बड़े पदों को सुशोभित कर विश्वविद्यालय का नाम रौशन कर रहे है। मैं चाहती हूं कि वर्तमान एवं भविष्य के विद्यार्थी भी अधिक से अधिक मेहनत

कर अर्थशास्त्र विषय को लेकर सफलताओं को प्राप्त करें. इस विषय के विधार्थी और शिक्षक दोनों ही मेहनती और अनुशासन प्रिय होते है। हम देश भर में अर्थशास्त्र विभाग को नई पहचान दिलाने का प्रयास करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में रानी अवंतीबाई लोधी विश्वविद्यालय सागर की कुलसचिव प्रो. शक्ति जैन ने कहा कि बच्चों को अर्थशास्त्र की शब्दावली शुरू में कठिन लग सकती हैं लेकिन उसे मन लगा कर ठीक से समझने की आवश्यकता है। जब विषय की शब्दावली को ठीक से समझ जाएंगे तो आपको यह विषय पढ़ने में बहुत ही सरल और वैज्ञानिक प्रतीत होगा। इसलिए विद्यार्थियों को विषय की तकनीकी को समझने पर विशेष जोर देना चाहिए। विशेष अथिति प्रो.अंजना चतुर्वेदी द्वारा छात्र जीवन से संबंधित अनेक प्रोत्साहन देने वाले रोचक प्रसंग सुनाते हुए डॉ. गौर साहब के योगदान को याद किया। विद्यार्थियों को संदेश दिया कि आप अपनी पढ़ाई के साथ-साथ अपने जीवन को भी जीने का प्रयास करें। क्योंकि समय सीमित है और वह वापस नहीं लौटता है। विद्यार्थी जीवन में अपना लक्ष्य बनाएं और उसके प्रति हमेशा सजक रहे और तब तक चलते रहें जब तक वह आपको हासिल नहीं हो जाता। कार्यक्रम का स्वागत भाषण अर्थशास्त्र विभाग के विभाग अध्यक्ष प्रो. प्रकाश शंकर कामले द्वारा दिया गया। कार्यक्रम की विषय वस्तु पर डॉ.केशव टेकाम ने प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन डॉ. वीणा थावरे एवं कार्यक्रम का आभार प्रदर्शन डॉ वीरेंद्र मटसेनिया ने किया।कार्यक्रम में अर्थशास्त्र विभाग के शोधार्थियों एवं स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों सहित विश्वविद्यालय के अन्य विषयों के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

पत्रिका

अर्थशास्त्र विभाग के स्थापना दिवस पर हुआ व्याख्यान

सामाजिक विज्ञान में अर्थशास्त्र विषय का विशिष्ट स्थान: प्रो. नीलिमा गुप्ता

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विवि में अर्थशास्त्र विभाग के स्थापना दिवस पर अभिमंच सभागार में व्याख्यान हुआ। कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि सामाजिक विज्ञान संकायों में अर्थशास्त्र विषय अपने आप में अनूठा है और अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। इसकी प्रकृति विज्ञान के काफी समीप है, इसलिए डॉ. गौर ने हमारे विश्वविद्यालय में भी अर्थशास्त्र विभाग की स्थापना की। अर्थशास्त्र विभाग के विद्यार्थी

देश विदेश में बड़े-बड़े पदों को सुशोभित कर विश्वविद्यालय का नाम रौशन कर रहे हैं।

मुख्य अतिथि रानी अवंतीबाई लोधी विवि की कुलसचिव प्रो. शक्ति जैन ने कहा कि बच्चों को अर्थशास्त्र की शब्दावली शुरू में कठिन लग सकती हैं, लेकिन उसे मन लगा कर ठीक से समझने की आवश्यकता हैं। जब विषय की शब्दावली को ठीक से समझ जाएंगे तो आपको यह विषय पढ़ने में बहुत सरल व वैज्ञानिक प्रतीत होगा। विशेष अतिथि प्रो. अंजना चतुर्वेदी ने कहा कि विद्यार्थी जीवन में अपना लक्ष्य बनाएं और उसके प्रति हमेशा सजग रहे और तब तक चलते रहें जब तक वह आपको हासिल नहीं हो जाता। स्वागत भाषण विभाग अध्यक्ष प्रो. प्रकाश शंकर कामले ने दिया। संचालन डॉ. वीणा थावरे ने किया।

देशबन्धु
Influencing Public Opinion Since 1959
05 Sep 2024 - Page 8

पत्रकारिता विभाग में डॉ. अंबेडकर मेमोरियल व्याख्यान का हुआ आयोजन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के पत्रकारिता विभाग एवं डॉ. अम्बेडकर चेयर द्वारा डॉ. अंबेडकर मेमोरियल लेक्चर का आयोजन पत्रकारिता विभाग के संगोष्ठी कक्ष में डॉ. बीआर अंबेडकर सामाजिक न्याय और पत्रकारिता विषय में आयोजित की गई। उक्त अवसर पर डॉ. भीमराव अंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण डॉ. संजय शर्मा एवं डॉ. देवेंद्र कुमार विश्वकर्मा द्वारा किया गया। प्रोढ़ शिक्षा विभाग के सहा. प्राध्यापक डॉ. संजय शर्मा ने कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर ने समाज में बढ़ती दूरियों को कम करने के लिये महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से समाज के अंतिम व्यक्ति को उठाने एवं गरीब कल्याण के लिए विशेष कार्य किया जिससे कि एक आम व्यक्ति भी शिक्षा के महत्व को समझ सकें। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से हर व्यक्ति को सामाजिक न्याय मिल सकें इसके लिये कार्य किया। डॉ. देवेंद्र कुमार विश्वकर्मा ने कहा कि पत्रकारिता के माध्यम से समाज सुधार और सामाजिक न्याय दिलाने के लिये डॉ. भीमराव अंबेडकर की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने 29 वर्ष की आयु में लेखन के माध्यम से समाज में शिक्षा और सामाजिक न्याय दिलाने हेतु कार्य किया। डॉ. अंबेडकर को अपने विचार जनता तक पहुंचाने के लिये कई पत्रिका निकालनी पड़ी जिसमें मूकनायक 1920, बहिष्कृत भारत 1924, संमता 1928 आदि प्रमुख है। डॉ. अम्बेडकर लेखन एवं संपादन के माध्यम से शिक्षा एवं सामाजिक न्याय सामाजिक समरसता आदि के महत्व को आम जनता तक पहुंचाना चाहते थे। आज भी हम देखते हैं कि सामाजिक न्याय के लिए पत्रकारिता महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। पत्रकारिता विभाग के डॉ. अलीम अहमद खान ने कहा कि अगर आदमी की सोच सामाजिक हो जाये तो वह गांधी, अंबेडकर और डॉ. गौर बन सकता है जो अपने लिये जीते है उसे बहुत कम लोग याद करते हैं परंतु जो समाज के लिये जीते है उनको पूरा समाज याद करता है। भारत में ज्ञान और योग्यता से व्यक्ति महान बनता है इसलिये हम सबको महापुरुषों के बारे में पढ़ना चाहिये। कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी छात्रा अनुष्का शर्मा ने एवं आभार प्रदर्शन सलोनी शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में पत्रकारिता विभाग के शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहें।

पत्रिका

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में हुई कार्यशाला, बच्चों ने किया मूर्तियों का निर्माण

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए बनाए इकोफ्रेंडली गणेश, मिट्टी की प्रतिमाओं का वितरण भी होगा

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. शहर में गणेश उत्सव की तैयारियां जोरों पर चल रही हैं। विघ्नहर्ता की स्थापना के लिए भक्त उत्साहित हैं। वहीं लोगों में आ रही जागरूकता की वजह से पर्यावरण पर ध्यान दिया जा रहा है। विधि-विधान से गणेश भगवान की स्थापना के लिए मिट्टी की मूर्तियों का निर्माण घरों में किया जा रहा है। साथ ही 6 सितंबर को शहर में विभिन्न स्थानों पर मिट्टी के गणेश की मूर्तियों का भी वितरण होगा।

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के महिला समाज ने मिलकर कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें इको फ्रेंडली गणेशजी की मूर्ति निर्माण करना सिखाया गया। मूर्ति निर्माण का प्रशिक्षण अजय जॉन ने दिया। अध्यक्ष ओमीका सिंह ने कहा कि अक्सर ऐसा देखा जाता है कि गणेशोत्सव में बनी मूर्तियां इको फ्रेंडली नहीं होती हैं। यदि आप इको फ्रेंडली गणेश प्रतिमा बाजार से लेना चाहें तो आसानी से उपलब्ध नहीं होती। हमने मिट्टी की मूर्ति बनाई हैं। इस कार्यशाला में अधिक से अधिक विद्यार्थियों को जोड़ने का प्रयास किया ताकि अगली पीढ़ी में भी जागरूकता बढ़े। कार्यशाला में अनुराधा उपाध्याय, कल्पना शर्मा एवं अंजली भागवत ने विशेष भूमिका निभाई।

मिट्टी की प्रतिमाएं होंगी वितरित

सागर @ पत्रिका. एकता कॉलोनी के चंद्र मौलीशवर उद्यान मंदिर से गणेश शरण मंडल के द्वारा नि:शुल्क मिट्टी के गणेश की प्रतिमाएं 6 सितंबर को वितरित की जाएंगी। मंडल के अध्यक्ष राम अवतार पांडे व एकता कॉलोनी विकास समिति के दिनेंद्र पांडे ने बताया कि शाम को 4 बजे से 5 बजे तक प्रतिमाएं वितरित होंगी।

कल होगा नि:शुल्क गणेश प्रतिमाओं का वितरण

सागर @ पत्रिका. तिलकगंज स्थित होटल राम सरोज पैलेस में प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी गणेश शरण मंडल एवं राम सरोज समूह द्वारा शुक्रवार शाम 4 बजे से शुद्ध मिट्टी से निर्मित गणेश मूर्ति का वितरण नि:शुल्क किया जाएगा। भाजपा के प्रदेश कार्य समिति सदस्य शैलेश केसरवानी ने बताया कि गणेश शरण मंडल हर वर्ष शुद्ध मिट्टी से निर्मित गणेश मूर्ति का वितरण करता आ रहा है। इस वर्ष राम सरोज समूह भी अपनी सहभागिता निभाते हुए इस पुण्य कार्य में शामिल हुआ है। मंडल के अध्यक्ष राम अवतार पांडे ने बताया कि प्रतिवर्ष गणेश शरण मंडल रविंद्र भवन में कार्यक्रम को आयोजित करता था। इस वर्ष होटल रामसरोज पैलेस में आयोजित किया जा रहा है।

चुनौतीपूर्ण समय में शिक्षकों को अपनी भूमिका का विस्तार करना होगा-कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता

जन चिंगारी- 9302303212

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में शिक्षक दिवस पर विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में 'अध्यापकः- धर्म, कर्म एवं मर्म' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी थे कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की इस अवसर पर निदेशक फैकल्टी अफेयर्स प्रो. अजीत जायसवाल भी मंचासीन थे. कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन, देवी सरस्वती, डॉ. हरीसिंह गौर एवं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की मूर्ति पर माल्यार्पण कर किया गया, संस्कृत विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. किरण आर्या ने स्वस्तिवाचन किया. स्वागत भाषण प्रो. अजीत जायसवाल ने दिया. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन पर केंद्रित वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया।

पूर्व कुलाधिपति प्रो. जानी ने कहा कि भारतीय ज्ञान व्यवस्था में शिक्षकों की भूमिका और स्थान वैदिक काल से ही रही है. शिक्षक दिवस के अवसर पर आज यह देखने की आवश्यकता है कि भारतीय ज्ञान के प्रसार में शिक्षक की क्या भूमिका है। पूरे विश्व में शिक्षक की संकल्पना केवल भारत में ही रही है. एक तरफ जहाँ पूरा विश्व औपनिवेशीकरण की ओर अग्रसर वहीं भारत वि-औपनिवेशीकरण के रास्ते पर है और वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना को साकार कर रहा है. वैदिक काल से ही ज्ञान का आदान-प्रदान होता आ रहा है. हर एक क्षेत्र में गुरु ही मार्गदर्शन देता रहा है. सबसे प्राचीन दान विद्यादान ही माना गया है, इससे यह प्रमाणित होता है कि अध्यापक के धर्म, कर्म और मर्म को भारत ने ही विश्व में स्थापित किया है। उन्होंने धर्मपाल द्वारा लिखित पुस्तक 'द ब्यूटीफुल ट्री' का उल्लेख करते हुए भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि अध्यापक का मतलब केवल पाठ्यक्रम का अध्यापन करना ही नहीं है बल्कि विद्यार्थी के बारे में संवेदनशील होकर विचार करना भी है। उसे भारतीयता के बोध के साथ राष्ट्र की सेवा के लिए तैयार करना भी है. यही शिक्षक का धर्म है। आज विश्व के प्रत्येक कोने में भारतीय मूल के अध्यापक हैं, अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पहले चाक और डस्टर से ही शिक्षक पहचाना जाता था लेकिन आज समय बदल गया है, आज का शिक्षक लैपटॉप, कम्प्यूटर एवं शिक्षा के लिए जरूरी अन्य तकनीकी उपकरणों से लैस है। एक समय था जब कोरोना काल में शिक्षकों ने अपनी भूमिका का निर्वहन करते हुए अध्यापन कार्य को जारी रखा। आज मल्टीस्किल्ड और मल्टी डायमेंशनल शिक्षकों की आवश्यकता है।

आयोजन । केंद्रित वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया

शिक्षकों को अपनी भूमिका का विस्तार करना होगाः गुप्ता

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में शिक्षक दिवस पर्व 5 सितंबर के अवसर पर विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में 'अध्यापकः- धर्म, कर्म एवं मर्म' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. इस अवसर पर निदेशक फैकल्टी अफेयर्स प्रो. अजीत जायसवाल भी मंचासीन थे. कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन, देवी सरस्वती, डॉ. हरीसिंह गौर एवं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी मूर्ति पर माल्यार्पण कर किया गया. संस्कृत विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. किरण आर्या ने स्वस्तिवाचन किया. स्वागत भाषण प्रो. अजीत जायसवाल ने दिया. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन पर केंद्रित वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया।

पूर्व कुलाधिपति प्रो. जानी ने कहा कि भारतीय ज्ञान व्यवस्था में शिक्षकों की भूमिका और स्थान वैदिक काल से ही रही है. शिक्षक दिवस के अवसर पर आज यह देखने की आवश्यकता है कि भारतीय ज्ञान के प्रसार में शिक्षक की क्या भूमिका है. पूरे विश्व में शिक्षक की संकल्पना केवल भारत में ही रही है। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पहले चाक और डस्टर से ही शिक्षक पहचाना जाता था लेकिन आज समय बदल गया है. आज का शिक्षक लैपटॉप, कम्प्यूटर एवं शिक्षा के लिए जरूरी अन्य तकनीकी उपकरणों से लैस है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की सेवा से निवृत्त प्राध्यापकों प्रो. गिरीश मोहन दुबे (अर्थशास्त्र विभाग), डॉ. ललित मोहन (ललित कला एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग), प्रो. संजय कुमार जैन (फार्मास्युटिकल साइंस विभाग), तथा प्रो. एस. एच. आदिल (व्यावहारिक भू-गर्भ शास्त्र विभाग) को शाल, श्रीफल एवं अभिनंदन-पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया.शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. रजनीश ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया. प्रो. अनिल कुमार जैन ने शिक्षा एवं शिक्षक पर केन्द्रित स्वरचित कविता का पाठ किया. कार्यक्रम के अंत में भारतीय सांकेतिक भाषा में राष्ट्रगान हुआ. कार्यक्रम का संचालन डॉ. वंदना राजोरिया एवं आभार डॉ. राकेश सोनी ने किया. कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

विकास योजना पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में कुलपति ने कहा...

उत्कृष्टट शोध एवं नवाचार से बनेगी उच्च शिक्षा संस्थानों की पहचानः प्रो. नीलिमा गुप्ता

विजय मत, सागर

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा आयोजित उच्च शिक्षा के लिए संस्थागत विकास योजना पर आधारित कार्यशाला का आयोजन इनसा ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में किया गया. कार्यशाला में शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग के सचिव श्री के. संजय मूर्ति और यूजीसी के अध्यक्ष प्रो. एम. जगदीश कुमार ने उद्घाटन सत्र को संबोधित किया. कार्यशाला में में देश भर के 250 से अधिक विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों के प्रमुख उपस्थित रहे. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने एक सत्र को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय विकास योजना के बारे में पावर पॉइंट की प्रस्तुति दी जिसमें उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा संस्था विकास हेतु बेस्ट प्रेक्टिसेस का उल्लेख किया. उन्होंने कहा कि सांस्थानिक कार्यपद्धति और अकादमिक नवाचार से उच्च शिक्षण संस्थान विकास कर सकेंगे. ढांचागत विकास, उत्कृष्ट शोध एवं नवाचार से ही उच्च शिक्षा संस्थानों की पहचान बनेगी. विश्वविद्यालय विकास योजना प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि हमारा विश्वविद्यालय हरियाली से समृद्ध है और डॉ. गौर जैसे दानवीर एवं शिक्षाविद द्वारा स्थापित है जो मध्यप्रदेश का सबसे पुराना एवं बड़ा विश्वविद्यालय है. यह देश का पांचवां सबसे बड़ा परिसर है. उन्होंने अनुसंधान, वित्तीय, डिजिटल, अकादमिक, भौतिक, मानव संसाधन, प्रबंधन, नेटवर्किंग और सहयोग जैसे आयामों के क्षेत्र में विश्वविद्यालय द्वारा अपनाई जा नीतियों एवं क्रियान्वयन पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि विश्व का सबसे पहला योग विभाग हमारे विश्वविद्यालय में है और फार्मेसी, एप्लाइड जियोलॉजी, क्रिमनोलॉजी, लॉ, प्रदर्शनकारी कला जैसे ख्यातिलब्ध विभाग, जिसके छात्र अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं, के साथ पांच उत्कृष्ट संग्रहालय, बॉटनिकल गार्डन अवस्थित हैं. विवि ने 5 दिवसीय चरित्र निर्माण कार्यशाला, प्रथम महिला संसद जैसे बड़े आयोजन किये. विवि में दो शिक्षक राष्ट्रपति पुरस्कार से समानित हो चुके हैं और कुलपति सहित विवि के कई शिक्षकों के नाम विश्व के श्रेष्ठ दो प्रतिशत वैज्ञानिकों में शामिल हैं. विश्वविद्यालय के एक छात्र को कौन बनेगा करोडपति में भी उपलब्धि हासिल हुई है. उन्होंने विवि की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नियामक संस्थाओं की मान्यता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि विवि में भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत अनेकों परियोजनाएं स्वीकृत और संचालित हैं. विश्वविद्यालय में भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के तहत एक भारत श्रेष्ठ भारत, आज़ादी का अमृत महोत्सव, स्वच्छ भारत मिशन, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, उन्नत भारत अभिवन, हर घर तिरंगा, विश्व पुस्तक दिवस, राष्ट्रीय दिवसों पर आधारित कार्यक्रमों का लगातार आयोजन किया जा रहा है. नशा मुक्त भारत अभियान, राष्ट्रीय कोविड टीकाकरण मिशन, एनीमिया मुक्त भारत अभियान, मिलेट्स के प्रति जागरूकता और उपयोग जैसे पहल को क्रियान्वित करते हुए सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम भी किये जा रहे हैं. फिट इंडिया मूवमेंट, खेलो इंडिया, स्टार्टअप इंडिया जैसे नवाचार को लागू करते हुए गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं. विवि अनुदान आयोग के निर्देशानुसार एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट, उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान, मिश्रित शिक्षण, प्रोफ़ेसर ऑफ़ प्रैक्टिस एवं अन्य पद्धतियों को अपनाया गया है।

ढांचागत विकास, उत्कृष्ट शोध एवं नवाचार से बनेगी उच्च शिक्षा संस्थानों की पहचान : प्रो. नीलिमा गुप्ता

यूजीसी द्वारा संस्थागत विकास योजना पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में कुलपति ने दिया उद्बोधन

सागर(एसबीन्यूज)। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा आयोजित उच्च शिक्षा के लिए संस्थागत विकास योजना पर आधारित कार्यशाला का आयोजन इनसा ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में किया गया. कार्यशाला में शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग के सचिव के. संजय मूर्ति और यूजीसी के अध्यक्ष प्रो. एम. जगदीश कुमार ने उद्घाटन सत्र को संबोधित किया. कार्यशाला में में देश भर के 250 से अधिक विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों के प्रमुख उपस्थित रहे. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने एक सत्र को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय विकास योजना के बारे में पावर पॉइंट की प्रस्तुति दी जिसमें उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा संस्था विकास हेतु बेस्ट प्रेक्टिसेस का उल्लेख किया. उन्होंने कहा कि सांस्थानिक कार्यपद्धति और अकादमिक नवाचार से उच्च शिक्षण संस्थान विकास कर सकेंगे. ढांचागत विकास, उत्कृष्ट शोध एवं नवाचार से ही उच्च शिक्षा संस्थानों की पहचान बनेगी। विश्वविद्यालय विकास योजना प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि हमारा विश्वविद्यालय हरियाली से समृद्ध है और डॉ. गौर जैसे दानवीर एवं शिक्षाविद द्वारा स्थापित है जो मध्यप्रदेश का सबसे पुराना एवं बड़ा विश्वविद्यालय है. यह देश का पांचवां सबसे बड़ा परिसर है. उन्होंने अनुसंधान, वित्तीय, डिजिटल, अकादमिक, भौतिक, मानव संसाधन, प्रबंधन, नेटवर्किंग और सहयोग जैसे आयामों के क्षेत्र में विश्वविद्यालय द्वारा अपनाई जा नीतियों एवं क्रियान्वयन पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि विश्व का सबसे पहला योग विभाग हमारे विश्वविद्यालय में है और फार्मेसी, एप्लाइड जियोलॉजी, क्रिमनोलॉजी, लॉ, प्रदर्शनकारी कला जैसे ख्यातिलब्ध विभाग, जिसके छात्र अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं, के साथ पांच उत्कृष्ट संग्रहालय, बॉटनिकल गार्डन अवस्थित हैं. विवि ने 5 दिवसीय चरित्र निर्माण कार्यशाला, प्रथम महिला संसद जैसे बड़े आयोजन किये. विवि में दो शिक्षक राष्ट्रपति पुरस्कार से समानित हो चुके हैं और कुलपति सहित विवि के कई शिक्षकों के नाम विश्व के श्रेष्ठ दो प्रतिशत वैज्ञानिकों में शामिल हैं. विश्वविद्यालय के एक छात्र को कौन बनेगा करोड़पति में भी उपलब्धि हासिल हुई है।

उन्होंने विवि की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नियामक संस्थाओं की मान्यता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि विवि में भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत अनेकों परियोजनाएं स्वीकृत और संचालित हैं. विश्वविद्यालय में भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के तहत एक भारत श्रेष्ठ भारत, आज़ादी का अमृत महोत्सव, स्वच्छ भारत मिशन, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, उन्नत भारत अभिवन, हर घर तिरंगा, विश्व पुस्तक दिवस, राष्ट्रीय दिवसों पर आधारित कार्यक्रमों का लगातार आयोजन किया जा रहा है. नशा मुक्त भारत अभियान, राष्ट्रीय कोविड टीकाकरण मिशन, एनीमिया मुक्त भारत अभियान, मिलेट्स के प्रति जागरूकता और उपयोग जैसे पहल को क्रियान्वित करते हुए सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम भी किये जा रहे हैं।

फिट इंडिया मूवमेंट, खेलो इंडिया, स्टार्टअप इंडिया जैसे नवाचार को लागू करते हुए गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं। कार्यशाला में देश के कई विश्वविद्यालयों के कुलपति, अधिकारी, शिक्षक प्रतिनिधि और उच्च शिक्षा से जुड़े शिक्षाविद् मौजूद रहे।

जनमानस के आत्मविश्वास का परिचायक है साक्षरताः प्रो. नीलिमा गुप्ता

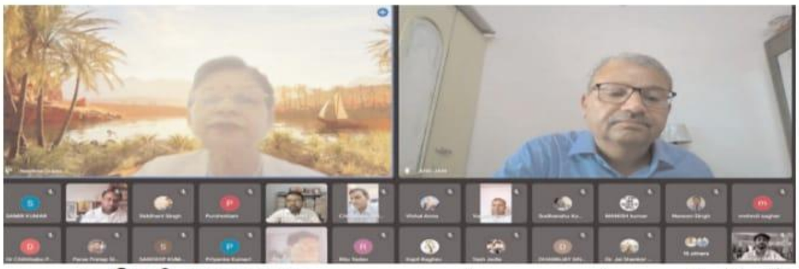

जन चिंगारी- 9302303212

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जीवनपर्यंत शिक्षा विभाग द्वारा अपने 40वें स्थापना दिवस एवं 58वें अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं विश्वविद्यालय की माननीया कुलगुरु एवं कर्नल प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में भारत ने साक्षरता की ओर अपना ध्यान केंद्रित किया है। जिसके परिणामस्वरूप देश की साक्षरता दर में सुधार भी हुआ है। किंतु इसके बावजूद भी ग्रामीण शहरी, महिला पुरुष आदि आधारों पर एक बहुत बड़ा अन्तराल मौजूद है। जिसे हमें समझने की जरूरत है।

हमें यह देखना होगा कि एक ओर जहां हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ आगे बढ़ रहे हैं, हम तकनीकी विकास एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे कई बड़े मुद्दों पर बात कर रहे हैं, लेकिन वहीं दूसरी तरफ हमारे देश में वह वर्ग भी मौजूद है जो अशिक्षित है। प्रो. गुप्ता ने बताया कि साक्षरता हमारी भाषा के साथ प्रत्यक्ष एवं गहन रूप से जुड़ी हुई है। पारस्परिक समझ तभी विकसित हो सकती है, जब परस्पर संवाद एवं संचार होता है।

इसलिए हमें साक्षरता के विमर्श को भाषा के विमर्श के साथ जोड़कर ही देखना और समझना होगा।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के सीनियर प्रोफेसर और सतत शिक्षा विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. राजेश कुमार ने पारस्परिक समझ और शांति के लिए कार्य करे साक्षरता विषय पर व्याख्यान देते हुए बताया कि जब हम इक्कीसवी सदी में गैर-साक्षर की बात करते हैं तो इससे हमारा आशय किसी व्यक्ति में पढ़ने, लिखने और संख्यात्मक संक्रियाएं करने की क्षमता के अभाव से नहीं है। आज गैर-साक्षर होने का तात्पर्य अधिगम, वि-अधिगम एवं पुनःअधिगम न करने वाले व्यक्ति से है। साक्षरता की यह संकल्पना भाषा के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है। प्राचीन भारतीय परंपरा में साक्षरता, भाषा और परस्पर समझ एवं शांति के अंतर्संबंधों को स्पष्ट तौर पर वर्णित किया गया है। इस संदर्भ में उन्होंने बताया कि 1948 से संयुक्त राष्ट्र के महाधिकार पत्र द्वारा शांति एवं वर्ष 2015 से सतत विकास लक्ष्य 16 में शांतिपूर्ण एवं समावेशी समाज के प्रोत्साहन एवं लक्ष्य 4 के तहत गुणवत्तापूर्ण एवं आजीवन शिक्षा की बात दुनिया ने करना शुरू किया है।

इस सभी बिंदुओं पर हमारी भारतीय ज्ञान एवं दर्शन परंपरा में प्रारंभ से ही विमर्श विद्यमान थे। शांति कोई एकाकी अवधारणा नहीं है बल्कि यह व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनैतिक, संस्थागत और पारिस्थितिक तंत्रीय इन सभी आयामों से सरोकार रखती हैं। इसकी स्थापना शिक्षा के लिए शिक्षा के चार स्तंभ यानी कि जानने के लिए सीखना, करने के लिए सीखना, साथ रहने के लिए सीखना और मनुष्य बनने के लिए सीखना बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पाओलो फ्रेरे भी इस बात पर बल देते हैं कि शिक्षा का मकसद व्यक्ति को चुप्पी की संस्कृति से बाहर निकाल कर एक आलोचनात्मक, संवादात्मक एवं सहभागितामूलक दृष्टिकोण की ओर ले जाना है। कार्यक्रम में सहभागिता कर रहे प्रसिद्ध पर्यावरणविद एवं रमन मैग्सेस अवार्ड से सम्मानित जलपुरुष श्री राजेन्द्र सिंह जी अपने व्याख्यान में बताया कि काल दर काल साक्षरता की परिभाषा और संकल्पना बदलती रही है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने इक्कीसबी शताब्दी में साक्षरता की एक नवीन परिभाषा गढ़ी है, जिसमें वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, जीवन कौशल और विवेचनातमक चिंतन शामिल है।

शारीरिक शिक्षा विभाग में मनाया शिक्षक दिवस

सागर, आचरण। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के शारीरिक शिक्षा विभाग में बीपीईएस के छात्र/छात्राओं द्वारा शिक्षक दिवस मनाया गया। इस अवसर विभाग के सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों द्वारा डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के चित्र पर पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किए। इसके पश्चात विद्यार्थियों ने शारीरिक शिक्षा विभाग के सभी शिक्षकों को तिलक लगाकर, पुष्पगुच्छ एवं श्रीफल प्रदान कर उनका सम्मान आभार जताया। कु. मुस्कान जड़िया, विशाखा तनवर, उन्नती सेन, मेघा, आदेश साहू, मृदुल यादव, उदय शंकर, नरेंद्र गौड़ एवं अमन मिश्रा ने डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला और अपने गुरुजन एवं विभाग का धन्यवाद ज्ञापित किया। तत्पश्चात डॉ सुमन पटेल, महेंद्र कुमार, विनय शुक्ला, अनवर खान, मनोज जैन ने सभी छात्र/छात्राओं को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित कर विद्यार्थियों को सदमार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन समीर तिवारी एवं आभार प्रदर्शन मुस्कान जड़िया ने किया।

विश्वविद्यालयः दर्शनशास्त्र विभाग में शिक्षक दिवस मनाया गया

सत्ता सुधार ■ सागर

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर दर्शनशास्त्र विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा के द्वारा भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं दर्शनशास्त्र के ख्यातिविद् शिक्षक रहे डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के चित्र पर उनके जन्म दिन के अवसर पर तिलक लगाकर एवं माल्यार्पण कर, पुष्पांजलि देकर उनके प्रति प्रेम आदर एवं सम्मान भाव प्रकट किया।इस अवसर पर विभाग में उपस्थित शिक्षकों,शोधार्थियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष एवं कर्मचारियों के द्वारा भी दर्शनशास्त्र विभाग में डॉ. राधाकृष्णन के चित्र पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की गई। उसके बाद दर्शनशास्त्र विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा का विभाग के अतिथि शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने तिलक, माल्यार्पण एवं श्रीफल भेंट कर उनके प्रति आदर एवं सम्मान व्यक्त किया।

बेहतर कल के लिए ऊर्जा के प्राकृतिक स्रोतों का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग आवश्यक, इसके लिए नवाचारी एवं उन्नत शोध की दिशा में काम करना होगा

▸ सागर, संवाददाता (प्रदेश वॉच)।

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के अपराध शास्त्र और फोरेंसिक विज्ञान विभाग एवं वाणिज्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस का शुभारंभ विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में हुआ. 'एनवायरमेंटल सस्टेनिबिलिटी, ग्रीन टेक्नोलॉजी, इनोवेशन एंड स्टार्ट-अप वेंचर्स ऑन एंड बियांड अर्थ' विषय पर आयोजित इस कांफ्रेंस में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. बेनोइट शॉफ्स, यूनिवर्सिटी ऑफ़ ले मैंस, फ्रांस, सारस्वत अतिथि वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. पी. आर. अग्रवाल तथा सेंटर फॉर एनर्जी एंड एनवायरमेंटल सस्टेनेबिलिटी के कार्यकारी निदेशक प्रो. अशोक पांडे उपस्थित रहे. उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति प्रो. वाय. एस. ठाकुर ने की. इस अवसर पर वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. जे. के. जैन, प्रो. ममता पटेल, डॉ. हरीश एवं कांफ्रेंस संयोजक मंचासीन थे. मुख्य वक्ता प्रो. अशोक पांडेय ने कहा कि आज पर्यावरण की चुनौती से पूरा विश्व जूझ रहा है। एक बेहतर भविष्य के लिए जरूरी है कि हम जलवायु, पर्यावरण, एनर्जी जैसे विषयों पर शोध आधारित समाधान खोजें। भारत जलवायु विभिन्नता और जैव विविधता वाला देश है।

यूजी की 543 सीटों के लिए काउंसलिंग 18 और 19 सितंबर को

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में यूजी की खाली 543 सीटों पर प्रवेश के लिए दूसरे चरण की काउंसलिंग 18 एवं 19 सितंबर को होगी।

काउंसलिंग का शड्यूल और कोर्स की खाली सीटों की जानकारी के साथ ही कट ऑफ सूची विवि की वेबसाइट पर अपलोड कर दी गई है। बीए की काउंसलिंग 18 और 19 सितंबर दोनों ही दिन होगी, जबकि बीबीए, बैचलर्स ऑफ होटल मैनेजमेंट एंड कैटरिंग टेक्नोलॉजी पाठ्यक्रमों की काउंसलिंग 19 सितंबर को होगी। यूजी के शेष अन्य पाठ्यक्रमों की काउंसलिंग 18 सितंबर को होगी। बीए में सर्वाधिक 203 सीटें खाली हैं। इसके बाद बीएससी मैथ्स में 69, बीएससी बायोलॉजी में 59, बीकॉम एवं बैचलर होटल मैनेजमेंट में 57-57 सीटें खाली हैं। इनके अलावा बीबीए में 7, बीसीए में 16, बीएफए में 15, लॉ ऑनर्स में 8, बीफार्मा में 2, बीएससी बीएड मैथ्स में 4, बीएससी बीएड बॉयो में 1, बीए-बीएड में 5 एवं बीए वैदिक स्टडीज में 40 सीटों पर काउंसलिंग होगी।

बेहतर कल के लिये ऊर्जा के प्राकृतिक स्रोतों का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग आवश्यक: प्रो. पाण्डेय

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के अपराध शास्त्र और फोरेंसिक विज्ञान विभाग एवं वाणिज्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस का शुभारंभ अभिमंच सभागार में हुआ। एनवायरमेंटल सस्टेनिबिलिटीए ग्रीन टेक्नोलॉजी, इनोवेशन एंड स्टार्ट.अप वेंचर्स ऑन एंड बियांड अर्थ विषय पर आयोजित इस कांफ्रेस में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. बेनोइट शॉफ्स, यूनिवर्सिटी ऑफ ले मैंस, फ्रांस, सारस्वत अतिथि वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विवि के पूर्व कुलपति प्रो. पीआर अग्रवाल तथा सेंटर फॉर एनर्जी एंड एनवायरमेंटल सस्टेनेबिलिटी के कार्यकारी निदेशक प्रो. अशोक पांडे उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विवि के प्रभारी कुलपति प्रो. वायएस ठाकुर ने की। मुख्य वक्ता प्रो. अशोक पांडेय ने कहा कि आज पर्यावरण की चुनौती से पूरा विश्व जूझ रहा है। एक बेहतर भविष्य के लिये जरूरी है कि हम जलवायु, पर्यावरण, एनर्जी जैसे विषयों पर शोध आधारित समाधान खोजें। भारत जलवायु विभिन्नता और जैव विविधता

वाला देश है। विविधता में एकता भारत की पहचान है। हमें थिंक ग्लोबली एंड वर्क लोकली प्रविधि पर काम करने की आवश्यकता है। फ्रांस से पधारे प्रो. बेनेट शॉफ्स ने कहा कि इस कांफ्रेस के उद्देश्य बहुत व्यापक हैं और यहां होने वाले विचार विमर्श पूरी दुनिया के अस्तित्व को बचाये और बनाये रखने की चुनौतियों का सामना करने का मार्ग प्रशस्त करेंगे। उन्होंने कांफ्रेस के सभी प्रायोजकों का धन्यवाद देते हुये कहा कि यह सुखद है कि एक समकालीन और प्रासंगिक विषय पर चर्चा हेतु देश विदेश के उत्कृष्ट शोध संस्थान एक साथ एक मंच पर इकट्ठा हुये हैं। प्रो. पीआर अग्रवाल ने अपने ज्ञान व अनुभवों के आधार पर प्रतिभागियों को बायो फ्यूल से जुड़े नवीनतम वैश्विक रुझानों, चुनौतियां एवं संभावनाओं से अवगत कराया। प्रभारी कुलपति प्रो. वायएस ठाकुर ने कहा कि इस कांफ्रेस में होने वाली चर्चाओं में निश्चित तौर पर स्टार्टअप्स को वास्तविकता में बदलने में आने वाली चुनौतियों का समाधान करने में मदद मिलेगी। उद्घाटन सत्र में प्रो. जेके जैन द्वारा संपादित पुस्तक सस्टेनेबल अकाउंटिंग एंड फाइनेंस का विमोचन किया गया। इस दौरान विश्वविद्यालय के विभिन्न विज्ञान विषयों के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

बेहतर कल के लिए ऊर्जा के प्राकृतिक स्रोतों का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग आवश्यकः प्रो. अशोक पाण्डेय

जन चिंगारी- 9302303212

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के अपराध शास्त्र और फोरेंसिक विज्ञान विभाग एवं वाणिज्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस का शुभारंभ विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में हुआ। 'एनवायरमेंटल सस्टेनिबिलिटी, ग्रीन टेक्नोलॉजी, इनोवेशन एंड स्टार्ट-अप वेंचर्स ऑन एंड बियांड अर्थ' विषय पर आयोजित इस कांफ्रेंस में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. बेनोइट शॉफ्स, यूनिवर्सिटी ऑफ़ ले मैंस, फ्रांस, सारस्वत अतिथि वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. पी. आर. अग्रवाल तथा सेंटर फॉर एनर्जी एंड एनवायरमेंटल सस्टेनेबिलिटी के कार्यकारी निदेशक प्रो. अशोक पांडे उपस्थित रहे. उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति प्रो. वाय. एस. ठाकुर ने की. इस अवसर पर वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. जे. के. जैन, प्रो. ममता पटेल, डॉ. हरीश एवं कांफ्रेस संयोजक मंचासीन थे।

मुख्य वक्ता प्रो. अशोक पांडेय ने कहा कि आज पर्यावरण की चुनौती से पूरा विश्व जूझ रहा है। एक बेहतर भविष्य के लिए जरूरी है कि हम जलवायु, पर्यावरण, एनर्जी जैसे विषयों पर शोध आधारित समाधान खोजें। भारत जलवायु विभिन्नता और जैव विविधता वाला देश है। विविधता में एकता भारत की पहचान है। हमें 'थिंक ग्लोबली एंड वर्क लोकली' प्रविधि पर काम करने की आवश्यकता है। वाटर, सोलर और विंड एनर्जी का बुद्धिमत्तापूर्ण दोहन और इसका इस्तेमाल वैज्ञानिक और उन्नत शोध के बिना संभव नहीं है।

इस दिशा में बहुत से रिसर्च हो रहे हैं लेकिन हमें एक मूल्यवान निष्कर्ष के साथ अपने कल को सुरक्षित रखने की दिशा में काम करना है। अपशिष्ट प्रबंधन, जल और वायु से संबंधित जितने भी नवाचारी रास्ते हम शोध के माध्यम से खोजेंगे हमारा अस्तित्व उतना ही मजबूत होगा। उन्होंने पर्यावरणीय सततता के महत्व पर जोर दिया और बायोफ्यूल और एथेनॉल मिश्रण ईंधन के विकास पर गहन चर्चा की आपने बताया कि कैसे इन वैकल्पिक इंधनों के उपयोग से प्रदूषण को कम किया जा सकता है और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार को बढ़ाया जा सकता है जिससे नए स्टार्टअप्स को बढ़ावा मिलेगा।

सागर, शनिवार 14 सितम्बर , 2024 । 2

विश्वविद्यालयः नव प्रवेशित विद्यार्थियों ने समागम उत्सव में दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

आचरण संवाददाता

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा नवप्रवेशित विद्यार्थियों हेतु 'विद्यार्थी समागम उत्सव' का आयोजन विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती सभागार में हुआ. विभाग द्वारा संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों में नव-प्रवेशित एवं अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य परस्पर संवाद को बढ़ावा देने, विभाग की अकादमिक एवं भौतिक अधो-संरचना से परिचित कराने हेतु आयोजित कार्यक्रम में अतिथि के रूप में निदेशक, संकाय मामले प्रो. अजीत जायसवाल ने कहा कि विद्यार्थियों की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में उन्मुख करने और उन्हें नवाचारी बनाने हेतु इस प्रकार के कार्यक्रम पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रभारी कुलपति प्रो. वाई.एस. ठाकुर ने विद्यार्थियों की बहुमुखी प्रतिभा एवं सांस्कृतिक धर्मिता की प्रशंसा की और कहा कि समन्वित समाज के निर्माण में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा प्रेमचंद द्वारा लिखित ÷बोध÷ नाटक, डॉ आनंदी जोशी की आत्मकथा पर नाटक, शास्त्रीय एवं समूह नृत्य, एकल नृत्य, भजन, स्वरचित कविता पाठ एवं राष्ट्रभक्ति आधरित प्रस्तुतियां की गयी. कार्यक्रम के अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल जैन ने विद्यार्थियों द्वारा निर्देशित, संचालित एवं आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा की इस प्रकार के कार्यक्रम विद्यार्थियों में सकरात्मक नेतृत्त्व क्षमता एवं उनके चहुमुखी विकास हेतु आवश्यक है. कार्यक्रम का आयोजन शिक्षा विभाग के छात्रों अनुराग चौरसिया, समीक्षा नेमा, शिखा साहू, राहुल दुबे, कार्तिक शर्मा, मानसी तिवारी, अंजलि सिंह और आदर्श शुक्ला शामिल एवं समस्त विद्यार्थियों द्वारा किया गया. इस अवसर पर सांस्कृतिक परिषद् के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी, जनसंपर्क अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल एवं शिक्षा विभाग के समस्त संकाय सदस्य एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय में हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों में सहभागिता का आह्वान

आचरण संवाददाता

सागर। विश्वविद्यालय में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन से राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी भाषा पर्व (राष्ट्रीय हिन्दी दिवस 14 सितम्बर) पर विश्वविद्यालय में दिनांक 14 से 25 सितम्बर, 2024 तक 'हिन्दी पखवाड़ा' का आयोजन किया जा रहा है। हिन्दी पखवाड़े के अंतर्गत विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक- 04 के छात्र-छात्राओं हेतु विभिन्‌ प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है जिसका विवरण विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर भी उपलब्ध है। ध्यातव्य है कि हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ अखिल भारतीय स्तर पर दिनांक 14 सितम्बर, 2024 को अमित शाह, गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार की अध्यक्षता में भारत मण्डपम, नई दिल्ली से किया जा रहा है। विश्वविद्यालय में कार्यक्रम का सीधा प्रसारण 14 सितंबर सुबह 11 बजे से गौर समिति कक्ष में किया जा रहा है।

कार्यक्रम के संयोजक एवं प्रभारी हिन्दी अधिकारी संतोष सोहगौरा ने बताया कि हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत स्व-रचित रचना पाठ, हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, आशुभाषण प्रतियोगिता, हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता तथा निम्न श्रेणी लिपिकों हेतु टिप्पण, प्रारूपण एवं कार्यालयीन पत्राचार पर कार्यशाला तथा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान जैसे रूचिकर कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र दिनांक 25 सितम्बर, 2024 को आयोजित 'पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह में माननीया कुलपति जी द्वारा प्रदान किए जायेंगे।

रोजगार के लिए स्टार्टअप्स के माध्यम से नए यूग में प्रवेश-प्रो. पी आर अग्रवाल

दबंग बुन्देलखंड

सागर। डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के अपराध शास्त्र और फोरेंसिक विज्ञान विभाग एवं वाणिज्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में पर्यावरणीय स्थिरता, हरित प्रौद्योगिकी, नवाचार एवं स्टार्ट-अप वेंचर्सः पृथ्वी पर और उससे परे' विषय पर चल रहे दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन द्वितीय,तृतीय और चतुर्थ तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। सम्मेलन के सत्र विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार और कौटिल्य भवन में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनो माध्यम में एकसाथ आयोजित किया गया। तकनीकी सत्र में प्रमुख वक्ताओं के रूप में ए.एस.बी.एन. विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.आर.के. बाल और प्रो. पी.आर. अग्रवाल (पूर्व कुलपति, पूर्वांचल विश्वविद्यालय) उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता प्रो.आर.के.बल ने अपने विचार स्टार्ट-अप वेंचर्सः नवाचार और स्थिरता पर रखते हुए कहा कि स्टार्ट-अप्स को नवाचार और स्थिरता के सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए ताकि दीर्घकालिक विकास हो सके। भारतीय स्टार्ट-अप्स के सामने आने वाली चुनौतियों और अवसरों का उल्लेख करते हुए बताया कि स्टार्टअप्स के फेल होने का एक प्रमुख कारण यह है कि ये अल्पकालिक समाधानों पर विचार करते है। जिससे उन्हें अनेक चुनौतियो जैसे फंडिंग की कमी, स्केलेबिलिटी, और बाजार में प्रतिस्पर्धा आदि का सामना करना पड़ता है।आपने टेस्ला, पेटीएम और बायजुस का जिक्र करते हुए बताया कि कैसे टेस्ला ने इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग में स्थिरता को बढ़ावा दिया और कार्बन उत्सर्जन कम करने के अवसरों का लाभ उठाया। भारत में पेटीएम ने डिजिटल पेमेंट्स के क्षेत्र में नवाचार करते हुए वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया। जबकि बी बाई जे यू एस ने शिक्षा को डिजिटल माध्यम से सुलभ बना कर अवसर पैदा किए।उन्होंने कहा कि 2047 तक भारत को 15 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए स्टार्ट-अप्स को अपनी भूमिका निभानी होगी। प्रो. पी.आर. अग्रवाल ने स्टार्ट-अप वेंचर्सः स्थिरता प्रबंधन विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। आपने भारतीय अर्थव्यवस्था को दो युगों में विभाजित किया—1947 से 1991 और 1992 से वर्तमान तक—और बताया कि इन दोनों कालखंडों में आर्थिक नीतियों, बाजार उदारीकरण और स्थिरता के प्रयासों में किस प्रकार बदलाव आया है। इसके बाद सम्मेलन के समापन सत्र का आयोजन किया गया। जिसमे मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. वेनवा स्कुफ (फ्रांस) विशेष अतिथि प्रो. चंदा बेन (प्रॉक्टर, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर), प्रो. पी. आर. अग्रवाल उपस्थित रहे। प्रो. बेन ने सम्मेलन की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए कहा कि इस प्रकार के इंटर डिसिप्लिनरी कार्यक्रम छात्रों एवं शोधार्थियों में शिक्षा की नई चेतना विकसित करेंगे और सामूहिक शोध को प्रोत्साहित करेंगे। जिससे समाज एवं पर्यावरण को लाभ होगा। कार्यक्रम संचालक वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रो. जे. के. जैन ने सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया एवं कार्यक्रम की अभूतपूर्व सफलता के लिए सभी को बधाई दिया। यह कार्यक्रम हाइब्रिड मोड में संचालित हो रहा है जिसमें देश-विदेश से आए प्रमुख शिक्षाविदो ने अपना व्याख्यान एवं शोध पत्र प्रस्तुत किया जिसमें अमेरिका, फ्रांस, कनाडा, बेल्जियम, आईआईटी मद्रास, आईआईटी बॉम्बे आदि प्रमुख रहे। यह संपूर्ण कार्यक्रम कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता के संरक्षण में तथा प्रोफेसर जे. के. जैन व प्रो ममता पटेल के निर्देशन, डॉ. वंदना विनायक के संयोजन व डॉ रूपाली सैनी के सहसंयोजक में संपन्न हुआ।

विश्वविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत चित्रकला प्रतियोगिता सम्पन्न

दबंग बुन्देलखंड

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से हिन्दी पखवाड़ा-2024 के अंतर्गत ह्यभारत की भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधताह्न विषय पर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों हेतु आयोजित ह्यचित्रकला प्रतियोगिताह्न सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा उकेरे गए चित्रों का अवलोकन करते हुए कार्यक्रम के संयोजक संतोष सोहगौरा, संयुक्त कुलसचिव एवं हिन्दी अधिकारी (प्र.) ने कहा कि चित्रकला मनोभावों को उकेरने का सशक्त माध्यम है। किसी भी चित्रकार द्वारा बनाए गए चित्र सिर्फ कला के प्रति उसके हुनर का प्रदर्शन ही नहीं करते हैं बल्कि उसके चित्र रंगों के माध्यम से समाज के यथार्थ को भी अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। आयोजित प्रतियोगिता की समन्वयक डॉ. सुप्रभा दास, सहायक प्राध्यापक, ललित एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग ने बताया कि चित्रकला को करियर के रूप में अपनाकर न केवल अपने मनोभावों को व्यक्त? किया जा सकता है बल्कि यश-कीर्ति एवं धन भी अर्जित किया जा सकता है। इस प्रतियोगिता में आरोही देसाई, संजना, अर्चिता सिंह, पुष्पराज सिंह, वैभव, मोनालिसा, भावना, सुगंधि, नीलम, अनीसा, आयुष सिंह, शिवानी, अमित कुमार ब्यौहार, गार्गी, अतुल एवं शैलेन्द्र सिंह सहित विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के लगभग चालीस विद्यार्थियों ने उल्लास पूर्वक कैनवास में चित्र उकेरकर अपनी रचनात्मक उपस्थिति दर्ज करायी। प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को 25 सितम्बर को माननीया कुलगुरू महोदया द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए जायेंगे। इस अवसर पर राजभाषा प्रकोष्ठ से अभिषेक सक्सेना एवं विनोद रजक तथा ललित कला विभाग के शोधार्थी शालू सोनी, किरन ठाकुर, नेहा गुप्ता एवं सहयोगी के रूप में अमित भदोरिया, प्रदीप सिंह एवं मनोज विश्वकर्मा भी उपस्थित रहे।

राजभाषा पखवाड़ा के संयोजक संतोष सोहगौरा, संयुक्त कुलसचिव एवं हिन्दी अधिकारी (प्र.) ने बताया कि विश्वविद्यालय में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन 14 से 25 सितम्बर, 2024 तक किया जा रहा है जिसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। उन्होंने बताया कि आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में कल विश्वविद्यालय परिसर स्थित केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 04 के विद्यार्थियों हेतु स्वा ?भिमान एवं गर्व की भाषा है हिन्दी विषय पर हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की जा रही

विश्वविद्यालय : हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत लघुकथा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

दबंग बुन्देलखंड

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में साहित्य परिषद, हिन्दी विभाग के द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाड़ा महोत्सव 2024 के तहत द्वितीय प्रतियोगिता लघुकथा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने प्रतिभागियों के रूप में हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक हिन्दी विभाग के प्रो. राजेन्द्र यादव, डॉ. संजय नैनवाड एवं संस्कृत विभाग के डॉ. रामहेत गौतम थे। इस दौरान प्रतियोगिता का संचालन हिन्दी की शोधार्थी शुभांगी ओखदे एवं समन्वय शोधार्थी नेहा दुबे ने किया. हिंदी के शोधार्थियों- दुर्गेश कुमार सराठे, संजय कुमार श्यामले, संतोष कुमार, धर्मेंद्र शुक्ला, सूर्यकांत प्रजापति, सुरेन्द्र तिवारी, अंकित भारद्वाज और प्रतिभा इत्यादि ने उल्लेखनीय सहयोग कर प्रतियोगिता को सफल बनाया। हिंदी के शिक्षकों में डॉ. अफरोज बेगम और डॉ. अरविंद कुमार ने अपने मार्गदर्शन और सहयोग से कार्यक्रम को गरिमापूर्ण दिशा दी। सम्पूर्ण कार्यक्रम के संयोजक हिन्दी विभाग के डॉ. हिमांशु कुमार ने प्रतियोगिता सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए।

विवि के विद्यार्थियों से वैचारिक स्वच्छता सर्वे फार्म भरवाए गए

नवभारत न्यूज

सागर 18 सितंबर. डॉ हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग में महिला यौन उत्पीड़न तथा वैचारिक स्वच्छता अभियान के तहत कार्यशाला का आयोजन हुआ.

आंतरिक परिवाद समिति की प्रिसाइडिंग ऑफीसर एवं डीन स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी प्रो.अस्मिता गजभिए ने विद्यार्थियों के बीच कार्य स्थल पर महिला यौन उत्पीड़न अधिनियम 2013 पर विस्तार से चर्चा की. वैचारिक स्वच्छता अभियान की संस्थापक डॉ वंदना गुप्ता ने नो एब्यूज डे जनजागृति संकल्प दिवस पर विद्यार्थियों को जीवन में कभी भी गालियाँ न देने की शपथ दिलाई.

इस अवसर पर प्रो. डॉ वंदना सोनी, डॉ धर्मेन्द्र जैन, पूजा केसरवानी, रुक्मणी, प्रीति, जागृति उपस्थित थीं. कार्यशाला का संचालन अर्पना पुरोहित एवं अनामिका जैन ने किया.

विश्वविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत चित्रकला प्रतियोगिता सम्पन्न

आचरण संवाददाता

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलगुरू की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से हिन्दी पखवाड़ा-2024 के अंतर्गत 'भारत की भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधता' विषय पर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों हेतु आयोजित 'चित्रकला प्रतियोगिता' सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा उकेरे गए चित्रों का अवलोकन करते हुए कार्यक्रम के संयोजक संतोष सोहगौरा, संयुक्त कुलसचिव एवं हिन्दी अधिकारी (प्र.) ने कहा कि चित्रकला मनोभावों को उकेरने का सशक्त माध्यम है। किसी भी चित्रकार द्वारा बनाए गए चित्र सिर्फ कला के प्रति उसके हुनर का प्रदर्शन ही नहीं करते हैं बल्कि उसके चित्र रंगों के माध्यम से समाज के यथार्थ को भी अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। आयोजित प्रतियोगिता की समन्वयक डॉ. सुप्रभा दास, सहायक प्राध्यापक, ललित एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग ने बताया कि चित्रकला को करियर के रूप में अपनाकर न केवल अपने मनोभावों को व्यक्त किया जा सकता है बल्कि यश-कीर्ति एवं धन भी अर्जित किया जा सकता है। इस प्रतियोगिता में आरोही देसाई, संजना, अर्चिता सिंह, पुष्पराज सिंह, वैभव, मोनालिसा, भावना, सुगंधि, नीलम, अनीसा, आयुष सिंह, शिवानी, अमित कुमार ब्यौहार, गार्गी, अतुल एवं शैलेन्द्र सिंह सहित विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के लगभग चालीस विद्यार्थियों ने उल्लास पूर्वक कैनवास में चित्र उकेरकर अपनी रचनात्मक उपस्थिति दर्ज करायी। प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को 25 सितम्बर को कुलगुरू महोदया द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए जायेंगे। इस अवसर पर राजभाषा प्रकोष्ठ से अभिषेक सक्सेना एवं विनोद रजक तथा ललित कला विभाग के शोधार्थी शालू सोनी, किरन ठाकुर, नेहा गुप्ता एवं सहयोगी के रूप में अमित भदोरिया, प्रदीप सिंह एवं मनोज विश्वकर्मा भी उपस्थित रहे।

राजभाषा पखवाड़ा के संयोजक संतोष सोहगौरा, संयुक्त कुलसचिव एवं हिन्दी अधिकारी (प्र.) ने बताया कि विश्वविद्यालय में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन 14 से 25 सितम्बर, 2024 तक किया जा रहा है जिसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं।

उन्होंने बताया कि आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में कल विश्वविद्यालय परिसर स्थित केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 04 के विद्यार्थियों हेतु 'स्वाभिमान एवं गर्व की भाषा है हिन्दी' विषय पर हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है।

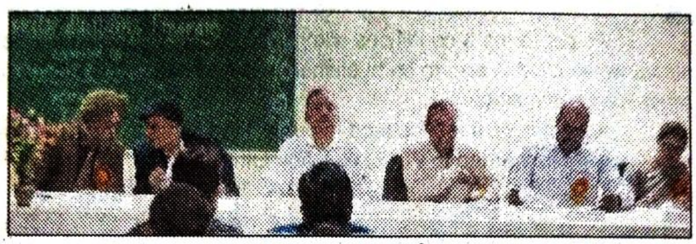

12 दिवसीय कार्यशाला शुरू

नवभारत न्यूज

सागर 19 सितंबर. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग एवं आई. सी. एस. एस. आर. नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 12 दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ.

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. जी सोरल, पूर्व अध्यक्ष भारतीय लेखांकन परिषद रहे. सम्मानित अतिथियों के रूप में प्रो. जेके जैन, कार्यक्रम निदेशक, प्रो. वाई. एस. ठाकुर, डीम, वाणिज्य एवं प्रबंधन स्कूल, प्रो. आरटी बैदरे, निर्देशक मालवीय मिशन शिक्षक शिक्षण संस्थान, प्रो. एमएस पाहवा तथा डा. रुपाली सैनी, कार्यक्रम सह निर्देशिका उपस्थित रहे. प्रो. सोरल ने कहा कि शोध समाज के विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम है. यह न केवल ज्ञान के नए दरवाजे खोलता है, बल्कि हमें समस्याओं के नये समाधान खोजने के लिए भी प्रेरित करता है. शोध का सही चयन, निष्पादन भविष्य की चुनौतियों से निपटने में सहायक हो सकता है. उन्होंने प्रतिभागियों को गुणवत्तापूर्ण और प्रासंगिक शोध विषयों के चयन पर भी जोर दिया.

लिखावट ही व्यक्तित्व को परिलक्षित करती है: सोहगौरा

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के अंतर्गत केन्द्रीय विद्यालय क्रं 04 में हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता हुई। विद्यार्थियों ने सुंदर लिखावट के साथ निबंध लिखा।

संयोजक संतोष सोहगौरा ने कहा कि लिखावट व्यक्तित्व को परिलक्षित करती है। मोबाइल एवं तकनीकी के इस समय में भी कागज-कलम का ऐसा सुंदर प्रयोग हमें आश्वस्त करता है कि हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं का भविष्य उज्ज्वल है। प्राचार्य आरएस वर्मा ने कहा कि हमारे नौनिहाल भविष्य के भारत की नींव हैं। उनमें अपनी भाषा एवं संस्कृति के प्रति गौरव का भाव विकसित करने का उत्तर दायित्व हमारा है, जिसके लिए हम निरंतर प्रयासरत हैं। शिक्षक योगेन्द्र कुमार ने बताया कि प्रतियोगिता में दसवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की है। यह संख्या मातृभाषा के प्रति उनके प्रेम को प्रकट करती है। इस अवसर पर डॉ. हिमांशु कुमार, अभिषेक सक्सेना एवं विनोद रजक आदि मौजूद रहे।

विश्वविद्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी टंकण प्रतियोगिता में दिखाया अपना तकनीकी कौशल

दबंग बुन्देलखंड

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा माननीया कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से हिन्दी पखवाड़ा-2024 के अंतर्गत विश्वविद्यालय के नियमित एवं दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों हेतु कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग में स्थित कंप्यूटर लैब में हिन्दी टंकण प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस अवसर पर हिन्दी पखवाड़ा के संयोजक संयुक्त कुलसचिव एवं प्रभारी राजभाषा अधिकारी संतोष सोहगौरा ने बताया कि शासकीय नियमानुसार प्रत्येक कर्मचारी को सचिवालयीन एवं प्रशासनिक कामकाज में डाटा इंट्री तथा नोटशीट व पत्र लेखन के लिए कंप्यूटर टंकण का ज्ञान अनिवार्य है. इस प्रकार की प्रतियोगिता कर्मचारियों के तकनीकी ज्ञान एवं कौशल के प्रदर्शन का सुअवसर प्रदान करती है। प्रतियोगिता के समन्वयक एवं निर्णायक कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. अभिषेक बंसल ने बताया कि टंकण के लिए न केवल भाषा का ज्ञान बल्कि कंप्यूटर उपकरणों, सही फॉण्ट तथा सॉफ्टवेयर की समुचित जानकारी होना भी नितांत आवश्यक है। प्रतियोगिता में प्रतिभागी के रूप में बृजेश साहू, नीलेश लोधी, सचिन पटवा, अमित कनौजिया,शुभम साहू, कंचन पाल, श्रेयाश्री चौरसिया, रितु ठाकुर, संतोष कुमार मिश्रा, दीपक मिश्रा, उमेश चढ़ार,पवन कोरी, सतीश सरल,मनोज कुमार कावड़े,राजकुमार रजक,रेवाराम पटेल एवं अभिनव सहित विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं अनुभागों में कार्यरत 30 से भी अधिक कर्मचारियों ने प्रतिभागिता सुनिश्चित की। प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को 25 सितम्बर को आयोजित समापन कार्यक्रम में माननीया कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए जायेंगे। इस महत्वपूर्ण आयोजन में कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के प्रयोगशाला प्रेष्य नितिन चढ़ार की भूमिका सराहनीय रही. कार्यक्रम में राजभाषा प्रकोष्ठ से अभिषेक सक्सेना और विनोद रजक भी उपस्थित रहे।

हिंदी पखवाड़ा के संयोजक संतोष सोहगौरा ने बताया कि विश्वविद्यालय में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन 14 से 25 सितम्बर, 2024 तक किया जा रहा है। जिसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु विभिन्न कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। कार्यक्रमों की श्रृंखला में सोमवार दिनांक 23 सितम्बर को विश्वविद्यालय के अधिकारियों हेतु आशुभाषण प्रतियोगिताह्न आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार, प्रमाण-पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किए जाएंगे।

हिंदी पखवाड़ा : निबंध लेखन प्रतियोगिता और भारतीय ज्ञान परम्पराओं पर व्याख्यान व कहानी पाठ का आयोजन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि में हिंदी पखवाड़ा महोत्सव 2024 के अंतर्गत आचार्य नंददुलारे वाजपाई सभागार, हिंदी विभाग में हिंदी में हम विषय पर प्रतिभागियों ने अपने विचारो को निबंध के माध्यम से लिखने का प्रयास किया और बड़े उत्साह से इस प्रतियोगिता का हिस्सा बने। इस प्रतियोगिता में निर्णयकर्ता सहायक प्राध्यापक डॉ. संजय कुमार संस्कृत विभाग, डॉ. शशि सिंह संस्कृत विभाग और डॉ. संजय नैनवाड हिंदी विभाग थे। प्रतियोगिता के तुरंत बाद व्यख्यानमाला का आयोजन हुआ, जिसमे मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता के रूप में उच्चशिक्षा उत्कृष्टता संस्थान भोपाल के पूर्व प्रो. डॉ. आनंद सिंह एवं सत्यदेव ग्रुप ऑफ कॉलेजे की निदेशक सुमन सिंह उपस्थित रहीं। सुमन सिंह द्वारा कौन सी सड़क जायेगी बांदा शीर्षक कहानी पाठ किया गया। डॉ. आनंद सिंह के व्याख्यान का विषय भारतीय ज्ञान परंपरा विषय पर केंद्रित था। जिसमें उन्होंने सर्वप्रथम डॉ. गौर को नमन करते हुये अपनी बात रखी। डॉ. सिंह ने कहा कि परम्परा का गुण धर्म है चयन धर्मा होना। भारतीय ज्ञान की परंपरा संवाद की परंपरा रही है। जिसे लोक ने सुधार लिया है, उसे शास्त्र को भी सुधार लेना चाहिये। जहां प्रेम का स्वर है, वहां भारतीयता मौजूद है। उनका पूरा व्याख्यान युवा मन को उत्साही बनाने वाला सिद्ध हुआ।

इसके साथ ही उन्होंने स्वरचित महाकाव्य अथर्वा मैं वही वन हूं पर भी अपनी बात रखी। उन्होंने बताया कि इसकी रचना में उन्हें 26 साल का समय लगा। इस दौरान हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी की उपस्थिति रही। कार्यक्रम संयोजक डॉ. हिमांशु कुमार ने संचालन किया। आभार ज्ञापन हिंदी की शोध छात्र ज्योति गिरी ने दिया।

विश्व के सर्वश्रेष्ठ 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों की सूची

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के 5 शिक्षकों को मिला स्थान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के 5 शिक्षकों को विश्व के सर्वश्रेष्ठ 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों की 2024 की सूची में स्थान मिला है। स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय, अमेरिका और एल्सिवियर पब्लिशर्स ने 16 सितंबर-2024 को 2 प्रतिशत श्रेष्ठ वैज्ञानिकों की सूची जारी की गई है, जिसमें डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के 5 शिक्षक शामिल हैं। इस सूची में फॉर्मेसी विभाग के प्रो. एसपी व्यास, प्रो. संजय कुमार जैन, माइक्रोबायोलोजी विभाग के अध्यक्ष सह निदेशक, अकादमिक गतिविधियां प्रो. नवीन कानगो, रसायन विभाग के अध्यक्ष प्रो. एपी मिश्रा और क्रिमिनोलॉजी सह फॉरेंसिक साइंस विभाग की डॉ. वंदना विनायक शामिल हैं। प्रो. व्यास और प्रो. जैन विवि से सेवानिवृत्त हो चुके हैं। इस सूची को विज्ञान के 22 क्षेत्रों और 174 उपक्षेत्रों से संबंधित वैज्ञानिकों के डाटाबेस एवं एल्सिवियर प्रकाशन और स्कोपस के विश्व स्तर के साइटेशन डेटाबेस के कम्पोजिट स्कोर के आधार पर तैयार किया जाता है। इस सूची में विश्वविद्यालय के कई पूर्व शिक्षक एवं पुरा छात्र, जो देश-विदेश विभिन्न संस्थाओ में कार्यरत हैं, भी शामिल हैं। विश्वविद्यालय के शिक्षकों की इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बधाई दी है और हर्ष व्यक्त किया है।

विश्व के सर्वश्रेष्ठ 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों की सूची में डॉ. गौर विश्वविद्यालय के 5 शिक्षक शामिल

जनचिंगारी- 9302303212

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के 05 शिक्षकों को विश्व के सर्वश्रेष्ठ 02 प्रतिशत वैज्ञानिकों की 2024 की सूची में स्थान मिला है। स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय, अमेरिका और एल्सिवियर पब्लिशर्स द्वारा 16 सितम्बर, 2024 को 02 प्रतिशत श्रेष्ठ वैज्ञानिकों की सूची जारी की गई है जिसमें डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के 05 शिक्षक शामिल हैं। इस सूची में फार्मेसी विभाग के प्रो. एस.पी. व्यास, प्रो. संजय कुमार जैन, माइक्रोबायोलोजी विभाग के अध्यक्ष एवं निदेशक, अकादमिक गतिविधियाँ प्रो. नवीन कानगो, रसायन विभाग के अध्यक्ष प्रो. ए.पी. मिश्रा और क्रिमिनोलॉजी एवं फोरेंसिक साइंस विभाग की डॉ. वंदना विनायक शामिल हैं। इस सूची को विज्ञान के 22 क्षेत्रों और 174 उपक्षेत्रों से संबंधित वैज्ञानिकोंकेडाटाबेस एवं एल्सिवियर प्रकाशन और स्कोपस के विश्व स्तर के साइटेशन डेटाबेस के कम्पोजिट स्कोर के आधार पर तैयार किया जाता है. इस सूची में विश्वविद्यालय के कई पूर्व शिक्षक एवं पुरा छात्र, जो देश-विदेश विभिन्न संस्थाओ में कार्यरत हैं, भी शामिल हैं. विश्वविद्यालय के शिक्षकों की इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बधाई दी है और हर्ष व्यक्त किया है। फार्मेसी विभाग के पूर्व आचार्य, प्रो सुरेशप्रसादव्यास को निरंतर पांचवे साल उच्चस्तरीय शोध के लिए इस सूची में स्थान मिला है। उन्होंने लाइपोसोम बायोटेक्नोलॉजी, ओरल वक्सीनशन, लक्ष्यभेदी टीबी उपचार, नावेल ड्रग डिलीवरी पर उत्कृष्ट शोध किया है जो 400 शोध पत्रों के रूप में प्रकाशित है और 20000 से अधिक बार उल्लेखित है। प्रो. संजय के जैन, फार्मेसी विभाग में वरिष्ठ आचार्य एवं निदेशक, प्लानिंग व रिसोर्स जनरेशन हैं और उन्हें चौथे बार उच्चस्तरीय शोध के लिए इस सूची में स्थान मिला है. उन्होंने बड़ी आंत और मस्तिष्क की बीमारियों के लिए लक्ष्य भेदी दवाओं का विकास किया है जिसके लिए उन्हें 2018 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा विजिटर अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

दैनिक भास्कर

सागर 23-09-2024

सुविधा • 30 सीटों पर 12वीं पास विद्यार्थी सीधे ले सकेंगे दाखिला, अभी स्नातक के बाद मिलता था प्रवेश

विवि में पहली बार पत्रकारिता का तीन वर्षीय कोर्स शुरू, प्रवेश 30 तक, लैब, स्टूडियो, थिएटर की सुविधा भी मिलेगी

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय पत्रकारिता एवं जनसंचार में तीन वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम शुरू किया जा रहा है। इसमें प्रवेश के लिए पंजीयन भी शुरू हो गए हैं। अंतिम तारीख 30 सितंबर है। किसी भी विषय में कक्षा-12वीं पास विद्यार्थी इसमें प्रवेश ले सकते हैं। इसके लिए उन्हें पंजीयन कराना जरूरी है। पहले साल में 30 सीटों पर ही प्रवेश दिया जाएगा। इन पर भारत सरकार के नियमानुसार आरक्षण लागू होगा। इस वर्ष नॉन सीयूईटी अभ्यर्थी भी प्रवेश के पात्र होंगे। यानी जिन विद्यार्थियों ने कॉमन यूनिवर्सिटी इंट्रेंस टेस्ट नहीं दिया है, वे भी इसमें प्रवेश ले सकेंगे।

पथरिया परिसर में बनी इसी बिल्डिंग में पत्रकारिता विभाग संचालित होगा।

पत्रकारिता में यूजी डिग्री करने में बचेगा एक साल

अभी तक सागर विश्वविद्यालय में संचालित पत्रकारिता का स्नातक पाठ्यक्रम एक साल का था। जिसमें विद्यार्थी स्नातक करने के बाद ही प्रवेश ले पाते थे। ऐसे में यदि कोई विद्यार्थी सागर विश्वविद्यालय से पत्रकारिता की डिग्री करता था तो स्नातक के तीन साल और उसके बाद एक साल पत्रकारिता में स्नातक के मिलाकर कुल 4 साल में उसकी डिग्री पूरी हो पाती थी। परंतु अब सीधे 12वीं के बाद तीन साल का कोर्स करने पर पत्रकारिता की डिग्री करने में एक साल बचेगा।

विभाग को नवंबर में मिलेगा नया भवन

पत्रकारिता में न सिर्फ नया पाठ्यक्रम शुरू किया जा रहा है बल्कि यह विभाग भी नए भवन में ही संचालित होगा। पथरिया परिसर में नए भवन का निर्माण पूरा हो चुका है। नवंबर माह में विभाग को यह बिल्डिंग मिल जाएगी। विश्वविद्यालय प्रशासन के मुताबिक इसमें प्रिव्यू थियेटर, कांफ्रेंस हॉल, 5 स्मार्ट क्लासरूम, कंप्यूटर लैब, ऑडियो वीडियो प्रोडक्शन स्टूडियो, एक्जीबिशन रूम, लाइब्रेरी, ऑडियो प्रोडक्शन रूम आदि की सुविधाएं विद्यार्थियों और शिक्षकों को मिलेंगी। विद्यार्थयों को वर्तमान बिल्डिंग से करीब 2 किलोमीटर दूर जाना पड़ेगा।

रोजगार एवं कौशल देने वाला पाठ्यक्रम : कुलपति

विश्वविद्यालय से मिली जानकारी के मुताबिक पत्रकारिता का यह तीन वर्षीय पाठ्यक्रम विवि में संचालित बीए पाठ्यक्रम के समान ही संचालित होगा। जिसमें पत्रकारिता, जनसंचार सहित सभी तरह के सैद्धांतिक, प्रायोगिक एवं अंतरानुशासनिक प्रश्न-पत्र शामिल होंगे। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि विश्वविद्यालय में लगातार नए कोर्स शुरू किए जा रहे हैं। उसी क्रम में यह कोर्स चालू होने जा रहा है। पत्रकारिता विषय में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए यह रोजगार एवं कौशल देने वाला पाठ्यक्रम है।

देशबन्धु
Influencing Public Opinion Since 1959
23 Sep 2024 - Page 2

विश्व के सर्वश्रेष्ठ 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों की सूची में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के 5 शिक्षक शामिल

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के 05 शिक्षकों को विश्व के सर्वश्रेष्ठ 02 प्रतिशत वैज्ञानिकों की 2024 की सूची में स्थान मिला है। स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय अमेरिका और एल्सिवियर पब्लिशर्स द्वारा 16 सितम्बर को 02 प्रतिशत श्रेष्ठ वैज्ञानिकों की सूची जारी की गई जिसमें डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के 05 शिक्षक शामिल हैं। इस सूची में फार्मेसी विभाग के प्रो. एसपी व्यास, प्रो. संजय कुमार जैन, माइक्रोबायोलोजी विभाग के अध्यक्ष एवं निदेशक, अकादमिक गतिविधियां प्रो. नवीन कानगो, रसायन विभाग के अध्यक्ष प्रो. एपी मिश्रा और क्रिमिनोलॉजी एवं फोरेंसिक साइंस विभाग की डॉ. वंदना विनायक शामिल हैं। इनमे प्रो. एसपी व्यास और प्रो. संजय जैन विश्वविद्यालय के रिटायर्ड प्रोफेसर है। इस सूची को विज्ञान के 22 क्षेत्रों और 174 उपक्षेत्रों से संबंधित वैज्ञानिकोंकेडाटाबेस एवं एल्सिवियर प्रकाशन और स्कोपस के विश्व स्तर के साइटेशन डेटाबेस के कम्पोजिट स्कोर के आधार पर तैयार किया जाता है। इस सूची में विश्वविद्यालय के कई पूर्व शिक्षक एवं पुरा छात्र जो देश विदेश विभिन्न संस्थाओ में कार्यरत हैं, भी शामिल हैं। विश्वविद्यालय के शिक्षकों की इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बधाई दी है।

फार्मेसी विभाग के पूर्व आचार्य प्रो. सुरेश प्रसाद व्यास को निरंतर पांचवे साल उच्चस्त्रीय शोध के लिये इस सूची में स्थान मिला है। उन्होंने लाइपोसोम बायोटेक्नोलॉजी, ओरल वक्सीनशन, लक्ष्मभेदी टीबी उपचार, नावेल ड्रग डिलीवरी पर उत्कृष्ट शोध किया है जो 400 शोध पत्रों के रूप में प्रकाशित है और 20000 से अधिक बार उल्लेखित है।

प्रो. संजय के जैन फार्मेसी विभाग में वरिष्ठ आचार्य एवं निदेशक, प्लानिंग व रिसोर्स जनरेशन हैं और उन्हें चौथे बार उच्चस्त्रीय शोध के लिये इस सूची में स्थान मिला है। उन्होंने बड़ी आंत और मस्तिष्क की बीमारियों के लिये लक्ष्य भेदी दवाओं का विकास किया है जिसके लिये उन्हें 2018 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा विजिटर अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है। इनके 200 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हैं जिनका 15000 बार उल्लेख हुआ है व इन्हे 03 अंतराष्ट्रीय व 01 राष्ट्रीय पेटेंट प्राप्त हैं।

प्रो. नवीन कानगो लगातार तीसरी बार इस सूची में शामिल किये गये हैं। वे माइक्रोबायोलोजी के विभागाध्यक्ष एवं अकादमिक अफेयर्स के निदेशक हैं और इनका शोध कार्य सूक्ष्मजैवीय एन्जाइम्स का स्वास्थ्यवर्धक प्री.बायोटिक, बायो. एथेनोल, मुर्गी के पंखों के अपघटन एवं बहुउपयोगी नैनोपार्टिकल्स बनाने पर आधारित है। इनका शोध कार्य 80 शोध पत्रों के रूप में प्रकाशित है जिनका 2310 से अधिक बार उद्धरण किया गया है।

प्रो. एपी मिश्रा विश्वविद्यालय के वरिष्ठ आचार्य केमिस्ट्री विभाग के अध्यक्ष हैं। इनका कार्यक्षेत्र सिंथेटिक और संरचनात्मक अकार्बनिक रसायन विज्ञान, समन्वय रसायन विज्ञान, जैव अकार्बनिक, नैनो सामग्री, अल्ट्रासोनिक्स है। इनका शोध कार्य 60 शोध पत्रों के रूप में प्रकाशित है।

डॉ. वंदना विनायक क्रिमिनोलॉजी एवं फोरेंसिक साइंस विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं एवं उनका शोधकार्य डायटम्स और माइक्रोअलगी से जैव ईधन एवं पिगमेंट्स उत्पादन की नैनोटेक्नोलाजी पर केंद्रित हैं। इनका शोध कार्य 76 शोध पत्रों के रूप में प्रकाशित है 3 जिनका 1900 से अधिक बार उल्लेख हुआ है तथा 6 पेटेंट है।

विश्वविद्यालय क्षमता, कौशल एवं ज्ञान के विकास का महत्प केंद्र है : कुलपति

विश्वविद्यालय में केमिकल साइंस की तकनीक पर छह दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन

सागर(एसबीन्यूज)। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र विभाग द्वारा एडवांस्ड रिसर्च टेक्निक फॉर केमिकल एनालिसिस एंड कैरक्टराइजेशन विषय पर छह दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन विश्वविद्यालय के अबिमंच सभागार में संपन्न हुआ. कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर एनसी गौतम थे एवं अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. डॉक्टर हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय में कई अत्यधिक परिष्कृत उपकरण है जिनकी ट्रेनिंग नई पीढ़ी के लिए अत्यावश्यक है। इसी आवश्यकता को देखते हुए कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता की पहल पर विश्वविद्यालय अलग-अलग इंस्ट्रूमेंट पर कार्यशाला आयोजित कर रहा है जिसके क्रम में यह दूसरी कार्यशाला है जिसमें देश भर के 60 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। कार्यशाला के समन्वयक प्रो. रत्नेश दास एवं डॉ. कल्पतरु दास हैं। उदघाटन सत्र में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि वैज्ञानिक शोध में एडवांस रिसर्च टेक्निक सीखना आवश्यक है तभी हम नए-नए रिसर्च कर सकेंगे. विश्वविद्यालय में इसके लिए आठ सेंटर हैं जिनमें विशेषीकृत उपकरण हैं और सभी क्रियाशील हैं. इसके अलावा भी विभिन्न प्रोजेक्ट्स एवं विभागों के पास भी उन्नत उपकरण हैं जिनको एकीकृत तरीके से नए सेंटर के रूप में विकसित किया जा सकता है ताकि इसका ज्यादा से ज्यादा उपयोग विद्यार्थी एवं शोधार्थी कर सकें. योजना बनाकर श्रमसाध्य तरीके से जब शोध किये जाते हैं तो उसके सकारात्मक परिणाम ही आते हैं. इसलिए शोधकर्ता को सदैव सकारात्मक होना चाहिए. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में नया एकीकृत लैब जल्द ही बनकर तैयार हो रहा है. इसमें शोध सुविधाएं बधाई जायेंगी जिसका फायदा शोधार्थियों को मिलेगा. विश्वविद्यालय क्षमता, कौशल एवं ज्ञान के विकास का महत्त्वपूर्ण केंद्र है. यह कार्यशाला निश्चित तौर पर नए शोधार्थियों के लिए लाभकारी होगी.

शोध में सकारात्मकता प्रमुख पहलू: गौतम

मुख्य अतिथि प्रो. एन सी गौतम ने कहा कि समय के साथ तकनीक बदल रही है. हमें नए तकनीक के साथ स्वयं को अपडेट रखना होगा. नए समय को देखते हुए प्रयोगशालाओं में क्यूआर कोड का उपयोग करना चाहिए. विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षक सभी पाठ्यक्रम निर्माण, शोध की रूपरेखा निर्माण एवं सामग्री निर्माण की प्राविधि में संलग्न हों तभी शोध का एक वातावरण बनेगा और नयी पीढी में शोध के प्रति जागरूकता पैदा होगी. इंडस्ट्री को भी अपने कार्यक्रमों में शामिल करें ताकि भविष्य में वह विद्यार्थियों के लियी लाभकारी हो।

उदघाटन सत्र में प्रो. हेरेल थॉमस, प्रो. रत्नेस दास, प्रो. ए पी मिश्रा, प्रो. नवीन कानगो, डॉ. एस पी उपाध्याय, डॉ. आशुतोष, डॉ. पुष्पल घोष, डॉ. के बी जोशी सहित विवि के कई शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

सागर

कार्यशाला • डॉ. हरीसिंह गौर विवि के रसायन शास्त्र विभाग में छह दिवसीय आयोजन

श्रमसाध्य तरीके से जब शोध किए जाते हैं तो सकारात्मक परिणाम आते हैं: कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र विभाग द्वारा 'एडवांस्ड रिसर्च टेक्निक फॉर केमिकल एनालिसिस एंड कैरक्टराइजेशन' विषय पर छह दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में हुआ।

अध्यक्षता कर रहीं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि वैज्ञानिक शोध में एडवांस रिसर्च टेक्निक सीखना आवश्यक है तभी हम नए-नए रिसर्च कर सकेंगे। विश्वविद्यालय में इसके लिए 8 सेंटर हैं जिनमें विशेषीकृत उपकरण हैं और

सागर | कार्यशाला का शुभारंभ करती हुई कुलपति प्रो. गुप्ता।

सभी क्रियाशील हैं। इसके अलावा भी विभिन्न प्रोजेक्ट्स एवं विभागों के पास भी उन्नत उपकरण हैं जिनको एकीकृत तरीके से नए सेंटर के रूप में विकसित किया जा सकता है ताकि इसका ज्यादा से ज्यादा उपयोग विद्यार्थी एवं शोधार्थी कर सकें। योजना बनाकर श्रमसाध्य तरीके से जब शोध किए जाते हैं तो उसके सकारात्मक परिणाम ही आते हैं। इसलिए शोधकर्ता को सदैव सकारात्मक होना चाहिए। मुख्य अतिथि प्रो. एनसी गौतम ने कहा कि समय के साथ तकनीक बदल रही है। हमें नए तकनीक के साथ स्वयं को अपडेट रखना होगा। नए समय को देखते हुए प्रयोगशालाओं में क्यूआर कोड का उपयोग करना चाहिए। विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षक सभी पाठ्यक्रम निर्माण, शोध की रूपरेखा निर्माण एवं सामग्री निर्माण की प्राविधि में संलग्न हों तभी शोध का एक वातावरण बनेगा और नयी पीढ़ी में शोध के प्रति जागरूकता पैदा होगी। अपने आस-पास के महाविद्यालयों को भी शोध के प्रति रुझान पैदा करना चाहिए। एक विश्वविद्यालय होने के नाते हमारी यह जिम्मेदारी भी बनती है कि हम नए वैज्ञानिक शोधों के प्रति लोगों को जागरूक करें। कार्यशाला के समन्वयक प्रो. रत्नेश दास एवं डॉ. कल्पतरु दास हैं। उद्घाटन सत्र में प्रो. हेरेल थॉमस, प्रो. रत्नेश दास, प्रो. एपी मिश्रा, प्रो. नवीन कानगो, डॉ. एसपी उपाध्याय, डॉ. आशुतोष, डॉ. पुष्पल घोष, डॉ. केबी जोशी आदि मौजूद थे।

दैनिक दबंग बुन्देलखण्ड
सच का साहस.......

संक्षिप्त समाचार

विश्वविद्यालय में एनसीसी में प्रवेश नामांकन प्रक्रिया हुई आयोजित

दबंग बुन्देलखंड

सागर। डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय में 3 एमपी सिग्नल कंपनी एनसीसी नए नामांकन की प्रक्रिया सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इस कार्यक्रम का संचालन कर्नल अरुण कुमार बेन्सला, कमांडिंग ऑफिसर, 3 एमपी सिग्नल कंपनी एनसीसी द्वारा किया गया। इस अवसर पर कुल 147 कैडेट्स ने चयन प्रक्रिया में भाग लिया, जिनमें से 117 कैडेट्स का सफल चयन किया गया। कार्यक्रम में 1 एएनओ, 3 जेसीओ और 5 एनसीओ सहित अन्य सहायक नागरिक कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस सफल नामांकन से एनसीसी में नए कैडेट्स को विभिन्न गतिविधियों और प्रशिक्षणों का हिस्सा बनने का अवसर मिलेगा, जिससे उनकी नेतृत्व क्षमता और अनुशासन में वृद्धि होगी।

कार्यक्रम के अंत में कर्नल बेन्सला ने चयनित कैडेट्स को शुभकामनाएं दीं और उन्हें एनसीसी के उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्धता बनाए रखने के लिए प्रेरित किया।

हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत आशुभाषण प्रतियोगिता संपन्न

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम 2024 के अंतर्गत अधिकारियों के लिये आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। गौर समिति कक्ष, नवीन प्रशासनिक भवन में आयोजित इस प्रतियोगिता में विवि के अधिकारियों ने समसामयिक मुद्दों पर अपने विचार बेबाकी से प्रस्तुत किये। प्रतियोगिता में कुल 13 अधिकारियों ने भाग लिया, जिसमें वित्ताधिकारी सीएमए कुलदीपक शर्मा, डॉ. पंकज तिवारी, डॉ. सुरेन्द्र पी गादेवार, डॉ. संजीव सर्राफ, सतीश कुमार, डॉ. रूपेन्द्र जुगल चौरसिया, सचिन सिंह गौतम, डॉ. मुकेश साहू, डॉ. अभिषेक कुमार जैन, राजकुमार पाल, दीपक कुमार शाक्य, माधव चंद्र और बृजभूषण सिंह ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखे। राजभाषा अधिकारी संतोष सोहगौरा ने इस प्रतियोगिता के महत्व को रेखांकित करते हुये कहा कि इस तरह की प्रतियोगितायें अधिकारियों को अपने विचारों को साझा करने और नीतियों के क्रियान्वयन में योगदान करने का अवसर प्रदान करती हैं। प्रतियोगिता का संचालन अभिषेक सक्सेना ने किया और धन्यवाद ज्ञापन सहायक कुलसचिव आशीष कुमार तिवारी ने दिया। विजेताओं की घोषणा 25 सितंबर को पुरस्कार वितरण समारोह में की जायेगी, जहां कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा विजेताओं को नकद पुरस्कार, स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र प्रदान किये जायेंगे।

विवि में 117 कैडेट्स का एनसीसी में चयन

सागर@पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में थ्री एमपी सिग्नल कंपनी एनसीसी ने नए नामांकन की प्रक्रिया आयोजित कराई। कार्यक्रम का संचालन कर्नल अरुण कुमार बेन्सला कमांडिंग ऑफिसर ने किया। इस अवसर पर 147 कैडेट्स में से 117 कैडेट्स का चयन किया गया।

स्वच्छता कैंपेन 4.0 के तहत कुलपति ने दिलाई स्वच्छता शपथ

सिंगाजी समाचार ▸▸ ज्योति शर्मा

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में 23 सितंबर को शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के दिशा निर्देशों के क्रम में विश्वविद्यालय के कामर्स ब्लॉक, फामेर्सी विभाग, शिक्षा विभाग, और इंजीनयरिंग शिक्षा विभाग (नैनो परिसर) में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने स्वच्छता शपथ दिलाई । जिसमें सभी ने कम से कम प्रतिवर्ष 100 घंटे स्वच्छता गतिविधि में भाग लेने का संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रो चंदा बेन, प्रो जे के जैन, प्रो अम्बिकादत्त शर्मा, प्रो डीके नेमा, प्रो राजेन्द्र यादव, प्रो आशीष वर्मा, प्रो संजय जैन, प्रो वंदना सोनी, डॉ अभिषेक बंसल सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।
इसी क्रम में आउटरीच एवं एक्सटेंशन गतिविधि के तहत कैंट स्थित परेड मंदिर में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के निर्देशन में स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंदिर परिसर को स्वच्छ रखने हेतु डिस्प्ले बोर्ड, डस्टबिन एवं स्वच्छता सामग्री भी विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि समाज के नागरिक होने के नाते हमारी जिम्मेदारी अपने आस-पास के परिसर को भी स्वच्छ रखना है। विवि भी अपनी सामाजिक भागीदारी सुनिश्चित करते हुए इस तरह के अभियान का हिस्सा बनेगा और स्वच्छता जागरूकता अभियान और गतिविधि में संलग्न रहेगा। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलसचिव डॉ एसपी उपाध्याय, डॉ एस पी गादेवर, इंजी राहुल गोस्वामी, डॉ पंकज तिवारी, डॉ राकेश सोनी, डॉ संजय शर्मा, डॉ गौतम प्रसाद सहित शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

विवि के शिक्षक और छात्रों ने मंदिर परिसर में की सफाई

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागरः डा. हरीसिंह गौर विवि में 23 सितंबर को कामर्स ब्लाक, फार्मेसी विभाग, शिक्षा विभाग, और इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग (नैनो परिसर) में कुलगुरु प्रो नीलिमा गुप्ता ने स्वच्छता शपथ दिलाई, जिसमें सभी ने कम से कम प्रतिवर्ष 100 घंटे स्वच्छता गतिविधि में भाग लेने का संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रो चंदा बेन, प्रोजे के जैन, प्रो अम्बिकादत्त शर्मा, प्रो डीके नेमा, प्रो. राजेंद्र यादव, प्रो आशीष वर्मा, प्रो संजय जैन, प्रो वंदना सोनी, डा. अभिषेक बंसल सहित विवि के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

परेड मंदिर परिसर में स्वच्छता अभियान के दौरान कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता व शिक्षक।

इसी क्रम में आउटरीच एवं एक्सटेंशन गतिविधि के तहत कैंट स्थित परेड मंदिर में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के निर्देशन में स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंदिर परिसर को स्वच्छ रखने के लिए डिस्प्ले बोर्ड, डस्टबिन एवं स्वच्छता सामग्री भी विवि द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर कुलगुरु प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि समाज के नागरिक होने के नाते हमारी जिम्मेदारी अपने आस-पास के परिसर को भी स्वच्छ रखना है। विवि भी अपनी सामाजिक भागीदारी सुनिश्चित करते हुए इस तरह के अभियान का हिस्सा बनेगा और स्वच्छता जागरूकता अभियान और गतिविधि में संलग्न रहेगा। इस अवसर पर विवि के प्रभारी कुलसचिव डा. एसपी उपाध्याय, डा. एस पी गादेवर, इंजी. राहुल गोस्वामी, डा. पंकज तिवारी, डा. राकेश सोनी, डा. संजय शर्मा, डा. गौतम प्रसाद सहित शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

किसी भी मुद्दे को लेकर अधिकारियों का अभिमत अलग स्थान रखता है: सोहगौरा

विश्वविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा के तहत आशुभाषण प्रतियोगिता हुई

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम-2024 के तहत विश्वविद्यालय के अधिकारियों के लिए आशुभाषण प्रतियोगिता हुई। विवि वित्ताधिकारी कुलदीपक शर्मा ने आशुभाषण के विषय मन के हारे हार, मन के जीते जीत, शैक्षिक बहु माध्यम अनुसंधान केंद्र के निदेशक डॉ. पंकज तिवारी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 का क्रियान्वयन, प्रभारी परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुरेंद्र पी गादेवार ने खेलो इंडिया, उप पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. संजीव सराफ ने राजभाषा और राष्ट्रभाषा, उपकुलसचिव सतीश कुमार ने आभासी पटल का पठन-पाठन में योगदान, सीनियर सिस्टम एनालिस्ट डॉ. रूपेन्द्र जुगल चौरसिया ने कौशल विकास मेला, नेटवर्किंग एडमिनिस्ट्रेटर सचिन सिंह गौतम ने लोकतंत्र और मतदान, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. मुकेश साहू ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता और देश का भविष्य, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. अभिषेक कुमार जैन ने नशामुक्ति अभियान, सहायक कुलसचिव राजकुमार पाल ने मातृभाषा और देश का विकास, सहायक कुलसचिव दीपक कुमार शाक्य ने स्वच्छता अभियान, ईएमएमआरसी के प्रोड्यूसर माधव चंद्र ने विविधता में एकता तथा विधि अधिकारी बृजभूषण सिंह ने मेरी अविस्मरणीय यात्रा विषय पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम के संयोजक राजभाषा अधिकारी एवं संयुक्त कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने कहा किसी भी मुद्दे को लेकर तथा उससे जुड़ी कार्यान्वयन नीतियों के सफल क्रियान्वयन के लिए अधिकारियों का अभिमत एक अलग स्थान रखता है। इस प्रकार की प्रतियोगिताएं वास्तव में अपने अंतर्मन की भावनाओं को व्यक्त करने का एक मंच उपलब्ध कराती हैं। आभार प्रतियोगिता के समन्वयक सहायक कुलसचिव आशीष कुमार तिवारी ने माना। संचालन हिन्दी अनुवादक अभिषेक सक्सेना ने किया। सहयोग विनोद रजक का रहा।

विश्वविद्यालय : कुलपति ने दिलाई स्वच्छता शपथ

सागर(एसबीन्यूज)। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में 23 सितंबर को शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के दिशा निर्देशों के क्रम में विश्वविद्यालय के कामर्स ब्लॉक, फार्मेसी विभाग, शिक्षा विभाग, और इंजीनयरिंग शिक्षा विभाग (नैनो परिसर) में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने स्वच्छता शपथ दिलाई जिसमें सभी ने कम से कम प्रतिवर्ष 100 घंटे स्वच्छता गतिविधि में भाग लेने का संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रो चंदा बेन, प्रो जे के जैन, प्रो अम्बिकादत्त शर्मा, प्रो डीके नेमा, प्रो राजेन्द्र यादव, प्रो आशीष वर्मा, प्रो संजय जैन, प्रो वंदना सोनी, डॉ अभिषेक बंसल सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। इसी क्रम में आउटरीच एवं एक्सटेंशन गतिविधि के तहत कैंट स्थित परेड मंदिर में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के निर्देशन में स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंदिर परिसर को स्वच्छ रखने हेतु डिस्प्ले बोर्ड, डस्टबिन एवं स्वच्छता सामग्री भी विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि समाज के नागरिक होने के नाते हमारी जिम्मेदारी अपने आस-पास के परिसर को भी स्वच्छ रखना है।

विवि भी अपनी सामाजिक भागीदारी सुनिश्चित करते हुए इस तरह के अभियान का हिस्सा बनेगा और स्वच्छता जागरूकता अभियान और गतिविधि में संलग्न रहेगा। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलसचिव डॉ एसपी उपाध्याय, डॉ एस पी गादेवर, इंजी राहुल गोस्वामी, डॉ पंकज तिवारी, डॉ राकेश सोनी, डॉ संजय शर्मा, डॉ गौतम प्रसाद सहित शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

'किसी भी प्रस्ताव के निर्णय में नियमानुसार नोटशीट का महत्व'

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विवि में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत विश्वविद्यालय के सभी सहायकों एवं लिपिकों के लिए टिप्पण, प्रारूपण एवं कार्यालयीन पत्राचार विषय पर कार्यशाला हुई। संयुक्त कुलसचिव एवं प्रभारी राजभाषा अधिकारी संतोष सोहगौरा ने कहा कि किसी भी प्रस्ताव पर निर्णय इस बात पर भी निर्भर करता है कि उसे संबंधित सहायक एवं लिपिक ने संबंधित प्रकरण को नियमानुसार नोटशीट पर किस रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का दैनन्दिन कार्यालयीन कामकाज से जुड़े उदाहरणों के माध्यम से निराकरण किया। कार्यशाला में प्रतिभागियों के लिए शब्दावली पर आधारित प्रश्नोत्तरी भी आयोजित की गई। कार्यशाला में शुभम साहू, अनस खान, अमन जैन, निशांत सोनी, आदित्य बरमैया, अमित कनौजिया, ब्रजेश साहू, मंजु जैन, श्रेयाश्री चौरसिया, रितु ठाकुर, अभिनव अग्निहोत्री, सचिन पटवा, अंकित जैन, प्रभांशु तिवारी, आकाश दुबे, प्रवीण साहू, ओम सैनी, आदित्य तिवारी, आयुष सोनी एवं साकेत दुबे आदि ने भाग लिया।

पीजी डिप्लोमा प्रारंभ

सागर. डॉ हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में एक वर्षीय पीजी डिप्लोमा श्रम अध्ययन सत्र 2024-25 में शुरू किया जा रहा है. अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष प्रो प्रकाश कांबले, पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ वीरेंद्र सिंह ने बताया कि इस पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु पंजीयन शुरू हो चुके है, जिसकी पंजीयन हेतु अंतिम तारीख 30 सितंबर है. प्रवेश हेतु विद्यार्थी किसी भी विषय में स्नातक पास होने पर प्रवेश ले सकता है. पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु कुल 30 सीट है. विद्यार्थी बिना सीयूईटी परीक्षा दिए पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकता हैं. दोनो क्षेत्रों के संस्थान उन्हें विशेषज्ञ के रूप में अधिक प्राथमिकता देगें. यह पाठयक्रम बुंदेलखंड जैसे श्रम प्रधान क्षेत्र के लिए अधिक कारगर सिद्ध होगा.

सांख्यिकी विश्लेषण में कुशलता से शोध की गुणवत्ता सुधारी जा सकती है: प्रो. अंशुजा तिवारी

दबंग बुन्देलखंड

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के वाणिज्य विभाग द्वारा आयोजित दो साप्ताहिक क्षमता निर्माण कार्यक्रम के पांचवें दिन का आयोजन बड़े ही उत्साह और ज्ञानवर्धक सत्रों के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम के पहले दो सत्रों का नेतृत्व प्रो.गोयल ने किया। जिनका विषय रिपोर्ट लेखन और शोध एवं प्रकाशन नैतिकता था। जहां आपने रिपोर्ट लेखन की बारीकियों और संरचना पर ध्यान केंद्रित किया और बताया कि एक शोध रिपोर्ट कैसे स्पष्ट, संक्षिप्त और प्रभावी होनी चाहिए, ताकि वह शोध के उद्देश्यों और निष्कर्षों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सके। उन्होंनि शोध और प्रकाशन की नैतिकताओं पर जोर देते हुए कहा कि शोध कार्य में ईमानदारी, पारदर्शिता और डेटा की

प्रमाणिकता बेहद जरूरी है। साथ ही आपने शोध प्रकाशन के मानकों, संदर्भ देने की पद्धतियों, और प्लेजरिज्म से बचने के उपायों पर भी विस्तार से चर्चा की गई।

तीसरे और चौथे सत्र का संचालन प्रो. अंशुजा तिवारी द्वारा किया गया। जहां आपने आँकड़ों के विश्लेषण और केंद्रीय प्रवृत्तियों जैसे माध्य, माध्यिका और मोड के मापन पर ध्यान केंद्रित किया। आपने शोध में इन आँकड़ा-संबंधित मापदंडों के महत्व को समझाया और बताया कि ये कैसे किसी भी डेटा सेट का विश्लेषण करने में सहायक होते हैं। आगे आपने आँकड़ा-संख्या विज्ञान के विभिन्न तकनीकों की चर्चा करते हुए कहा कि केंद्रीय प्रवृत्तियों का सही मापन ही प्रभावी शोध की कुंजी है। कार्यक्रम के अगले दिनों में भी सांख्यिकी, शोध के तरीकों और डेटा विश्लेषण के विविध पहलुओं पर गहन चर्चा की जाएगी। विशेषज्ञ वक्ता विभिन्न आधुनिक सांख्यिकी तकनीकों और उनके व्यावहारिक उपयोग पर विचार-विमर्श करेंगे, जिससे प्रतिभागियों को अपने ज्ञान का विस्तार करने का अवसर मिलेगा।

कुलपति का किया अभिनंदन

सागर, देशबन्धु। अग्रवाल युवा मंच ने अग्रवाल विकास सभा के सचिव मोहन अग्रवाल के नेतृत्व में डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. नीलिमा गुप्ता से सौजन्य भेंट कर उनके कुशल मार्गदर्शन में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मिल रही उपलब्धियों पर उनका अभिनंदन किया एवं 29 से 3 अक्टूबर तक आयोजित अग्रसेन जयंती महोत्सव का आमंत्रण पत्र दिया। प्रतिनिधिमंडल में विवेक अग्रवाल, मनीष अग्रवाल, अभिषेक अग्रवाल, हिमांशु अग्रवाल, राहुल अग्रवाल, आशीष अग्रवाल, गौरव अग्रवाल उपस्थित रहे।

जनसमर्थन से बनेगी हिंदी अंतर्राष्ट्रीय भाषा- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

दबंग बुन्देलखंड

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के राजभाषा प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम विश्वविद्यालय के रंगनाथन भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि शिक्षा विद एवं प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री शोभा पैठणकर थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की।इस अवसर पर हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो.आनंद प्रकाश त्रिपाठी, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस. पी. उपाध्याय एवं संयुक्त कुलसचिव एवं प्रभारी हिंदी अधिकारी संतोष सोहगौरा मंचासीन थे।

कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य देते हुए संयुक्त कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने कहा कि हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए हम सभी कटिबद्ध हैं और वह दिन दूर नहीं जब हिंदी न केवल राष्ट्रभाषा बल्कि संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनेगी। उन्होंने हिंदी पखवाड़ा में हुए विभिन्न गतिविधियों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस दौरान राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा निर्मित वृत्त चित्र का प्रदर्शन भी किया गया। अतिथियों द्वारा राजभाषा प्रकोष्ठ की पत्रिका भाषा-भारती का विमोचन किया गया। अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार और बढ़ावा देने के लिए त्वरित

गति से प्रयास किये जा रहे हैं। विश्वविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा में आयोजित विविध गतिविधियों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उद्देश्यों से प्रेरणा लेते हुए हम सभी कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमें आज हिंदी की स्थिति पर चर्चा करते हुए इसके व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। जिससे यह संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बन सके। आज दुनिया के कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन हो रहा है। इसमें रोजगार के भी भरपूर अवसर हैं। आज आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का युग है। आज कम्प्यूटर बेस्ड हिन्दी टाइपिंग हो रही है। विश्वविद्यालय में हिन्दी क्लब की स्थापना की गई है। जिसका उद्देश्य हिन्दी भाषी विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा से जोड़ना है और साथ ही उनकी मातृभाषाओं को अन्य भाषा-भाषियों से जोड़ना है। उन्होंने कहा कि हिन्दी को आगे ले जाने की भावना ही हिन्दी को आगे बढ़ाएगी। हिन्दी जन-जन की भाषा बने यही हमारा उद्देश्य होना चाहिए। मुख्य अतिथि सुश्री शोभा पैठणकर ने हिन्दी पखवाड़ा के आयोजन के बारे कहा कि यह एक सर्वव्यापी और सर्वस्पर्शी आयोजन है। उन्होंने कहा कि आज हमें यह चिंतन करना चाहिए कि हिंदी राजभाषा से राष्ट्रभाषा क्यों नहीं बन पाई। यह तभी संभव है जब निर्धारित लक्ष्य के साथ कार्य किया जाए। सरकार इस दिशा में अपने प्रयास तो कर रही है लेकिन इसमें नागरिक समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। समाज में मानस परिवर्तन से ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित किया जा सकता है। हिन्दी अति समृद्ध भाषा है और इसमें रोजगार की असीम संभावनाएं हैं. राजभाषा नीति के उद्देश्यों के क्रियान्वयन और लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक विभाग को एक लक्ष्य के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से मातृभाषा और भारतीय ज्ञान परंपरा पर काफी महत्त्व दिया जा रहा है। इस प्रयास से निश्चित ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनने का मार्ग प्रशस्त होगा। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने विवि में हिंदी क्लब की गतिविधियों एवं आगामी रणनीतियों की चर्चा करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग ने भी हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया। जिसमें विद्यार्थियों ने अभूतपूर्व ढंग से सहभागिता की उन्होंने कहा कि हिन्दी को व्यापकता प्रदान करने में गैर हिन्दी भाषियों की भी काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। हिन्दी क्लब द्वारा ऐसे पाठ्यक्रमों का सृजन किया जा रहा है। जिससे सभी भाषा-भाषी एक मंच पर आ सकें और भाषाई एकात्मता विकसित हो सके। कार्यक्रम का संचालन अनुवादक अभिषेक सक्सेना ने किया। कार्यक्रम में हिन्दी पखवाड़ा के दौरान प्रतिभागिता कर रहे केन्द्रीय विद्यालय के विजयी विद्यार्थियों, विवि के अधिकारियों, कर्मचारियों, प्रयोगशाला सहायकों, प्रयोगशाला प्रेष्यों को नकद पुरस्कार, प्रमाण-पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किये गये। इस अवसर पर वित्ताधिकारी कुलदीपक शर्मा, प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. चंदा बेन, डॉ. एस पी गादेवार, डॉ. पंकज तिवारी, उपकुलसचिव सतीश कुमार, विधि अधिकारी बृजभूषण सिंह, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. आशुतोष, डॉ. राकेश सोनी, डॉ. महेंद्र, डॉ. आयुष गुप्ता, डॉ. विवेक जायसवाल सहित विवि के कई शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

हिंदी पखवाड़ा • समापन समारोह में प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया

दुनिया के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा, रोजगार के भी अवसर हैं: कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के राजभाषा प्रकोष्ठ के तत्वावधान में विश्वविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम विश्वविद्यालय के रंगनाथन भवन में हुआ।

प्रभारी हिंदी अधिकारी संयुक्त कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने कहा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए हम सभी कटिबद्ध हैं और वह दिन दूर नहीं जब हिंदी न केवल राष्ट्रभाषा बल्कि संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनेगी। अतिथियों ने राजभाषा प्रकोष्ठ की पत्रिका 'भाषा-भारती' का विमोचन किया। अध्यक्षता कर रहीं विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार और बढ़ावा देने के लिए त्वरित गति से प्रयास किए जा रहे हैं। हमें आज हिंदी की स्थिति पर चर्चा करते हुए इसके व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए, जिससे यह संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बन सके। आज दुनिया के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। इसमें रोजगार के भी भरपूर अवसर हैं। आज आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का युग है। आज कम्प्यूटर बेस्ड हिन्दी टाइपिंग हो रही है। विश्वविद्यालय में हिन्दी क्लब की स्थापना की गई है जिसका उद्देश्य हिन्दी भाषी विद्यार्थियों को हिंदी भाषा से जोड़ना है और साथ ही उनकी मातृभाषाओं को अन्य भाषा-भाषियों से जोड़ना है। मुख्य अतिथि शोभा पैठणकर ने कहा आज हमें यह चिंतन करना चाहिए कि हिंदी राजभाषा से राष्ट्रभाषा क्यों नहीं बन पाई? यह तभी संभव है जब निर्धारित लक्ष्य के साथ कार्य किया जाए। सरकार इस दिशा में अपने प्रयास तो कर रही है लेकिन इसमें नागरिक समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा हिन्दी को व्यापकता प्रदान करने में गैर हिन्दी भाषियों की भी काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। संचालन अनुवादक अभिषेक सक्सेना ने किया।

भारतीय ज्ञान परम्परा में स्नातकोत्तर (एम. ए.) पाठ्यक्रम में प्रवेश प्रारम्भ

नेशनल एक्सप्रेस ब्यूरो

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में वैदिक अध्ययन विभाग के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रवेश पोर्टल प्रारम्भ कर दिया गया है। इस पाठ्यक्रम में स्नातक उत्तीर्ण छात्र बिना सी. यू. ई. टी. परीक्षा के भी प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं। विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा, अंतरवैषयिक अध्ययन एवं वैदिक ज्ञान के वैज्ञानिक आयाम को बढ़ावा देने एवं राष्ट्रव्यापी प्रचार की दृष्टि से इस पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया। भारतीय ज्ञान परम्परा से स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम करने के पश्चात छात्र भारतीय ज्ञान परम्परा , वैदिक अध्ययन एवं हिंदू अध्ययन विषयों में पी. एच. डी. कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा शिक्षक पात्रता परीक्षा (यूजीसी नेट परीक्षा) में भी भारतीय ज्ञान परम्परा को एक विषय के रूप में शामिल किया गया था, अतः स्नातकोत्तर के बाद छात्र शिक्षक पात्रता परीक्षा की तैयारी भी कर सकते

हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी एवं निजी कंपनियों में जहां स्नातकोत्तर न्यूनतम अर्हता है वहां भी अन्य विषयों में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त अभ्यर्थियों की तरह आवेदन कर सकते हैं। कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि पूरे देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदू अध्ययन, वैदिक अध्ययन, भारतीय ज्ञान परम्परा के नवीन विभागों की स्थापना की जा रही है। इस दृष्टि से आगामी समय में इन विषयों के अध्यापन हेतु अनेक प्राध्यापकों की आवश्यकता होगी, ऐसे में विश्वविद्यालय इस विषय के विशेषज्ञ तैयार करके ऐसे प्राध्यापकों की आपूर्ति हेतु दृढसंकल्पित है। प्रारम्भिक वर्ष में इस पाठ्यक्रम के लिए 20 सीटों का निर्धारण किया गया है। प्रवेश प्रक्रिया में नियमानुसार आरक्षण प्रावधानों को लागू करते हुए प्रवेश दिया जाएगा। इस पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु विश्वविद्यालय के प्रवेश पोर्टल में पंजीकरण आवश्यक है। पंजीकरण का लिंक दिनांक 25 सितम्बर से 6 अक्टूबर तक खुला रहेगा। जिन छात्रों ने स्नातक स्तर पर 55% या अधिक अंक प्राप्त किए हैं, वे चाहें किसी भी विषय से स्नातक उत्तीर्ण हों। योग्यता से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी पोर्टल पर उपलब्ध है। विश्वविद्यालय की एडमिशन समिति के अध्यक्ष एवं वैदिक अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दिवाकर शुक्ल ने जानकारी दी कि कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता जी के मार्गदर्शन में वैदिक अध्ययन विभाग का पिछले वर्ष ही प्रारम्भ हुआ इस विभाग में बी. ए(ऑनर्स) वैदिक अध्ययन, पी. एच. डी. वैदिक अध्ययन पाठ्यक्रम पहले से ही संचालित हो रहे हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ होने से नवीन विभाग पूर्णता को प्राप्त होगा।

छात्रों को स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना चाहिए : कुलगुरु

सागर @ पत्रिका. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सदर में विश्वविद्यालय महिला क्लब ने दो दिवसीय स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया। शिविर में 400 से छात्र छात्र- छात्राओं का ब्लड ग्रुप परिक्षण, जनरल मेडिकल चेकअप, आंख और कान की जांच की गई।

सभी विद्यार्थियों के रिपोर्ट कार्ड बनाए गए। मुख्यअतिथि डॉ. हरिसिंह गौर विवि के कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि छात्रों को स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना चाहिए। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में अग्रणी बनने का संदेश दिया। विशिष्ट अतिथि प्रदेश मंत्री प्रभु दयाल पटेल ने स्वास्थ्य के पौधरोपण कर उनको संरक्षण करने का संदेश दिया। मानव विज्ञान

विभाग के प्रो. केकेएन शर्मा, डॉ. किरण माहेश्वरी एवं महिला क्लब की अध्यक्ष मोनिका सिंह ने विचार रखे। संचालन रवींद्र कुमार जैन ने किया। प्रतिवेदन का वाचन प्राचार्य डॉ. कल्पना शर्मा ने किया। इस मौके पर सरोज आनंद, अनुराधा उपाधाध्य, महेश दुबे, नेहा पटेल, विजय रोहित, कुंदन लाल अहिरवार रश्मि शुक्ला, अमित तिवारी सहित छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

देश को स्वच्छ बनाने में विद्यार्थियों की बड़ी भूमिका: प्रो. प्रकाश कांबले

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में डॉ. आंबेडकर चेयर ने अर्थशास्त्र विभाग में स्वच्छता ही सेवा विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया। विभागाध्यक्ष प्रो. प्रकाश कांबले ने कहा कि देश को स्वच्छ बनाने में विद्यार्थियों की बड़ी भूमिका है। विद्यार्थियों को इस अभियान में आगे आकर स्वच्छता के लिए कार्य करना चाहिए। डॉ. देवेन्द्र कुमार ने कहा कि डॉ. आंबेडकर चेयर विश्वविद्यालय में संगोष्ठी, जनजागरण, भाषण प्रतियोगिता के माध्यम से स्वच्छता पखवाड़ा मना रही है। डॉ. वीणा थावरे ने कहा कि गंदी बस्तियों में गंदगी के कारण बीमारी ज्यादा होती है, इसलिए हम सबको इस अभियान को बस्ती-बस्ती तक ले जाना होगा।

डॉ. आंबेडकर चेयर द्वारा स्वच्छता ही सेवा विषय पर संगोष्ठी का आयोजन

सागर। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में डॉ. आंबेडकर चेयर के द्वारा अर्थशास्त्र विभाग में स्वच्छता ही सेवा विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया एवं शपथ दिलाई गई। उक्त कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अर्थशास्त्र विभाग के विभाग अध्यक्ष प्रो. प्रकाश कांबले ने कहा कि देश को स्वच्छ बनाने में विद्यार्थियों की बड़ी भूमिका है। विद्यार्थियों को इस अभियान में आगे आकर स्वच्छता के लिए कार्य करना चाहिए। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए डॉ. देवेन्द्र कुमार ने कहा कि डॉक्टर आंबेडकर फाउंडेशन के द्वारा स्वच्छता ही सेवा विषय अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। डॉक्टर आंबेडकर चेयर के द्वारा विश्वविद्यालय में संगोष्ठी, जनजागरण, भाषण प्रतियोगिता के माध्यम से स्वच्छता पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इसमें युवाओ की बड़ी भूमिका है क्योंकि स्वच्छ भारत ही विकसित भारत होगा। डॉ. केशव टेकाम उक्त अवसर पर कहा कि स्वच्छता के बिना विकास संभव नहीं है इसलिए इस अभियान को हमको घर-घर तक ले जाना होगा। डॉ. वीरेंद्र मटसानिया ने कहा कि भारत में स्वच्छता अभियान की शुरुआत महाराष्ट्र से संत गाडगिल महाराज द्वारा की गई। वह गांव-गांव जाकर लोगों को सफाई के बारे में बताते थे। डॉ. वीणा थावरे ने कहा कि गंदी बस्तियों में गंदगी के कारण बीमारी ज्यादा होती है इसलिए हम सबको इस अभियान को बस्ती बस्ती तक ले जाना होगा। डॉ. उत्सव आनंद डॉ. अंबेडकर चेयर के प्रो. एवं संगोष्ठी के संयोजक डॉ. देवेंद्र कुमार थे। संगोष्ठी में अंकित चतुर्वेदी एवं तेजस्विनी के द्वारा भी संबोधित किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई।

मेडिकल इंटर्नशिप छात्रों ने शिक्षाशास्त्र विभाग में किया नुक्कड़ नाटक

नुक्कड़ नाटक उपरांत छात्रों का सामूहिक छायाचित्र। • नवदुनिया

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागरः डा. हरीसिंह गौर विवि में स्वच्छता पखवाड़ा अभियान के अंतर्गत मेडीकल कालेज के इंटर्नशिप विद्यार्थियों द्वारा शिक्षाशास्त्र विभाग में नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि बीएमसी ईएनटी विभाग की विभागाध्यक्ष ने कार्यक्रम की उपयोगिता के बारे में बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. अनिल कुमार जैन ने की। उन्होंने कहा कि ईएनटी संबंधी जानकारी हमारे बीएड के विद्यार्थियों में निश्चित जागरूकता उत्पन्न करेगी एवं भविष्य में समाज के लोगों में जागरूकता लाने का कार्य करेगी। इस कार्यक्रम में विभाग के समस्त शिक्षक, कर्मचारी, सहित विभिन्न विभाग के विद्यार्थियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन डा. रश्मि जैन आभार डा. नवीन सिंह ने माना। कार्यक्रम में डा. अर्पणा श्रीवास्तव एवं अन्य साथियों का विशेष सहयोग रहा।

विश्वविद्यालय में बनेगा शौर्य, संस्कृति और कला का अद्भुत संग्रहालय पथरिया स्थित वैली कैम्पस में बनेगा संग्रहालय

[illegible] • सागर

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में शौर्य, संस्कृति एवं कला संग्रहालय का निर्माण किया जा रहा है. इस सम्बन्ध में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक कुलपति सभाकक्ष में आयोजित की गई. बैठक में भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय से संबद्ध महार रेजीमेंट के ब्रिगेडियर आई. एस. भल्ला, ब्रिगेडियर विकास बहुगुणा, कर्नल ए. जे. पॉल उपस्थित थे।बैठक में कुलपति ने विश्वविद्यालय में स्थापित होने वाले संग्रहालय की वृहद् कार्ययोजना पर प्रकाश डालते हुये कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य एक संग्रहालय को स्थापित करना है जो शौर्य, संस्कृति और कला का अद्भुत केंद्र बने। संग्रहालय में डॉ. गौर उनका जीवन दर्शन, उनका साहित्य और उनके योगदान पर केंद्रित कक्ष एवं डिस्प्ले गैलरी बनाई जायेगी।इसी के साथ ही

भारतीय थल सेना, जल सेना एवं नभ सेना के शौर्य को प्रदर्शित करती हुई सामग्री भी प्रदर्शनी के लिए रखी जायेगी।भारतीय वीर जवानों के शौर्य एवं बलिदान को प्रदर्शित करते हुए कॉरिडोर का निर्माण किया जाएगा जिसमें सागर, बुंदेलखंड एवं मध्य प्रदेश के बलिदानी वीर जवानों की स्मृति को भी सहेजा जाएगा. बैठक में यह भी निर्णय हुआ कि जनजातीय संस्कृति पर आधारित प्रदर्शनी एवं सामग्री भी संग्रहालय में स्थित होगी।मानव विकास के सोपानों एवं आदिवासी एवं जनजातीय इतिहास एवं संस्कृति को जानने-समझने के लिए यह महत्वकांक्षी योजना है। जनजातीय नायकों, उनके संघर्ष, योगदान एवं बलिदान को भी संग्रहालय में स्थान दिया जाएगा. इसके साथ ही बुंदेलखंड की लोक कला, संस्कृति, पारंपरिक वाद्य यंत्र, देशज परंपरा से सम्बंधित जानकारी एवं सामग्री भी प्रदर्शित की जायेगी।

महार रेजीमेंट एवं भारतीय सेना के विभिन्न शाखाओं के सहयोग से संग्रहालय में प्रदर्शनी हेतु टैंक, एयरक्राफ्ट एवं सेना के जहाज एवं अन्य सैन्य सामग्री भी प्रदर्शनी के लिए रखी जायेगी. संग्रहालय में देश की रक्षा में तत्पर तीनों विंग की संरचना एवं रैंक की जानकारी प्रदर्शित की जायेगी. देश की रक्षा के लिए मिलने वाले विभिन्न अवार्ड एवं पदकों की जानकारी के प्रदर्शन के साथ भारतीय सेना की विभिन्न इकाईयों में रोजगार के अवसरों के बारे में भी जानकारी प्रदर्शित की जायेगी. परमवीर चक्र, अशोक चक्र एवं अन्य वीरता पदकों की रिप्लिका भी लगाई जायेगी जिससे युवाओं को अपनी सेना के बारे में पूरी जानकारी मिल सके और देश सेवा के लिए प्रेरणा एवं ऊर्जा मिल सके. आजाद भारत के बाद के विभिन्न युद्धों एवं वीरता की गाथाओं जैसे 1965 का भारत-चीन युद्ध, 1972 का पाकिस्तान के साथ युद्ध, कारगिल युद्ध आदि को प्रदर्शित किया जाएगा।सागर एवं बुंदेलखंड का इतिहास, भारत की आजादी में उनके योगदान को रेखांकित करते हुए हमारे जननायकों की गाथाओं को भी इस संग्रहालय में स्थान दिया जाएगा. बैठक में डॉ. संजय शर्मा द्वारा पावर पॉइंट प्रजेंटेशन दिया गया जिसमें विभिन्न स्थलों के निर्माण योजना एवं रूपरेखा पर चर्चा हुई. बैठक के उपरांत कुलपति एवं सभी अतिथियों एवं सदस्यों ने संग्रहालय हेतु आरक्षित भवन का निरीक्षण भी किया। बैठक में प्रो. ए.डी. शर्मा, प्रो. विनोद भारद्वाज, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. नागेश दुबे, प्रो. बी. के. श्रीवास्तव, प्रो. हेरेल थामस, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, डॉ. राकेश सोनी, डॉ. विवेक जायसवाल डॉ. गौतम प्रसाद, डॉ. सुमन पटेल एवं विश्वविद्यालय के यंत्री विभाग के सहायक यंत्री दिनेश सिंघई, निधि जैन उपस्थित थे। प्रो. ए.डी. शर्मा ने माननीय कुलपति महोदया के साथ-साथ बैठक में पधारे ब्रिगेडियर भल्ला, ब्रिगेडियर बहुगुणा, कर्नल पॉल एवं विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुये आभार व्यक्त किया।

विश्वविद्यालय पथरिया वैली में बनाएगा शौर्य, संस्कृति और कला का संग्रहालय

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में शौर्य, संस्कृति एवं कला संग्रहालय का निर्माण किया जा रहा है। इस संबंध में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक कुलपति सभाकक्ष में आयोजित की गई। बैठक में महार रेजीमेंट के ब्रिगेडियर आईएस भल्ला, ब्रिगेडियर विकास बहुगुणा, कर्नल एजे पॉल उपस्थित थे।

बैठक में कुलपति ने विश्वविद्यालय में स्थापित होने वाले संग्रहालय की कार्ययोजना पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य एक संग्रहालय को स्थापित करना है जो शौर्य, संस्कृति और कला का अद्भुत केंद्र बने। संग्रहालय में डॉ. गौर का जीवन दर्शन, उनका साहित्य और उनके योगदान पर केंद्रित कक्ष एवं डिस्प्ले गैलरी बनाई जाएगी।

इसी के साथ ही भारतीय थल सेना, जल सेना एवं नभ सेना के शौर्य को प्रदर्शित करती हुई सामग्री भी प्रदर्शनी के लिए रखी जाएगी। भारतीय वीर जवानों के शौर्य एवं बलिदान को प्रदर्शित करते हुए कॉरिडोर का निर्माण किया जाएगा, जिसमें सागर, बुंदेलखंड एवं मध्य प्रदेश के बलिदानी वीर जवानों की स्मृति को भी सहेजा जाएगा। बैठक में यह भी निर्णय हुआ कि जनजातीय संस्कृति पर आधारित प्रदर्शनी एवं सामग्री भी संग्रहालय में स्थित होगी। मानव विकास के सोपानों एवं आदिवासी एवं जनजातीय इतिहास एवं संस्कृति को जानने-समझने के लिए यह महत्वकांक्षी योजना है।

जनजातीय नायकों, उनके संघर्ष, योगदान एवं बलिदान को भी संग्रहालय में स्थान दिया जाएगा। इसके साथ ही बुंदेलखंड की लोक कला, संस्कृति, पारंपरिक वाद्य यंत्र, देशज परंपरा से संबंधित जानकारी एवं सामग्री भी प्रदर्शित की जाएगी।

टैंक और एयर क्राफ्ट भी प्रदर्शित होंगे

महार रेजीमेंट एवं विभिन्न शाखाओं के सहयोग से संग्रहालय में प्रदर्शनी के लिए टैंक, एयरक्राफ्ट एवं सेना के जहाज और अन्य सैन्य सामग्री भी रखी जाएगी। संग्रहालय में देश की रक्षा में तत्पर तीनों विंग की संरचना एवं रैंक की जानकारी प्रदर्शित की जाएगी। देश की रक्षा के लिए मिलने वाले विभिन्न अवार्ड एवं पदकों की जानकारी के प्रदर्शन के साथ भारतीय सेना की विभिन्न इकाइयों में रोजगार के अवसरों के बारे में भी जानकारी प्रदर्शित की जाएगी। परमवीर चक्र, अशोक चक्र एवं अन्य वीरता पदकों की रिप्लिका भी लगाई जाएगी, जिससे युवाओं को अपनी सेना के बारे में पूरी जानकारी मिल सके और देश सेवा के लिए प्रेरणा एवं ऊर्जा मिल सके। आजाद भारत के बाद के विभिन्न युद्धों एवं वीरता की गाथाओं जैसे 1965 का भारत-चीन युद्ध, 1972 का पाकिस्तान के साथ युद्ध, कारगिल युद्ध आदि को प्रदर्शित किया जाएगा।

स्थानीय इतिहास भी दिखाएंगे

सागर एवं बुंदेलखंड का इतिहास, भारत की आजादी में उनके योगदान को रेखांकित करते हुए हमारे जननायकों की गाथाओं को भी इस संग्रहालय में स्थान दिया जाएगा। बैठक में डॉ. संजय शर्मा द्वारा पावर पॉइंट प्रजेंटेशन दिया गया, जिसमें विभिन्न स्थलों के निर्माण योजना एवं रूपरेखा पर चर्चा हुई। बैठक के उपरांत कुलपति एवं सभी अतिथियों एवं सदस्यों ने संग्रहालय के लिए आरक्षित भवन का निरीक्षण भी किया। बैठक में प्रो. एडी शर्मा, प्रो. विनोद भारद्वाज, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. नागेश दुबे, प्रो. बीके श्रीवास्तव, प्रो. हेरेल थामस, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एसपी. उपाध्याय, डॉ. राकेश सोनी, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. गौतम प्रसाद, डॉ. सुमन पटेल उपस्थित थे।

देश की रक्षा में तत्पर तीनों सेना की संरचना और रैंक की मिलेगी जानकारी

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में बनेगा शौर्य, संस्कृति और कला का संग्रहालय

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में शौर्य, संस्कृति एवं कला संग्रहालय का निर्माण किया जा रहा है। इस संबंध में विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में बैठक कुलपति सभाकक्ष में आयोजित की गई। बैठक में महार रेजीमेंट के बिग्रेडियर आइएस भल्ला, बिग्रेडियर विकास बहुगुणा एवं कर्नल एजे पॉल उपस्थित थे। कुलगुरु ने बताया कि पथरिया स्थित वैली कैम्पस में संग्रहालय बनाया जाएगा। विश्वविद्यालय का उद्देश्य एक संग्रहालय को स्थापित करना है जो शौर्य, संस्कृति और कला का अद्भुत केंद्र बने। संग्रहालय में डॉ. गौर उनका जीवन दर्शन, उनका साहित्य और उनके योगदान पर केंद्रित कक्ष एवं डिस्प्ले गैलरी बनाई जाएगी। इसी के साथ ही भारतीय थल सेना, जल सेना एवं नभ सेना के शौर्य को प्रदर्शित करती हुई सामग्री भी प्रदर्शनी के लिए रखी जाएगी। संग्रहालय का काम शुरू हो गया है। सबसे पहले गौर कक्ष बनाए जाएंगे।

बैठक में प्रो. एडी शर्मा, प्रो. विनोद भारद्वाज, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. नागेश दुबे, आदि मौजूद रहे। डॉ. संजय शर्मा ने पावर पॉइंट प्रजेंटेशन दिया। जिसमें बैठक के बाद कुलगुरु एवं सभी अतिथियों एवं सदस्यों ने संग्रहालय के लिए आरक्षित भवन का निरीक्षण भी किया।

सामाजिक परिवेश को स्वच्छ रखना प्रत्येक नागरिक का उत्तरदायित्वः कुलपति कर्नल

विश्वविद्यालय के एनसीसी-एनएसएस वालंटियर्स, शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारियों ने परेड मंदिर में किया श्रमदान

सत्ता सुधार ■ सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के 3 एमपी सिग्नल कंपनी एनसीसी के कैडेट्स, एनएसएस स्वयंसेवकों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने सामाजिक सेवा और सामुदायिक विकास (SSCD) कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें 250 लोगों ने भाग लिया। ओस दौरान परेड मंदिर के भीतरी परिसर एवं बाहरी परिसर की साफ-सफाई की गई। विश्वविद्यालय के सहयोग से स्वच्छता सामग्री भी उपलब्ध कराई गई। परिसर में वाहन पार्किंग, कचरा न फेंकने और उचित जगह पर कचरा फेंकने हेतु डिस्प्ले बोर्ड एवं अन्य आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध कराई गई। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की कुलपति कर्नल प्रो. नीलिमा गुप्ता के निर्देशन में संपन्न हुआ। कैडेट्स और स्वयंसेवकों ने उत्कृष्ट अनुशासन और समाज सेवा की भावना का प्रदर्शन किया, जिससे सामुदायिक कल्याण में उनका योगदान स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस अवसर पर सभी कैडेट्स, स्वयंसेवकों और अधिकारियों की सराहना करते हुए समाज सेवा को प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा बताया। उन्होंने कहा कि अपने आस-पास के परिसर को स्वच्छ रखना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। विश्वविद्यालय अपनी सामाजिक जिम्मेदारी और भूमिका का निर्वहन करते हुए इस तरह का अभियान लगातार चलाएगा। भारत सरकार के भी इस संबंध में दिशा निर्देश हैं कि हम शैक्षणिक संस्थान होने के नाते अपने समाज को स्वच्छता के प्रति जागरूक करें और स्वच्छता हेतु श्रमदान करें। वर्ष में 100 घंटे स्वच्छता हेतु श्रमदान करने का संकल्प अभियान भी पूरे देश में चल रहा है जो लोगों को प्रेरित कर रहा है। स्वच्छता कार्यक्रम के बाद कुलपति ने सभी वालंटियर्स को फल एवं मिष्ठान का वितरित किया।इस दौरान एएनओ लेफ्टिनेंट गौतम प्रसाद, जेसीओ सूबेदार टापा, नायब सूबेदार जरनैल और एनसीओ सीएचएम आई.एम. शर्मा ने कार्यक्रम के संचालन में अहम भूमिका निभाई। इस अवसर पर प्रो डी के नेमा, प्रो सुशील काशव, डॉ एस पी उपाध्याय, डॉ राकेश सोनी, डॉ संजय शर्मा, डॉ गौतम प्रसाद, राहुल गोस्वामी, इंजी सिंघई सहित विवि के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

एनसीसी-एनएसएस वालंटियर्स ने परेड मंदिर में किया श्रमदान

सामाजिक परिवेश को स्वच्छ रखना प्रत्येक नागरिक का उत्तरदायित्वः कुलपति गुप्ता

हरिभूमि न्यूज ⏭ सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के 3 एमपी सिग्नल कंपनी एनसीसी के कैडेट्स, एनएसएस स्वयंसेवकों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने सामाजिक सेवा और सामुदायिक विकास कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें 250 लोगों ने भाग लिया। ओस दौरान परेड मंदिर के भीतरी परिसर एवं बाहरी परिसर की साफ-सफाई की गई। विश्वविद्यालय के सहयोग से स्वच्छता सामग्री भी उपलब्ध कराई गई। परिसर में वाहन पार्किंग, कचरा न फेंकने और उचित जगह पर कचरा फेंकने हेतु डिस्प्ले बोर्ड एवं अन्य आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध कराई गई। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की कुलपति कर्नल प्रो. नीलिमा गुप्ता के निर्देशन में

संपन्न हुआ। कैडेट्स और स्वयंसेवकों ने उत्कृष्ट अनुशासन और समाज सेवा की भावना का प्रदर्शन किया, जिससे सामुदायिक कल्याण में उनका योगदान स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस अवसर पर सभी कैडेट्स, स्वयंसेवकों और अधिकारियों की सराहना करते हुए समाज सेवा को प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा बताया। उन्होंने कहा कि अपने आस-पास के परिसर को स्वच्छ रखना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। विश्वविद्यालय अपनी सामाजिक जिम्मेदारी और भूमिका का निर्वहन करते हुए इस तरह का अभियान लगातार चलाएगा। भारत सरकार के भी इस संबंध में दिशा निर्देश हैं कि हम शैक्षणिक संस्थान होने के नाते अपने समाज को स्वच्छता के प्रति जागरूक करें और स्वच्छता हेतु श्रमदान करें। वर्ष में 100 घंटे स्वच्छता हेतु श्रमदान करने का संकल्प अभियान भी पूरे देश में चल रहा है जो लोगों को प्रेरित कर रहा है। स्वच्छता कार्यक्रम के बाद कुलपति ने सभी वालंटियर्स को फल एवं मिष्ठान का वितरित किया।

इस दौरान एएनओ लेफ्टिनेंट गौतम प्रसाद, जेसीओ सूबेदार टापा, नायब सूबेदार जरनैल और एनसीओ सीएचएम आई.एम. शर्मा ने कार्यक्रम के संचालन में अहम भूमिका निभाई। इस अवसर पर प्रो डी के नेमा, प्रो सुशील काशव, डॉ एस पी उपाध्याय सहित विवि के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

सामाजिक परिवेश को स्वच्छ रखना प्रत्येक नागरिक का उत्तरदायित्व : कुलपति

विश्वविद्यालय के एनसीसी-एनएसएस वालंटियर्स, शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारियों ने परेड मंदिर में किया श्रमदान

सागर(एसबीन्यूज)। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के 3 एमपी सिग्नल कंपनी एनसीसी के कैडेट्स, एनएसएस स्वयंसेवकों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने सामाजिक सेवा और सामुदायिक विकास कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें 250 लोगों ने भाग लिया। ओस दौरान परेड मंदिर के भीतरी परिसर एवं बाहरी परिसर की साफ-सफाई की गई।

विश्वविद्यालय के सहयोग से स्वच्छता सामग्री भी उपलब्ध कराई गई। परिसर में वाहन पार्किंग, कचरा न फेंकने और उचित जगह पर कचरा फेंकने हेतु डिस्प्ले बोर्ड एवं अन्य आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध कराई गई। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की कुलपति कर्नल प्रो. नीलिमा गुप्ता के निर्देशन में संपन्न हुआ। कैडेट्स और स्वयंसेवकों ने उत्कृष्ट अनुशासन और समाज सेवा की भावना का प्रदर्शन किया, जिससे सामुदायिक कल्याण में उनका योगदान स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस अवसर पर सभी कैडेट्स, स्वयंसेवकों और अधिकारियों की सराहना करते हुए समाज सेवा को प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा बताया। उन्होंने कहा कि अपने आस-पास के परिसर को स्वच्छ रखना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है।

विश्वविद्यालय अपनी सामाजिक जिम्मेदारी और भूमिका का निर्वहन करते हुए इस तरह का अभियान लगातार चलाएगा। भारत सरकार के भी इस संबंध में दिशा निर्देश हैं कि हम शैक्षणिक संस्थान होने के नाते अपने समाज को स्वच्छता के प्रति जागरूक करें और स्वच्छता हेतु श्रमदान करें। वर्ष में 100 घंटे स्वच्छता हेतु श्रमदान करने का संकल्प अभियान भी पूरे देश में चल रहा है जो लोगों को प्रेरित कर रहा है।

स्वच्छता कार्यक्रम के बाद कुलपति ने सभी वालंटियर्स को फल एवं मिष्ठान का वितरित किया। इस दौरान एएनओ लेफ्टिनेंट गौतम प्रसाद, जेसीओ सूबेदार टापा, नायब सूबेदार जरनैल और एनसीओ सीएचएम आई.एम. शर्मा ने कार्यक्रम के संचालन में अहम भूमिका निभाई।

इस अवसर पर प्रो डी के नेमा, प्रो सुशील काशव, डॉ एस पी उपाध्याय, डॉ राकेश सोनी, डॉ संजय शर्मा, डॉ गौतम प्रसाद, राहुल गोस्वामी, इंजी सिंघई सहित विवि के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

डॉ. हरिसिंह गौर विवि में कला, संस्कृति और पत्रकारिता से संबंधित 7 नए कोर्स हो रहे प्रारंभ

वोकल म्यूजिक और थिएटर म्यूजिक कोर्स से कला में पारंगत होंगे युवा, रजिस्ट्रेशन हुए शुरू

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विवि में कला, संस्कृति और नॉलेज को बढ़ावा देने के लिए 7 नए कोर्स इस वर्ष से शुरू हो गए हैं। यह कोर्स 18 जुलाई 2024 में विद्यापरिषद की बैठक में पारित हुए थे, जिनके दाखिले के लिए पोर्टल खुला हुआ है। पोर्टल पर छात्र-छात्राएं पंजीयन करा सकते हैं।

कला के साथ पत्रकारिता के लिए इस वर्ष से बैचलर ऑफ आर्ट्स (जर्नलिज्म एंड मास कम्यूनिकेशन) में भी प्रवेश शुरू हो रहा है। तीन वर्षीय पत्रकारिता के पाठ्यक्रम में प्रवेश लेकर सीधे रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

ये होंगे नए कोर्स शुरू

कोर्स	कुल सीट	अंतिम तिथि
1. बैचलर ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स (हिंदुस्तानी वोकल म्यूजिक)	20	30 सितंबर
2. बैचलर ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स (तबला परकशन)	20	30 सितंबर
3. पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा (लेबर स्टडीज)	30	30 सितंबर
4. बैचलर ऑफ आर्ट्स (जर्नलिज्म एंड मास कम्यूनिकेशन)	30	30 सितंबर
5 मास्टर ऑफ आर्ट्स (इंडियन नॉलेज सिस्टम)	20	6 अक्टूबर
6. सर्टिफिकेट इन थिएटर म्यूजिक (एक वर्ष)	10	5 अक्टूबर
सर्टिफिकेट इन क्लासिकल इंडियन डांस कथक (एक वर्ष)	10	5 अक्टूबर

कोर्स से मिलेगा रोजगार

विवि के मीडिया प्रभारी विवेक जायसवाल ने बताया कि 7 नए कोर्स शुरू किए जा रहे हैं। कोर्स के लिए रजिस्ट्रेशन चल रहे हैं। उन्होंने बताया कि अब तक संगीत में बीए और एमए और पीएचडी कोर्स संचालित होते थे, अब संगीत में स्पेशल कोर्स शुरू हो रहे हैं। उन्होंने बताया कि संगीत में विशेष हिंदुस्तानी वोकल म्यूजिक, तबला और थियेटर म्यूजिक कोर्स शुरू हो रहे हैं। संगीत कई तरह के होते हैं, इन विशेष कोर्स को करने के बाद संगीत में विशेष क्षेत्र में विद्यार्थी पारंगत होंगे। इसके अलावा पत्रकारिता का तीन वर्षीय पाठ्यक्रम संचालित हो रहा है। इससे पहले विद्यार्थियों को 4 वर्ष की डिग्री लेनी पड़ती थी।

सामाजिक परिवेश को स्वच्छ रखना हर नागरिक का उत्तरदायित्व: कुलपति

विजय मत, सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के 3 एमपी सिग्नल कंपनी एनसीसी के कैडेट्स, एनएसएस स्वयंसेवकों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने सामाजिक सेवा और सामुदायिक विकास कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें 250 लोगों ने भाग लिया। ओस दौरान परेड मंदिर के भीतरी परिसर एवं बाहरी परिसर की साफ-सफाई की गई। विश्वविद्यालय के सहयोग से स्वच्छता सामग्री भी उपलब्ध कराई गई। परिसर में वाहन पार्किंग, कचरा न फेंकने और उचित जगह पर कचरा फेंकने हेतु डिस्प्ले बोर्ड एवं अन्य आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध कराई गई। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की कुलपति कर्नल प्रो. नीलिमा गुप्ता के निर्देशन में संपन्न हुआ। कैडेट्स और स्वयंसेवकों ने उत्कृष्ट अनुशासन और समाज सेवा की भावना का प्रदर्शन किया, जिससे सामुदायिक कल्याण में उनका योगदान स्पष्ट रूप से दिखाई दिया।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस अवसर पर सभी कैडेट्स, स्वयंसेवकों और अधिकारियों की सराहना करते हुए समाज सेवा को प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा बताया। उन्होंने कहा कि अपने आस-पास के परिसर को स्वच्छ रखना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। विश्वविद्यालय अपनी सामाजिक जिम्मेदारी और भूमिका का निर्वहन करते हुए इस तरह का अभियान लगातार चलाएगा। भारत सरकार के भी इस संबंध में दिशा निर्देश हैं कि हम शैक्षणिक संस्थान होने के नाते अपने समाज को स्वच्छता के प्रति जागरूक करें और स्वच्छता हेतु श्रमदान करें। वर्ष में 100 घंटे स्वच्छता हेतु श्रमदान करने का संकल्प अभियान भी पूरे देश में चल रहा है जो लोगों को प्रेरित कर रहा है। स्वच्छता कार्यक्रम के बाद कुलपति ने सभी वालंटियर्स को फल एवं मिष्ठान का वितरित किया। इस दौरान एएनओ लेफ्टिनेंट गौतम प्रसाद, जेसीओ सूबेदार टापा, नायब सूबेदार जरनैल और एनसीओ सीएचएम आई.एम. शर्मा ने कार्यक्रम के संचालन में अहम भूमिका निभाई। इस अवसर पर प्रो डी के नेमा, प्रो सुशील काशव, डॉ एस पी उपाध्याय, डॉ राकेश सोनी, डॉ संजय शर्मा, डॉ गौतम प्रसाद, राहुल गोस्वामी, इंजी सिंघई सहित विवि के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

सामाजिक परिवेश को स्वच्छ रखना प्रत्येक नागरिक का उत्तरदायित्व: कुलपति

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के 3 एमपी सिग्नल कंपनी एनसीसी के कैडेट्स, एनएसएस स्वयंसेवकों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने सामाजिक सेवा और सामुदायिक

विकास (ररउऊ) कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें 250 लोगों ने भाग लिया। ओस दौरान परेड मंदिर के भीतरी परिसर एवं बाहरी परिसर की साफ-सफाई की गई। विश्वविद्यालय के सहयोग से स्वच्छता सामग्री भी उपलब्ध कराई गई। परिसर में वाहन पार्किंग, कचरा न फेंकने और उचित जगह पर कचरा फेंकने हेतु डिस्प्ले बोर्ड एवं अन्य आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध कराई गई। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की कुलपति कर्नल प्रो. नीलिमा गुप्ता के निर्देशन में संपन्न हुआ। कैडेट्स और स्वयंसेवकों ने उत्कृष्ट अनुशासन और समाज सेवा की भावना का प्रदर्शन किया, जिससे सामुदायिक कल्याण में उनका योगदान स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस अवसर पर सभी कैडेट्स, स्वयंसेवकों और अधिकारियों की सराहना करते हुए समाज सेवा को प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा बताया।

इस दौरान एएनओ लेफ्टिनेंट गौतम प्रसाद, जेसीओ सूबेदार टापा, नायब सूबेदार जरनैल और एनसीओ सीएचएम आई.एम. शर्मा ने कार्यक्रम के संचालन में अहम भूमिका निभाई। इस अवसर पर प्रो डी के नेमा, प्रो सुशील काशव, डॉ एस पी उपाध्याय, डॉ राकेश सोनी, डॉ संजय शर्मा, डॉ गौतम प्रसाद, राहुल गोस्वामी, इंजी सिंघई सहित विवि के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

सोशल मीडिया लिंक –

https://www.sagarwatch.in/2024/09/teachers-day.html
https://youtu.be/ruGSGK7YX3s
https://www.facebook.com/share/v/1B4VJxqNrfrrwrCx/?mibextid=oFDknk
https://www.amarujala.com/madhya-pradesh/sagar/intaraneshanal-kaamphrens-sagar-university-two- day-international-conference-on-environment-green-technology-innovation-startup-sagar-news-c-1-1-noi1338-2097200-2024-09-12
https://sagarmirrornews.in/education/19055/
https://youtu.be/wPVD8Ra42i8?si=UXxWKp_96PwpRBUT
https://www.sagarwatch.in/2024/09/international-conference-15.html
https://sagarmirrornews.in/education/19132/
https://sagarmirrornews.in/education/19178/
https://sagarmirrornews.in/
https://sagarmirrornews.in/education/19227/
https://sagarmirrornews.in/
https://sagarmirrornews.in/education/19230/
https://sagarmirrornews.in/education/19239/
https://youtu.be/kiZ8theflzg?si=PtjeIezyWWbRmHSo
https://khabarkaasar.com/2024/09/university-hindi-will-become-an-international-language-with-public-support-vice-chancellor-prof-neelima-gupta/
https://www.amarujala.com/madhya-pradesh/sagar/sagar-university-is-building-shaurya-sanskriti-and-wonderful-museum-of-art-sagar-news-c-1-1-noi1338-2156063-2024-09-28

SagarUniversity DoctorGour Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya,Sagar

संकलन, चयन एवं संपादन

कार्यालय, जनसंपर्क अधिकारी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)